Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनपूजासंग्रहं

श्रीमदुपाध्यायरामचंद्रजीगणी

की

आज्ञानुसार

ऋषि नानकचंदमे सोधितकरके

मुद्रितकिया

बनारस जैनप्रभाकर प्रेस

सम्वत् १९३३ मि० श्रावण वदि १

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ विज्ञापन ॥

सकल भविक जनोंको उचित है कि अपार संसार सागर सेतु श्रीभगवान् इष्ट स्वरूप जिनेंद्रकी उपासना में निरालस्य हो के अवश्य प्रवृत्त होना, और वह उपासना प्रवृत्ती आगम के ज्ञानही से सुकर और सफल होती है, आगम ज्ञान भी पठन पाठन और ग्रंथों की सुलभतासे सिद्ध होताहै, इस हेतु धनिक लोग पाठ शाला और मुद्रायंत्रोंमें यथाशक्ति द्रव्य व्यय करें उसको व्यर्थ न समझें ग्रंथों की सुलभता और विद्या वृद्धि होगी यहतो प्रत्यक्ष फल है परंतु औरभीफल हैं इसमें प्रमाण श्री हेम चंद्र सूरिजी का वचन है "नते नरा दुर्गति माप्नुवंति नमूकतां नैव जडस्वभावं ॥ नचांधतां बुद्धि विहीनतांच ये लेखयंतीह जिनस्य वाक्यं ॥ १ ॥ पठति पाठयते पठतामसौ वसन भोजन पुस्तक वस्तुभि प्रतिदिनं कुरुते य उपग्रहं स इह सर्वविदेव भवे न्नरः २ ॥ लेखयंति नरा धन्याः ये जिनागम पुस्तकं ते सर्व वाङ्मयं ज्ञात्वा सिद्धिं यांति नसंशयः ॥ ३ ॥,, इनवचनोंमें लेखयंति इसका अर्थ यह हैं कि अक्षर विन्यास अर्थात् कागज पर अक्षर की रचना, सो लेखनी सेहोय, वा मुद्रासे उसमें कुछ विशेष नहीं, ऐसे श्रेयस्कार कार्य में प्रवृत्त नहोना यह बडी भूलहै श्री भगवान् उनके सब मनोरथ पूर्ण करै, जो बंग देशभूषण रायधनपत सिंह बहादुर ऐसे कार्यमें उत्साही होके व्यय कर रहेहैं उन्ही के सहायतासे पद रत्नावली १ जिनपूजा संग्रह २ मुद्रित किया है औरसिज्झाय पुस्तक मुद्रित होरहा है, ऐसे ही सकल भविक लोक प्रवृत्त होंय विद्या और ग्रंथों की वृद्धि करैं जिसेधर्मसुरक्षितरहै ऐसी हमारी इच्छा हैं, भगवान शीघ्रपूर्ण करै ॥ इति ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥र्दंए॥ अथ श्री जिन पूजा पद्धतिः ॥

प्रथम श्री मज्जिन पूजा करनें वाला अच्छे स्थान में स्नान कर चोटी के केश बांध शुद्ध वस्त्र पहर के उत्तरासंगकर मुख कोश बांधै पीछे इन मंत्रो सें वास क्षेप तीन तीन वार मंत्र के अष्ट द्रव्य कों शुद्ध करै सोही आचार दिनकर सें लिखते हैं ॥

ॐ त्रसरूपोहं संसारि जीवः सुवासनः सुमेधः एकचित्तो निरवद्यार्हत् पूजने निर्वृत्तों निष्पापो भूयासं निरुपद्रवो भूयासं मत्संश्रिता न्येपि जीवा निरवद्यार्हत् पूजने निर्व्यथाः निष्पापाः भूयासुः स्वाहा ॥

॥ यह मंत्र पढके अपनें ललाटमें तिलक करै ॥

॥ अथ जल मंत्र ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ आपो अप्कायाः एकेंद्रिया जीवा निरवद्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथा निष्पापाः शुभ्र गतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्च्चने स्वाहा ॥

॥ चंदन पुष्प धूप फल अक्षत शुद्धि मंत्र ॥

ॐ वनष्पतयो वनष्पति काया जीवा एकेंद्रिया निरवद्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथा निरपाया शुभ्रगतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिंसापाप मर्हदर्चने स्वाहा ॥

॥ अग्नि और दीपक शुद्धि मंत्र ॥

ॐ अग्नयो अग्निकाया जीवा एकेंद्रिया निरवद्याऽर्हत् पूजायां निर्व्यथाः संतु निरपायाःसंतु शुभ्रगतयः संतु नमेस्तु संघट्टन हिंसा पाप मर्हदर्चने स्वाहा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्री जिनायनमः ॥

॥ अथ स्नात्र पूजा प्रारंज्ञः ॥

॥ पांखडी गाथा ॥

॥र्दूय॥ चोतीसैं अतिज्ञाय जुत्त । बचनाति ज्ञाय संजुत्त ॥ सो परमेसर देखि ज्ञवि सिंहासण संपत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सिंहासण बैठा जगन्नाण। देखी ज्ञविजन गुणमणि खाण ॥ जे दीठें तुऊ निम्मल ऊाण लहिये परम महोदय ठाण॥ १ ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस पूजो रे चोवीस सोज्ञागी चोवीस वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ कुसुमांजलि मेलो आदि जिणंदा ॥ (ए पढ चरनें टीकी दीजे ॥ १ ॥)

॥ गाथा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो निय गुण पज्जव रम्यो। तसु अनुभव ए गत्त ॥ सुह पुग्गल आरोपतां । ज्योति सुरंग निरत्त ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

जो निज आतम गुण आनंदी । पुग्गल संगै जेह अफंदी ॥ जे परमेश्वर निज पद लीन । पूजो प्रणमो नव्य अदीन ॥ कुसु मांजलि मेलो शांति जिणंदा ॥ तोरा चरण कमल चोवीस पूजोरे चोवीस सोभागी चोवी स बैरागी चोबीस जिणंदा कुसुमांजलि मे लो शांति जिणंदा ॥

॥ गाथा ॥

निम्मल नाण पयासकर । निम्मल गुण संपन्न ॥ निम्मल धम्मु वएसकर ॥ २ ॥ सो परमप्पा धन्न ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

लोका लोक प्रकाशक नाणी। भवि जन तारण जेहनी वाणी ॥ परमा नंद तणीनी साणी। तसु भगतें मुझ मति ठह राणी । कु सुमांजलि मेलो नेमि जिणंदा । तोरा चर ण कमल चोबीस पूजोरे चोबीस सोभागी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चोवीस वैरागी चोवीस जिणंदा ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

जेसिद्धा सिज्झंतिजे। सिझि स्संति अणंत जसु आलंबन ठबिय मन। सो सेवो अरि हंत ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

शिव सुख कारण जेह त्रिकालें। सम परिणामें जगत निहालें॥ उत्तम साधन मार्ग दिखालें इंद्रा दिक जसु चरण पखालें। कुसु मांजलि मेलो पार्श्व जिनंदा तोरा चरण कमल चोबीस पूजोरे चोबीस सोन्नागी चोबीस वैरागी चोबीस जिणंदा कुसुमांजलि मेलो पार्श्व जिणंदा ॥ ४ ॥

॥ गाथा ॥

सम्मदिठी देसजय साहु साहुणी सार। आचारिज उवझाय मुणि ॥ जो निम्मल आधार ॥ ४ ॥

॥ ढाल ॥

चोबिह संघै जेमन धास्यो। मोक्ष तणों कारण निर धास्यो ॥ बिबिह कुसुम वर जात गहेवी। तसु चरणैं प्रण मंत ठवेवी।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुसुमांजलि मेलो बीर जिणंदा तोरा चरण कमल चोवीस पूजोरे चोवीस सोज्ञागी चो वीस वैरागी चोवीस जिणंदा कुसुमांजलि मेलो बीरजिणंदा ॥

॥ इति पांखडी गाथा ५ ॥

॥ वस्तु ॥

सयल जिन वर सयल जिन वर नमिय मनरंग । कल्लाणक विह संथविय। करि सुज म्म सुपवित्त सुंदर । सय इक्क सत्तरि तित्थं कर । इक्क समैं विहरंत महियल। चवण समैं इकवीस जिण। जम्म समैं इकवीस । नत्तिय नावें पूजिया। करो संघ सुजगीस ॥ १ ॥

॥ इक्क दिन अचिरा हुलरावती एदेशी ॥

भव तीजे समकित गुण रम्या । जिन नक्ति प्रमुख गुण परिणम्या ॥ तजि इंद्रिय सुख आसंसना । करि थानक वीसनी सेवना।अ ति राग प्रशस्त प्रनावता । मन नावना ए हवी नावता । सविजीव करूं शासन रसी इसी नाव दया मन उल्लसी । लहि परिणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म एह वुं नलुं। निपजावी जिनपद निरमलुं आऊ बंध विचै इक नव करी। श्रद्धा संवेग थी थिर धरी। तिहां थी चविय लहै नर न व उदार। नरतें तिम ऐरव तेज सार। महावि देह विजय प्रधान। मऊ खंडै अवतरै जिन निधान ॥

॥ ढाल ॥

पुण्यें सुपनाहे देखें। मनमें हर्ष विशेषै गजवर उज्जल सुंदर। निर्मल वृषन मनोहर निर्नय केसरी सिंह। लखमी अतिह अवीह अनुपम फूलनी माल। निर्मल शशि सुकमाल। तेज तरण अति दीपै। इंद्र ध्वजा जग जीपै। पूरण कलस पंडूर। पदम सरोवर पूर। इग्यार में रयणायर। देखै माता जी गुण सायर। बारम नुवन विमाल। तेर में रत्न निधान। अग्नि शिखा निरधूम। देखें माताजी अनुपम। हरखी रायनें नासें। राजा अर्थ प्रकाशें। जगपति जिन वर सुख कर। होस्यें पुत्र मनोहर। इंद्रा दिक जसु नमस्यें। सकल मनोरथ फलस्यें ॥

॥ वस्तु ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुन्य उदय पुन्य उदय उपना जिण नाह। माता तव रयणी समैं देखि सुपन हरखंत जागिय। सुपन कही निज कंत नें सुपन अ रथ सांभलो सोभागिय। त्रिभुवन तिलक म हा गुणी। होस्यें पुत्र निधान इंद्रा दिक ज सु पयनमी करस्यें सिद्ध विधान॥

॥ ढाल चंद्रा उलानी॥

सो हरि पति आसन कंपियो। देई अव धें मन आणंदियो। मुझ आतम निर्मल कर ण काज। भव जल तारण प्रगटो जिहाज। भव अटवी पारग सत्थ वाह केवल नाणा इय गुण अथाह। शिव साधन गुण अंकूर जेह। कारण उलटो आषाढ मेह। हरखैं विकसैं तव रोमराय। वलया दिक मां निज तनु नमाय। सिंहासन थीऊठो सुरिंद। प्रणमं जिण आणंद कंद। सगअठ पयपमुहा आवि तत्थ। करि अंजलि प्रणमिय मत्थ सत्थ। मुख भाखें ए खिण आज सार तियलोय पहू दीठो उदार। रे रेनिसुणों सुरलोय देव। विष या नल तापित तुम समेव। तसु शांति क

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रण जलधर समान । मिथ्या विष चूरण गरुडवान । तेदेव सकल तारण समत्थ । प्रगटो तसु प्रणमी हुवो सनत्थ । इम जंपी सक्कस्तव करेवि । तब देव देवी हरखैं सुणे वि । गावें तब रंभा गीत ज्ञान । सुर लोक हुवो मंगल निधान । नर खेत्रें आरज बंझ ठाम । जिन राज वधैं सुर हर्ष धाम । पि ता मात घरे उच्छव अलेख । जिन न्हासन मंगल अति विसेख । सुर पति देवा दिक हर्षसंग । संयम अरथी जननें उमंग । शुभ बेला लगनें तीर्थ नाथ । जनम्यां इंद्रादिक हर्ष साथ । सुख पाम्यां त्रिभुवन सर्वजीव । बधाई बधाई थई अतीव ॥

॥ इहां चैत्य बंदन करणां धूप खेवणां ॥

॥ ढाल ॥

॥ शांति जिननों कलश कहस्यों ॥ एदेशी ॥

श्रीतीर्थ पतिनों कलस मज्जन गाइये सुखकार । नरखित्त मंडन दुह विहंडन भवि क मन आधार । तिहां राव राणां हर्ष उ च्छव थयो जग जय कार । दिसि कुमरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवधि विशेष जाणीं लह्यो हर्ष अपार ॥ निय अमर अमरी संग कुमरी गावती गुण छंद । जिन जननि पासें आवि पोंहती गहकती आणंद । हे माय तैं जिनराज जा यो शचि वधायो रम्म । अम्ह जम्म निम्म ल करण कारण करिस सूइय कम्म । तिहां भूमि शोधन दीप दर्प्पण वाय विंजण धार तिहां करिय कदली गेह जिनवर जननि म ज्जन कार ॥ वर राखडी जिन पाणि बांधी दियें एम आसीस । जुग कोडकोडी चिरंजी वो धर्म दायक ईश ॥

॥ ढाल इकवीसानी ॥

जग नायक जी त्रिभुवन जन हित का रए । परमातम जी चिदानंद घन सारए । जिन रयणी जी दशदिस उज्जलता धरै । शुभ लगनें जी ज्योतिष चक्रते संचरै । जिन जनम्या जी जिण अवसर माता घरैं तिण अवसर जी इंद्रासन पिण थरहरै ॥

॥ त्रूटक ॥

थरहरें आसन इंद्र चिंतै कवण अवसर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ए वण्यो । जिन जन्म उच्छव काल जाणीं अतिहि आनंद ऊपनों । निज सिद्ध संपति हेतु जिनवर जांणि जगतै ऊमह्यो । विकसंतवदन प्रमोदबधतै देवनायकगहगह्यो

॥ ढाल ॥

तब सुरपति जी घंटा नाद करावए। सुर लोकैं जी घोषणां एह दिरावए॥ नर खेत्रैं जी जिनवर जन्म ऊवो अछै । तसु जगतैं जी सुरपति मंदरगिर गछै ॥

॥ त्रूटक ॥

गछै मंदर शिखर ऊपर जवन जीवन जिन तणों। जिन जन्म उच्छव करण कारण आवज्यो सवि सुर गणो । तुम शुद्ध समकित थास्यें निर्मल देवाधि देव निहालतां आपणां पातिक सर्व जास्यें नाथ चणर पखालतां ॥

॥ ढाल ॥

इम सांजल जी सुरवर कोडी बहु मिली जिन वंदन जी मंदरगिर साहमी चली सोहमपति जी जिन जननी घर आविया जिन माता जी वंदी स्वामि बधाविया ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ त्रूटक ॥

वधाविया जिनवर हर्ष बहुलै धन्य हूं कृत पून्यए । त्रैलोक्य नायक देव दीठो मुझ समो कुण अन्यए ॥ हे जगत जननी पुत्र तुमचो मेरु मज्जन वरकरी । उच्छंग तु मचै बलिय थापिस आतमां पुन्यें भरी ॥

॥ ढाल ॥

सुरनायक जी जिन निज कर कमलैं ठव्या । पांच रूपैंजी अतिशय महिमा यें स्तव्या ॥ नाटक विधजी तब बत्तीस आग ल बहै । सुर कोडीजी जिन दरसण नें ऊमहै

॥ त्रूटक ॥

सुर कोड कोडी नाचती बलि नाथ शुचि गुण गावती । अपछरा कोडी हाथ जोडी हाव भाव दिखावती ॥ जयजयो तूं जिन राज जगगुरु एमदे आसीस ए । अम त्राण शरण आधार जीवन एक तूं जगदीसए ॥

॥ ढाल ॥

सुर गिरवरजी पांडुक बनमें चिहुं दिसैं गिरि सिल परजी सिंहासन सासयबसै ॥ ति हां आणीजी शक्रै जिन खोलै गृह्या । चउ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सठैं जी तिहां सुरपति आवीरह्या ॥

॥ त्रूटक ॥

आविया सुरपति सर्वजगतें कलश श्रेणि बणावए । सिद्धार्थ पमुहा तीर्थ अषधि सर्व वस्तु अणावए ॥ अच्च यपति तिहां हुकम कीनो देव कोडा कोडिनें । जिन मज्जनारथ नीरल्यावो सवै सुर करजोडिनें ॥

॥ ढाल शांतिनें कारणें इंद्र कलशा जरै ॥

आत्मसाधन रसी देवकोडी हसी । उल्लसीनें धसी खीरसागर दिशि । पउमदह आदि दहगंग पमुहा नई । तीर्थजलअमल लेवा जणी ते गई । जाति अड कलश करि सहस अठोत्तरा ॥ छत्र चामर सिंहासणैं शुजतरा । उपगरण पुष्फचंगेरि पमुहा सवें ॥ आगमें जासिया तेम आणी ठवें । तीर्थ जल जरिय करि कलश करि देवता । गावता जावता धर्म उन्नतिरता । तिरिय नर अमरनें हर्ष उपजावता धन्य अमसक्ति शुचिजक्ति इमजावता समकितैं वीज निज आत्म आरोपता । कलश पाणीमिसै जक्ति जलसींचता । मेरु सिहरो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरं सर्व आव्यावही । शक उच्छंग जिन दे खि मन गहगही ॥

॥ गाथा ॥

हंहो देवा अणाइ कालो । अदिठ पुब्बो तिलोयतारणो तिलोय बंधू मिच्छत्त मोह विधंसणो ॥ अणाइ तिरहा विणासणो । देवाहि देवो दिठ्ठो दिठ्ठो हियकामेहिं ॥

॥ ढाल ॥

एम पन्नणंत वण नवण जोईसरा ॥ देव वेमाणिया नत्तिधम्मायरा ॥ केवि कप्पाठिया केवि मित्ताणुगा । केवि वर रमणि वयणेण अइ उच्छुगा ॥

॥ वस्तु ॥

तत्थ अच्चुय तत्थ अच्चुय इंद्र आदेश करजोडी सब देवगण ॥ लेइ कलश आदे श पामिय अदनुत रूप सरूपजुय कवण एह पुच्छंत सामिय इंद्र कहें जग तारणो तार ग अम परमेस । नायक दायक धर्म निधि करिये तसु अभिषेक ॥

॥ ढाल ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ तीर्थ कमल वर उदक जरीनें पुष्कर ॥
॥ सागर आवै ॥ एदेशी ॥

पूर्ण कलश शुचि उदकनीधारा जिनवर अंगेंनामैं । आतम निर्मल जाव करंतां ब धतें शुज परिणाम ॥ अच्यूतादिक सुरपति मज्जन लोक पाल लोकांत । सामानिक इंद्रा णी पमुहा इम अजिषेक करंत ॥ पू० ॥

॥ गाथा ॥

तव ईशाण सुरिंदो सक्कं पजणेइ करिस सुपसाउ । तुम अंके महनाहो खिणमित्तं अम्ह अप्पेह ॥ तासक्किंदो पजणइ । साह म्मि वच्छलम्मि बज्जलाहो आणा एवं गिराहइ होउ कयत्था जो ॥

॥ ढाल ॥

सोहम सुरपति वृषज रूप कर । राहवण करे प्रभु अंगै । करिय विलेपन पुष्फ माल ठवि वर आजरण अभंगै सो० ॥ १ ॥ तब सुरवर बज्ज जय जय रवकर । निच्चै धरि आणंद । मोक्ख मारग सारथपति पाम्यों जां जस्यूं हिब जब फंद सो० ॥ २ ॥ कोड ब

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्तीस सोवन्नउवारी बाजतै वरनाद । सुरप
ति संघ ञ्मर श्री प्रज्जुनें ॥ जननी नें सुप्रसा
द । ञ्जाणी थापी एम पयंपें । ञ्म्ह निस्त
रिया ञ्जाज । पुत्र तुमारो धणिय ञ्मारो ।
तारण तरण जिहाज ॥ सो० ॥ ३ ॥ मात
जतन करि राखज्यो एहनें । तुम सुत ञ्म
ञ्जाधार । सुरपति ज्ञक्ति सहित नंदीश्वर
करै जिन ज्ञक्ति उदार ॥ सो० ४ ॥ निय नि
य कप्पगया सव निर्ज्जर । कहतां प्रज्जु गुण
सार ॥ दीक्षा केवल ज्ञान कल्याणक इच्छा
चित्त मऊार ॥ सो० ५ ॥ खर तर गछ
जिन ञ्जाणा रंगी राज सागर उवऊाय ।
ज्ञान धर्म दीपचंद सुपाठक सुगुरु तणैं सुप
साय ॥ देव चंद निज ज्ञक्तें गायो । जन्म
महोच्छव बंद । बोध बीज ञ्अंकूरो उल
स्यो । संघ सकल ञ्आंणद सो० ॥ ६ ॥

॥ इति स्नात्रम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ राग बेलाउल ॥

इम पूजा नगतैं करो । आतम हित काज तजी विनाव निज नावमां रमतां शिव राज इम० ॥ १ ॥ काल अनंतैं जे हुवा । होस्यें जेह जिणंद । संपइ श्री मंधर प्रनू । केवल नाण दिणंद इम० ॥ २ ॥ जन्म म होच्छव इण परै । श्रावक रुचिवंत विरचैं जिन प्रतिमा तणों । अनुमोद नखंत ॥ इम० ३ ॥ देव चंद जिन पूजनां । करतां नवनों पार । जिन पडिमा जिनसारखी । कही सूत्र मझार इम० ॥ ४ ॥ इति पदम् ॥

॥ इति स्नात्रम् ॥

॥ अथ अष्ट प्रकारी पूजा ॥

विमल केवल नासन नास्करं । जगति जंतु महोदय कारणं जिनवरं बद्ध मान ज लौघतः शुचिमनः स्नपयामि विशुद्धये ॥ १ ॥ ॐह्रीँ परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥ जल पूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकल मोह तमिस्र विनाशनं परम शी
तल भाव युतं जिनं ॥ विनय कुंकुम दर्शन
चंदनैः । सहज तत्व विकाश कृतेर्चये: ॥ २
ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्त
ये जन्म जरामृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रा
य चंदनं यजामहे स्वाहा॥ २॥ इति चंदनपू०

विकच निर्मल शुद्ध मनोरमै । विशद चे
तन भाव समुद्भवैः॥सुपरिणाम प्रसून घनै
र्नवैः । परम तत्व मयंहि यजाम्यहं ॥ ३ ॥
ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञान शक्त
येजन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्रा
य पुष्पं यजामहे स्वाहा॥ ३॥ इतिपुष्प पूजा

सकल कर्ममहेंधन दाहनं। विमल संवर
भाव सुधूपनं। अशुभ पुद्गल संग विवर्जनं
जिनपतेः पुरतोस्तु सुहर्षतः ॥ ४ ॥
ॐह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये
जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय
धूपंयजा महे स्वाहा ॥ ४ ॥ इति धूप पूजा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भविक निर्मल बोध विकाशकं । जिनगृहे शुभ दीपक दीपनं । सुगुण राग विशुद्धि समन्वितं । दधतु भाव विकाशकृते जनाः ॥ ५ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय दीपं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥ इति दीपपूजा

सकल मंगल केलि निकेतनं । परम मंगल भाव मयं जिनं ॥ श्रयत भव्य जना इति दर्शयन् । दधतु नाथ पुरो कृत स्वस्तिकं ॥ ६ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय अक्षतं यजामहे स्वाहा ॥ ६ अक्षत पूजा ॥

सकल पुष्फल संग विवर्जनं । सहज चेतन भाव विलासकं । सरस भोजन भव्य निवेदनात् परम निर्वृति भाव महं स्पृहे ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ॥ ७ ॥ इतिनैवेद्यपूजा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कटुक कर्म विपाक विनाशनं । सरस पक्व फल व्रज ढौकनं ॥ विहित मोक्ष फलस्य विभोः पुरः । कुरुत सिद्ध फलाय महाजनाः ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति फलपूजा

इति जिनवरवृंदं भक्तितः पूजयंति । परम सुख निधानं देवचंद्रं स्तुवंति ॥ प्रति दिवस मनंतं तत्व मुल्लासयंति । परम सहज रूपं मोक्ष सौख्यं श्रयंति ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं परम पर मात्मने अनंतानंत ज्ञानशक्तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनेंद्राय अर्घ्यं य जामहे स्वाहा ॥ ८ ॥ इति अर्घ्य पूजा ।

शक्रो यथा जिनपतेः सुरशैल चूला । सिंहा सनो परि गतः स्नपनावशाने ॥ दध्यक्षतैः कुसुम चंदन गंध धूपैः । कृत्वार्चनं तु विद धाति सुवस्त्र पूजां ॥ १ ॥

तद्वत् श्रावक वर्ग एष विधिना लंकार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वस्त्रा दिकां । पूजां तीर्थकृतां करोति सततं शक्त्या तिन्नकृत्या हतां ॥ नीरागस्य निरंज नस्य विजिताराते स्त्रिलोकीपतेः स्वस्या न्य स्य जनस्य निर्वृतिकृते कूलेशाकृया कांक्षया । ॐह्रीँ परम परमात्मने अनंतानंत ज्ञानशक् तये जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमज्जिनें द्राय वस्त्रं यजामहे स्वाहा ॥ इति बस्त्रपूजा

॥ इति अष्ट प्रकारी पूजा ॥

॥ अथ लूण उतारण गाथा ॥

अह पडि नग्गा पसरं पयाहिणं मुणिव इ करेऊणं । पडि सलूणत्तण लज्जियंच लूण कय बहम्मि ॥ १ ॥ पिक्खविह मुह जिन वरह दीहर नयण सलूण गहावइ गुरु मत्थ नरि य । जलण पइस्सइ लूणं ॥ २ ॥ लूण उतारिय जिणवरह । तिन्नि पयाहिण देइ तड तड सद्द करंतिते विज्ञा:विज्ञ जलेण ॥ ३ ॥ लूण अ ग्निमें दीजे ॥ जंजेण विज्ञ थूइ जलेण तंतह अत्थि ससद्दं । जिण रूव मच्छ रेण । फिट्ट इ लूणं तड तडस्स ॥ लूण अग्नि में दीजे ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सन्नं मुणि वइ जलणि जल तंतह नमडइ पास अहब कयं तस्स निम्मलउ निगुण बुद्धि पयास ॥ १ ॥ जलण अनेविणु जलनिहि पास तिन्नि पयाहिण दिंतिहि पास। जिम जिय वुट्टै नव दुह पास। २। जल निम्मल कर कमलेहि लेवणु । सुरविहि नावहि मुणि वइ सेवणु पन्नणह जिणवर तुह पय सरणु ॥

एह कहकै लूण जल सरणकीजै ॥ इति

॥ श्री आरतिसबेरे की ॥

जय जय आरती शांत तुमारी ॥ तोरा चरण कमलकी मैं जाउं। बलिहारी विश्वसेन अचिराजी के नंदा। शांतिनाथ मुख पूनिम चंदा जै० ॥ १ ॥ चालिस धनुष सोवन मय काया मृगलांछन प्रन्नु चरण सुहाया ॥ जै० २ ॥ चक्र वर्त प्रन्नु पंचम सोहै । सोलम जिणवर जग सकु मोहै जै० ॥ ३ ॥ मंगल आरति नोरें कीजे। जनम जनम को लाहो लीजे जै० ॥ ४ ॥ कर जोडी सेवकगुण गावै । नविक गुण गावै । सो नर नारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमर पद पावैं ॥ जै०॥ ५ ॥

॥ आरती संध्या की ॥

रिषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पदम श्री सुपासकी । जै महाराज कि दीन दयाल की आरति कीजे। चंद सुविधि श्री तल श्रेयांसा । वासु पूज्य जिन राज की ॥ जै० ॥ १ ॥ विमल अनंत धर्म हितकारी । शांति नाथ सुख कार की जैम० ॥ २ ॥ कुंथुनाथ अर मल्लि मुनिसुव्रत नमि नमुं सोवन कायकी जैम० ॥ ३ ॥ नेमि नाथ प्रभु पार्श्व चिंतामणि वर्द्धमान भव पार की जै० ४॥ कंचन आरति बज्र बिध सफकर लीजेलीजे अंग उछाह की जै ० ॥ ५ ॥ सकल संघ मिल आरति करत है आवा गमन निवार की जैमहा० ॥ ६ ॥

॥ इति संपूर्णम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ यक्ष यक्षणी आरती ॥

जय २ जिन पद सेवन कारक जय २ जगदंबे आं ० अह निशि तुझ पद समरन कारन दिल विच ध्यान धरे ज० १ नवि जन वंछित पूरन सुरतरु चक्केस्वरि अंबे ज० ३ वसु नुज शोनित कनक च्छवि तनु सेवित सुरवृंदे ज० ४ पंचानन तिम खगप ति वाहन आयुध हस्तधरे ज० ५ रिधि वृ ध्धि नित प्रति सेवक आपें आनद संघ घरे ज० ६ इति चक्केश्वरी जीकी आरती ॥

जय जय रिषन पदांबुज सेवक जय २ जखराया नविजन सुखदाया ज० । कामग वी जिम वंछित दायक कंचन बरण सुहाया ज० ॥ १ ॥ संकठ विकट निवारण कारण वर कुंजर चढिआया ज० ॥ २ ॥ उदधि नु जैं करि शोनित तनु छवि गुणनिधि गोमुख सुर राया ज० ॥ ३ ॥ आरत हरवा करत आरती श्रीसंघ चितऊल साया ज० ॥ ४ ॥

॥ इति यक्ष राज आरती ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ सतरह्नेदी पूजा ॥

नाव नले नगवंत नी पूजा सतर प्रकार परसिध कीधी द्रोपदी अंग छठें अधिकार

॥ राग सरपदो ॥

जोति सकल जग जागती ए । सरसति समर सुन्निंद ॥ सतर सुबिध पूजा तणी प नणिसु परमानंद ॥ २ ॥

॥ गाहा ॥

न्हवण १ विलेवण २ वत्थजुगं ३ गंधा रोहणंच ४ पुप्फरोहणयं ५ माला रोहण ६ वन्नयं ७ चुन्न ८ पफ़ागाय ९ आन्नरणे १० ३ ॥ मालकलावं ११ बंसघरं पुप्फंपगरंच १२ अठमंगलयं १३ धूवउखेवो १४ गीययं १५ नहं १६ वज्जं १७ तहान्नणियं ॥ ४ ॥ सतरन्नेद पूजापवरं । ज्ञाताअंगविचार । द्रु पदसुता । द्रोपदिपरै । करिये विधविस्तार ॥ ५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथन्हवणपूजा ॥

॥ रागदेशाख ॥

पूर्व मुखसावनं । करि दशन पावनं । शु हत धोती धरीउचितमानी । विहित मुख कोशकेखीरगंधोदके । सुनृत मणि कलश करि विविधवानी । नमिवि जिनपुंगवं । लोमहस्येनवं । मार्जनं करिय वावारि वारी । नणिय कुसुमांजली कलश विधिमनरली । न्हवति जिन इंद्र जिमतिमशुगारी ॥ १ ॥

॥ राग सारंग मल्हारमें दोहा ॥

पहिली पूजासाचवें । श्रावक शुन परिणाम ॥ शुचि पखाल तनु जिन तणै । करै सुकृत हितकाम ॥ १ ॥ परमानंद पीयूष रस । न्हवण सुगति सोपान ॥ धरम रूप तरु सींचवा । जल धर धार समान ॥ २ ॥

॥ राग सारंग मल्हार ॥

पूजा सतर प्रकारी । सुणियोरे मेरे जिनवरकी परमानंद शुति उल्योरी सुधारस ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तपत बुझी मेरे तनकीहो ॥ पू० १ ॥ प्रभुकुं विलोकि नमिजतन प्रमार्जित। करत पखाल शुचिधार वनकी हो। न्हवण प्रथम निजत्र जिन पुलावति पंककुंवरष जैसे घनकी हो ॥ पू २ ॥ तरण तारण भव सिंधु तरणकी मंजरी संपदफल बरधनकी। शिवपुर पंथ दिखावण दीपी। धूमरी आपद बेल मरदन की हो ॥ ३ पू० ॥ सकल कुशल रंगमिल्योरी सुमतिसंग। जागी सुदिसा शुभमेरे दिनकी ॥ कहै साधुकीरत सारंगनारि करतां। आसफलीमेरे मनकीहो ॥ पू० ४ ॥

॥ इति प्रथमन्हवणपूजा १ ॥

॥ राग राम गिरीमें विलेपनपूजा ॥

गात्रलूहें जिन मनरंगसुंहोदेवा गा०। सखरसुधूपित वाससुं ॥ वाससुं हांरेदेवा वाससुं। गंधक सायसुंमेलिये ॥ नंदन चंदन चंदमेलीयें रेदेवा। नं०। मांहे मृगमदकुंकुम भेलीये। करलीये रयणपिंगा णीकचोलीये ए० १॥ पग जानु कर षंधैं सिरै रे। भालकं ठउर उदरं तरै दुषहरै हांरेदेवा सुखकरै। तिलकनवे अंग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कीजिये ॥ दूजीपूजा अनुसरै रे श्रावक । हरि विरचै जिम सुरगिरै ॥ तिमकरै जिणपर जन मन रंजीये ॥ २ ॥

॥ राग ललितमें दोहा ॥

करकृ विलेपन सुखसदन । श्रीजिन चंद शरीर ॥ तिलक नवे अंगपूजतां । लहैं नवो दधितीर ॥ १ ॥ मिटै तापतसुदेहको । परम शिशिरता संग ॥ चित्त खेद सवि उपशमें । सुषम समरसी रंग ॥ २ ॥

॥ राग बेलाउल ॥

विलेपन कीजे । श्रीजिनवरअंगै जिनवर अंगसुगंधै होवि० कुंकुम चंदन मृगमदजकृक द्रुम । अगरमिश्रित मनरंगै हो वि० ॥ १ ॥ पग जानूकर खंधैं सिर । नालकंठ उरउदरं तरसंगै । विलुपति अघमेरो ॥ करत विलेपन तपत वुझति जिम चंगेंहो वि० ॥ २ ॥ नव अंगनवनव तिलक करतही । मिलत नवेनि धिचंगें ॥ कहैसाधु तनु सुचिकरो । सुललित पूजा जैसेगंगतरंगेंहो वि० ॥ ३ ॥

॥ इति विलेन पूजा २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ वस्त्रयुगलपूजा दोहा ॥

वसनयुगल उज्जल विमल । आरोपें जिनअंग ॥ लान्न ज्ञान दर्शन लहै । पूजा तृतीय प्रसंग ॥ १ ॥

॥ रागगोडी ॥

कमलकोमलघनंचंदनंचरचितं । सुगंध गधें अधिवासियाए ॥ कनक मंडितहयै लालपल्लवशुचि । वसनजुगकंतअतिवासियाए । जिनप उत्तम अंगै सुविधिशाक्रोयथा । करियपहिरावणीढोइयेंए । पाप लूहणअंगलूहणो देवनें वस्त्रयुगपूजमलधोइयेंए ॥ १ ॥

॥ रागवैराडी ॥

देव दुष्य जुग पूजा बन्यो है जतगगुरु । देव दुख हर अब इतनों मागुं । तुंहिज सबही हित तुंहीज मुगति दाता । तिण नमि २ प्रन्नु जी के चरणैं लागुं दे० ॥ १ ॥ कहै साधु तीजी पूजा केवल दंसण नाण । देव दुष्य मिसदेऊ उत्तम वागुं । श्रवण अंजलि पुट सुगुण अमृत पीता सवि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राडे दुख ञांसय घुरम ञ्नांगुं दे० ॥ २ ॥

॥ इति देव दूष्य पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथवासक्षेप पूजा ॥

॥ राग गौफ़ी में दोहा ॥

पूज चतुर्थी इण परैं । सुमति वधारैं वास । कुमति दुरञ्नि दूरै हरै । दहै मोह दल पास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥

हां होरे देवा बावन चंदन घसि कुंकुमा चूरण विधि विरचै वासुए हां० ॥ कुसुम चूरण चंदन मृगमदा कंकोल तणों अधि वासु ए हां० ॥ वास दञ्नो दिञ्नि वासती । पूजो जिन अंग उवंगु ए हां० ॥ लाछि ञ्नुवन अधिवासिया । अनुगामी की सरम अ ञ्नंगुए ॥ १ ॥

॥ राग गौडी पूर्वी ॥

मेरे प्रञ्नुजी की आणंद मेलें की मे० ॥ वास ञ्नुवन मोह्यो सब लोए । संपदा ञ्नेलें की पूजा ॥ १ ॥ सतर प्रकारी पूजा विजय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देवा तता थेई । अप्रमित गुण तोरा । चरण सेवा कि पूजा ॥ २ ॥ कुंकुम चंदनवासैं । पूजीये जिनराज तत्ताथेई । चतुर्गति दुख गौरी चतुर्थी धन की पूजा ॥ ३ ॥

॥ इति वासक्षेप पूजा ॥ ४ ॥

॥ अथ पुष्पा रोहणं ॥

॥ दोहा ॥

मन विकसे तिम विकसतां । पुष्प अनेक प्रकार । प्रभुपूजा ए पंचमी । पंचम गति दातार ॥ १ ॥

॥ राग कामोद ॥

पाऊल चंपक केतकीए । कुंद किरण मचकुंद सोवन जाती जूहिका । बिउलसिरी अरविंद ॥ १ ॥ जिनवर चरण उवरि वरैए । मुकुलित कुसुम अनेक । शिव रमणीसे वर वरै । विधि जिन पूज विवेक ॥ २

॥ राग कानऊो ॥

सोहैरीमाई मनमोहैरी वरणै । विविधकुसुमजिनचरणै । विकसी हसीजंपें साहिबकुं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

राखि प्रभू हमसरणैं सो० ॥ १ ॥ पंचमि पूज कुसुम मुकुलित की पंचविषें दुख हरणै सो० कहै साधुकीरति जगत जगवत की। जविक नरां सुख करणैसो० ॥ २ ॥

॥ इति पुष्पा रोहण पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ माला रोहण ॥

॥ राग आसाउरी में ॥ दोहा ॥

छठी पूजा ए छती। महा सुरभि पुष्फ माल। गुण गूंथी थापें गलै जेम टलै दुख जाल ॥ १ ॥

॥ राग राम गिरी गुर्जरी ॥

हेनागपुन्नाग मंदार नव मालिका हे मल्लिका सोग पारधिकलीए। हेमरुक दमण कं बकुल तिलक वासंतिका। हे लाल गुल्ला ल पाडल जिलीए। हे जासुमण मोगरा। बेउला मालतीए। हे पंच वरणैं गुथी माल तीए। हेमाल जिन कंठ पीठें ठवी लह ल हैंए। हे जाण संताप सङ्ग टालतीए। जलां २ वारतीए ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ राग आसाउरी ॥

देखी दामा कंठ जिन अधिक एधति नंदै चकोरकुं देषि २ जिम चंदै पंचविध वरण र ची कुसुमाकी जैसी रयणा वलिसु हमंदै दे० ॥ बठी रे तोरुर पूजा तब रूर धूजे। सब अ रिजन रुइ २ बंदे। कहै साधुकीरति सक ल आसा सुख। न्नगति २ जेय जिण वंदे दे० ॥ २ ॥

॥ इति माला पूजा ॥ ६ ॥

॥ अर्थ वर्ण पूजा

॥ दोहा ॥

केतकि चंपक केवरुा। सोन्नैं तेम सुगात चाढो जिम चढतां रुवे सातमियें सुखसात १

॥ राग केदारो गोडीमे ॥

कुंकुम चरचित विविध पंच वरणका कु सुम सुं हे। कुंद गुल्लाल सुं चंपको दमण को जासु सुं ए। सातमी पूजमें अंग आलिंगियें ए अंग आलिंग मिस मानवी मुगति आलिंगि ये ए ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ राग नैरवी ॥

पंच वरणी अंगी रची कुसुम नी जाती फूलन की जाती पं० ॥ कुंद मचकुंद गुलाल सिरोवर कर करणी सोवनजाती पं०। दमणक मरुक पाऊल अरबिंदो अंस जूही वेउल वा ती ॥ पं० ॥ पारधि चरण कल्हार मंदारो व र्ण पटकूल वनी नांती। सुरनर किन्नर रमणी गाती नैरव कुगति व्रतती दाती पं० ॥ २ ॥

॥ इति वर्ण पूजा ॥ ७ ॥

॥ अथ गंधवटी पूजा ॥

॥ राग सोरठ ॥ दोहा ॥

सोरठ राग सुहामणी। मुखैन मेली जाय ज्युं ज्यूं रात गलंतियां। त्यूं त्यूं मीठी थाय ॥ १ ॥ सोरठ धारा देशमें। गढां बडो गिर नार। नित उठ यादव वांदस्यां। स्वामी नेम कुमार ॥ २ ॥ जो हूंती चंपो बिरख वा गिर नार पहार। फूलन हार गुंथावती चढती नेम कुमार ॥ ३ ॥ राजमती गिरवर चढी। ऊनी करै पुकार। स्वामी अजऊ न बा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

झडे। मोमन प्राण आधार ॥ ४ ॥ रे संसारी प्राणिया। चढ्यो न गढ गिरनार। गंगा न्हाये न गोमती। गयो जमारो हार ॥ ५ ॥ धन वा राणी राजेमती। धन वे नेम कुमार। शील संयमता आदरी। पोंहता भव जल पार ॥ ६ ॥ दया गुणां की वेलड़ी। दया गुणां की खांन अनंत जीव मुगतै गया। इण दया तणें पर माण ॥ ७ ॥ जग में तीरथ दोय बड़ा सेत्रूं जो गिरनार। इण गिर रिषभ समो सरे उण गिर नेम कुमार ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अगर सेलारस सार सुमति पूजा आठमी। गंध बटी घन सार। लावो जिन तनु भाव सुं ॥ १ ॥

॥ राग सोरठी ॥

कुंद किरण शशि ऊजलो जी देवा। पावन घन घनसारो जी। आछो सुरभि सखर मृग नाभिजा जी देवा। चुभ रोहण अधिकारो जी। आ० वस्तु सुगंध जब मोरियो जी देवा। अशुभ करम चूरीजै जी आ० आंगण सुरतरु मोरियो जी देवा। तब कु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मती जन खीजै जी ॥ १ ॥

॥ राग सामेरी ॥

पूजोरी माई जिनवर अंग सुगंधें । गंध वटी घनसार उदारे । गोत्र तिर्थंकर बां धैं पू० ॥ १ ॥ आठमी पूजा अगर सेलारस लावें जिन तनु रागें । धार कपूर भाव घन बरषत । सामेरी मति जागें पू० ॥ २ ॥

॥ इति गंध वटी पूजा ॥ ८ ॥

॥ अथ ध्वज पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मन मोहन धर मस्तकै । सूहव गीत समू ल ॥ दीजे तीन प्रदक्षिणा । नवमी पूजअ मूल ॥ १ ॥

॥ राग मेघ गउडी में वस्तु ॥

सहस जोयण रहेममय दंड । युतपताक पांचे वरण । घुम घुमंति घूघरी वाजै । मृ दु समीर लहकै गयणं । जाण कुमति दल सयल भांजै । सुरपति जिम विरचै धजा ए । नवमी पूज सुरंग । तिणपरि श्रावक धज

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महति । आपें दान अन्नंग ॥ १ ॥

॥ राग नहनारायण ॥

जिनराजको ध्वज मोहन जि० मोहना सुगरु अधिवासित । करि पंच सबद त्रिप्रद क्षिणा । सधव वधू शिरसोहण जि० ॥ १ ॥ न्नांतिवसन पांच वरण वन्योरी । विध करि ध्वज को रोहण । साधु नणति नवमी पूजा नव पाप नियांणा खोहण । शिव मंदिर कुं अधिरोहण जन मोह्यो नहनारायण जि० २

॥ इति ध्वजपूजा ॥ ९ ॥

॥ अथ आन्नरण पूजा ॥

॥ राग केदारो दोहा ॥

शिरसोहै जिनवरतणै । रयण मुगट ऊलकंत ॥ तिलक न्नाल अंगद नुजा । श्रवण कुंऊल अतिकंत ॥ १ ॥ दशमी पूजा आन्नरणकी । रचना यथा अनेक । सुरपति प्रनु अंगें रचै । तिम श्रावक सुविवेक ॥ २ ॥

॥ राग अधरास वा गुंऊमल्हार ॥

पाच पिरोजा नीलू लसणीया । मोतीमा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णक लाल लसणीया। हीरा सोहै रे। मन मोहै रे। धुनी चुनी पुलक करकेतनां। जात रूप सुनग अंक अंजना। मन मोहै रे ॥ १ ॥ मौलि मुकुट रयणे जम्यो। कांनें कुंडल हां सुजुगतै जुम्यो। उरहारू रे ॥ २ ॥ भाल ति लक बांहें अंगदा। आभरण दशमी पूज मुदा। सुखकारू रे। दुखवारू रे ॥ २ ॥

॥ राग केदारो ॥

प्रभू शिर सोहै। मुगट रयणे जम्यो। अंगद बांह तिलक भालस्थल। यज्ञ नीको कों नघम्यो प्र० ॥ १ ॥ श्रवण कुंडल शशि तरणि मंडल जीपें। सुरसुं अधिक अलंकस्यो। दुख के दार चमर सिंहासण। छत्र शिर उवरि धस्यो। अलंकृत उचितवस्यो ॥ २ ॥

॥ इति आभरणपूजा १० ॥

॥ अथ फूल घर पूजा ॥

॥ दोह ॥

फूल घरो अति शोभतो। फूंदै लहकै फू

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ल ॥ महकै परिमल मह महा । इग्यारमी फूल अमूल ॥ १ ॥

॥ राग रामगिरी कौतकिया ॥

कोज अंकोल रायबेलि नव मालिका । कुंद मचकुंद वर विचिकलूए । हे तिलक दमण कदलं मोगरा परिमलं । कोमलं पारधि पा फलूए । हे प्रमुख कसुमैं रचै त्रिजुवन कुं रुचै । कुसुम गेह विच तोरणूंए । गुच्छ चंद्रोदयं फूं बक उन्नयं । हे जालिका गोख चितचोरणूं ए ।

॥ राग राम गिरी ॥

मेरोमन मोह्यो माईरी । फूलघरै आणंद झिलै । आसत उसत दामवघारी मनोहर । देखत तबही सबदुरित खिलै फू० ॥ १ ॥ कुसुम मंझित थंनगुच्छ चंद्रोदयं । कोरणि चारु विणाण सझै की । इग्यारमी पूज वणीहें रामगिरी । विबुध विमाण जैसे उपरि नंजै की

॥ इति फूल घर पूजा ॥ ११ ॥

॥ अथ पुष्पवर्षा पूजा ॥

॥ दोहा मलारमें ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वरषै वारमी पूज में । कुसुम बादलिया फूल । हरणताप सविलोकको । जानु समा बञ्जमूल ॥ १ ॥

॥ राग न्नीम मलार गुंफमिश्र ॥

हेमेघबरसैभरी । पुष्फ वादलकरी जानु परिमाण करि कुसुम पगरं । पंच वरणै वन्यो विकच श्रमुकरवन्यो । अधर वृंतैनही पीड पसरं मे० ॥ १ ॥ वास महकै मिलै । न्नमर न्नमरीन्निलै । सरसरंगै तिण दुखनिवारी । जिनप आगैकरै । सुरपजिम सुखवरें । वारमी पूजतिण परिश्रगारी मे० ॥ २ ॥

॥ राग न्नीम मलार ॥

पुष्फवादलीया वरसैसुसमां । योजन अ न्नुचिहर वरषै गंधोदकै । मनोहर जानु स मा पु० ॥ १ ॥ गमन श्रागमन कीपीर नही तसु । इह जिनको श्रतिन्नाय सुगुण । गुंज ति२ मधुकर इमन्नणें मधुर वचन जिनगुणथु णें । कुसुम सुपरि सेवाजोकरै । तसु पीरन ही सुमणै पु० ॥ २ ॥ समवसरण पंचवरण श्रधोवृंत । विवुधरचै सुमना समा । वारमी पूज न्नविक तिमकरें । कुसुम विकसी हसी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उच्चरै तसु नीमबंधण अहराऊवें । जे करै जै जै जिननमां पु० ॥ ३ ॥

॥ इति पुष्पवर्षा पूजा १२ ॥

॥ अथ अष्ट मंगलीक पूजा ॥

॥ दोहा राग कल्याणमें ॥

तेरमि पूजा अवसरें मंगल अष्ट विधान । युवति रचै सुमता सही । परमानंद निधान १

॥ राग वसंत ॥

अतुल विमल मिल्या । अखंड गुणै नि ल्या । सालि रजत तणा तंदुलाए । उलषण समाजकं विच पंच वरणकं । चंद्रकिरण जै सा ऊजलाए । मेल मंगल लिखै । सयल मं गल अखै । जिनप आगे सुधानक धरै ए । तेरमि पूजाविध । तेरमि मन मेरे । अष्ट मंगल अष्ट सिद्धि करे ए । अतुल० ॥ १ ॥

॥ राग कल्याण ॥

हांहो पूजा बणी तेरी रसमै ॥ अष्ट मंग ल लिखै । कुशल निधान हैं । तेज तरण के रसमै हां० ॥ दर्पण भद्रासण नंद्यावर्त्त पूर्ण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुंन्न । मछयुग श्रीवछ तासुमैं । वर्धमान स्वस्तिक पूज मंगल की । आनंद कल्याण के सुख रस मैं हा० ॥ २ ॥

॥ इति अष्ठमंगलीक पूजा ॥ १३ ॥

॥ अथ धूप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गंधवटी मृगमद अगर । सेलारस घन सार । धर प्रन्नु आगल धूपणा । चउदमि अरचा चार ॥ १ ॥

॥ राग वेलाउल सवावा ॥

कृष्णागर करचूर । सोगंध पांचेपूर । कुंदुरुक्क सेलारस सार । गंधवटी घनक्षार । गंधवटी घनसार । चंदन मृगमदा रस न्नेलिये । श्रीवास धूप दशांग अंबर सुरन्नि वक्त द्रव्य न्नेलिये । वेरुलिय दंड कनक मंड । धूप धाणो करधरें । न्नव्यवृत्ति धूप करंति न्नोगं । रोग सोग अशुन्न हरें ॥ १ ॥

॥ राग मालवी गौडी ॥

सब अरति मथन मुदार धूपं । करत गंध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसाल रे । देवाकर० । धाम धूमावली करिय धूसर । कलुष पातिक गाल रे स० ॥ १ ॥ ऊर्ध्व गति सूचंत भविकुं । मघ मघै किरणालरे । चवदमी वामांग पूजा । दीयें रयण विशालरे । आरती मंगल थाल रे । मालवी गौडी ताल रे स० ॥ २ ॥

॥ इतिधूप पूजा १४ ॥

॥ अथ गीत पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कंठ भलै आलाप कर । गावो प्रभु गुण गीत ॥ भावो अधिकी भावनां । पनरमि पूजा प्रीत ॥ १ ॥

॥ श्रीराग ॥

यद्धदनंत केवलमनंत फलमस्ति । जैनगुण गानं । गुण वर्ण नाद वादै मात्रा भाषा लयै युक्तं ॥ १ ॥ सप्तस्वर संगीतै स्थानै जंयतादि ताल करणै भ्रच । चंचुर चारी चारै गीतंगानं सुपीयूषं ॥ १ ॥

॥ श्रीराग ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनगुण गानं श्रुतअमृतं । तार मंद्रादि अनाहत तानं । केवल जिम तिम फल अमृतं जि० ॥ १ ॥ विविध कुमार कुमरी आलापें । मुरज उपांग नादज अमृतं । पाठ प्रबंध धु आप्रतिमानं । आयतिच्छंद सुरति सुमति सबद समान रुच्यो त्रिनुवनकुं । सुरनर गावें जिन चरितं । सप्तस्वर मान शिवश्री गीतं । पनरमि पूज हरै दुरितं जि० ॥ ३ ॥

॥ इति गीत पूजा ॥ १५ ॥

॥ अथ नृत्य पूजा ॥

॥ राग शुद्ध नाटक दोहा ॥

करजोडी नाटक करे । सकि सुंदर सि णगार नव नाटक ते नवि नमैं । सोलमि पूजा सार ॥ १ ॥

॥ काव्य ॥

नावादिप्पवणा सुचारु चरणा संपुन्न चं दानना । सप्पिम्मासम रूप वेस वयसो मत्ते न कुंजत्थणा । लावस्सा सुगुणा पिकस्सरवई रागाइश्रा लावणा । कुम्मारी कुमरावि जैन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पुरज नच्चंति सिंगारणा ॥ १ ॥

॥ गद्यं ॥

तएणं ते अठसयं कुमार कुमरीज सूरियान्नेणं देवेणं संदिठा। रंग मंकवे पविठा। जिणं नमंता गायंता वायंता नच्चंति ॥

॥ राग त्रिगुण नाटक ॥

नाचंति कुमार कुमरी। त्रागफदि तत्ता थेइ। द्रागफदि २ थोंगनि २ मुखैं तत्ताथेइ ना० ॥ १ ॥ बेणु बीणा मुरज बाजै। सोलही शृंगार साजे तनन निन्ना नई। घ्रणण २ घूघरी घमके। रणणनिन्नानई ना० ॥ २ ॥ कंसंती कंचुकी तरुणी। मंजरी ऊंकार करणी। सोन्नंति कुमरी हास्तकं हावादि न्नावे। ददंति न्रमरी ना० ॥ ३ ॥ सोलमी नाटक तणी सुरीयान्न रावणे कीधी सुधग तत्ता थेई। तेम न्नगते न्नविक लीणा। आणंद तत्ता थेई नाचंति कुमार कुमरी ॥ ४ ॥

॥ इति नृत्य पूजा ॥ १६ ॥

॥ अथ वाजित्र पूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुरमद्दल कंसालो । मझरिय मद्दल सुव
ज्ञए पणवो । सुरनादि नंद तूरी पभणे तू
नंदि जिणनाहो ॥

॥ दोहा ॥

तत घन सुषिरेआनधे। वाजित्र चोविधवाय
भगतभली भगवंतनी। सतरमएसुखदाय॥ १

॥ राग मधु माधवी ॥

तूं नंदिया नंद बोलत नंदी । चरण क
मल जंतु जगत्रय बंदी । ज्ञान निरमल वा
चत मुख वेदी । त्रिवली वोले रंग अतिही
नंदी तूं० ॥ १ ॥ भेरी गयण वाजंती । कुम
ति त्यजंती । प्रभु भक्ति पसायें अधिक गा
जंती । सेवे जिन जै जणावंती । आवंती
जैन सासन । जयवंती निरदंती । उदय सं
घ परि परिवदंती । तूं० ॥ २ ॥ सेवि भवि
क मधु माधवी आखें इन फेरी । भविक
न फेरी पभणंती । आंकई नाई साधु सतर
मी पूज वाजित्र सव । मंगल मधुर धुनि
कहंती तूं० ॥ ३ ॥

॥ इति वाजित्र पूजा ॥ १७ ॥

॥ राग धन्यासी ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ कलश ॥

भणि गुण जिनके सबदिन । तेज तरणि मुख राजै । कवि शतक आठ थुणत शक्र स्तव । थुयक्य राग मह छाजै भ० ॥ १ ॥ अणहल पुर शांति शिव सुख दाई । सो प्रभु नव निधि रिध सिद्धि वाजै सतर सुपूज सुविधि श्रावक की । भणी मैं भगति हित काजे भ० ॥ २ ॥ श्री जिन चंद्र सूरि खर तर पति धर मन वचन सुराजै । संवत सोल अठार श्रावण धरि । पंचमि दिवस समाजै भ० ३ ॥ दया कुशल गणि अमर माणिक्य गुरु । तास पसाय सुविधि यश गाजें । कहै साधुकीरत करत जिनसंस्तव । सब लीला सुख साजें भ० ॥

॥ इति सतरह्भेदी पूजा संपूर्णा ॥

॥ आरती करनी ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ॐ॥ अथ नवपद जी की पूजा ॥

॥ गाथा ॥

उप्पन्न सन्नाण महो दयाणं । सप्पाडि हेरासण संठियाणं ॥ सद्देसणा णंदिय सज्जणाणं नमो नमो होउ सया जिणाणं ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

जिए ज्ञुरुज्ञावें निजात्मा पिछान्यो स्वबोधे छए द्रव्यनों भेदजान्यो । निज प्राग्जवें सप्त पः कर्म साध्यो । बिपाकोदयी तीर्थकृन्नाम बांध्यो ॥ १ ॥ यदीय प्रज्ञावें जगत् सुप्रसिद्धा वसुप्राति हार्य्यादि संपत्ति सिद्धा । परानंद मग्ना सदा जे विज्ञोका । नमो ते जिना सर्वदा ज्ञव्य लोका ॥ २ ॥ नमो नन्त संत प्रमोद प्रधानं । प्रधानाय ज्ञव्यात्मने ज्ञास्वताय । यथा जेह ना ध्यान थी सौख्यज्ञाजा । सदा सिद्धचक्राय श्रीपालराजा ॥ ३ ॥ कस्या कर्मदुम मर्म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चकचूर जेणे । जला जव्य नवपद ध्यानेन तेणे। करी पूजना जव्य जावें त्रिकालें सदा वासियो आतमा तेण कालें ॥ ४ ॥ जिके तीर्थकर कर्म उदये करीनें । दिये देशना जव्यनें हित धरीने। सदा आठ महापाडिहारे समेता । सुरेसैं नरेसैं स्तव्या ब्रम्हपूता। कस्या घातिया कर्म च्यारे अलग्गा । नवोपग्रही च्यार वें जे विलग्गा । जगत् पंच कल्याण के सौख्यपामें। नमो तेह तीर्थंकरा मोक्षकामें॥

॥ ढाल ॥

तीरथपति अरिहा नमुं धर्मधुरंधर धीरो जी । देशना अमृत वरसता निज वीरज वऊ वीरो जी ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

वर अखय निर्मल ज्ञान जासन सर्व जाव प्रकाशता। निज शुद्ध श्रद्धा आत्म जावें चरण थिरता वासता । जिन नाम कर्म प्रजाव अतिशय प्राति हारज शोजता। जग जंतु करुणावंत जगवंत जविक जननें थोजता ॥

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यान । अरिहंत पद पूजा करो । निज २ सगति प्रमाण ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

तीजे नव वर थानक तपकरि जिण बां ध्युं जिन नाम । चोसठ इंद्रें पूजित जे जिन । कीजे तास प्रणाम रे ॥ १ ॥ नविका सिद्धचक्र पद वंदो जिम चिर काल आनं दो रे न० ॥ उप शम रसनो कंदो रे न० ॥ रत्न त्रयीनो वृंदोरे न० । बंदी नें आनंदो रे न० ॥ सेवे सुर नर इंदो रे नवि० ॥ १ ॥ जेहनें होइ कल्याणक दिवसे । नरकें पिण उजवालुं । सकल अधिक गुण अतिशय धारी ते जिन नमि अघटालुं रे न० ॥ सि० २ ॥ जे तिहुं नाण समग्ग उपन्ना । भोग क रम खीण जाणी । लेइ दीक्षा शिक्षा दिये जन नें । ते नमिये जिन नाणी रे न० ॥ सि० ॥ ३ ॥ महा गोप महा माहण कहिये । निर्यामक सत्थ वाह । उपमा एहवी जेहनें छाजे । ते जिन नमिये उछाह रे न० ॥ सि० ४ ॥ आठ महा प्राति हारज छाजे । पैंतीस गुण युत वांणी ॥ जे प्रतिबोध करे जग जन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नें । ते जिन नमिये प्राणी रे ज० ॥ सि० ॥

॥ ढाल सीमंधर स्वामी उपदिसे एदेशी ॥

अरिहंत पद ध्यातां थकां ॥ दव्वह गुण पज्जाये रे । ज्ञेद छेद करि आतमा । अरिहंत रूपी थाये रे ॥ २ ॥ वीर जिणेसर उपदिसे सांज्जल ज्यो चित लाई रे ॥ आतम ध्यानें आतमा । रिद्धि मिलें सझ आई रे ॥ वी० ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ॐ ह्रीं अर्हं परमात्मने० ॥

॥ इति प्रथम पद पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्ध की ॥ कीजे दिल खुसियाल ॥ असुज्ज कर्म दूरे टलें । फलें मनोरथ माल ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

सिद्धाण माणंद रमालयाणं । णमो णमो णंत चउक्कयाणं समग्ग कम्म क्खयकारयाणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जम्मं जरा दुरुक निवारगाणं ॥ २ ॥ निजा नादि कर्माष्टके । क्षय करी नें । जरा मृत्यु जन्मादि दूरे हरी नें । स्थिता सर्व लोकाग्र नागें विन्नुठ्ठा ॥ चिदानंद रूपा स्वरूपें प्रसि ठ्ठा ॥ ३ ॥ निजानंत बोधादि युक्ता प्रदेन्ना । निराबाधता निर्वृता जे अलेन्ना । निराकार साकार नावे महंता । नजो ते प्रमोदे सदा सि ठ्ठ संता ॥ ४ ॥ करी आठ कर्म क्षये पार पांम्या । जराजन्म मरणादि नय जेण वाम्या निरावर्ण जे आत्मरूपें प्रसिठ्ठा । थया पार पामी सदा सिठ्ठ बुठ्ठा ॥ ५ ॥ त्रिन्नागोनदेहा वगाहात्म लेन्ना । रह्या ज्ञान मय जात वर्णा दि देन्ना ॥ सदानंद सौख्या श्रिता जोति रूपा ॥ अनाबाध अपुनर्नवादि स्वरूपा ॥

॥ ढाल ॥

सकल कर्म मल क्षय करी । पूरण शुठ्ठ स्वरूपो जी अव्या बाध प्रनुतामई । आत म संपति नूपोजी ॥ सकल० ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे नूप आतम सहज संपति । शक्तिव्यक्ति पणे करी स्वद्रव्य क्षेत्र स्वकाल नावें । गुण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अनंता आदरी स्वस्वन्नाव। गुण पर्याय पर णित । सिद्ध साधन परन्नणी । मुनिराज मानसहंससमवडनमो सिद्ध महा गुणी १ ॥

॥ ढाल ॥

समय पएसंतर अण फरसी । चरमति न्नाग विशेष । अवगाहन लहि जे शिव पुंहता ॥ सिद्ध नमो ते अशेषरे न्न० ॥ १ ॥ पूर्व प्रयोग नें गति परिणाम। बंधन बेद । असंग । समय एक उर्ध्वगति जेहनी ॥ ते सिद्ध प्रण मो रंगें रे न्न० ॥ २ ॥ सि० ॥ निर्मल सिद्ध सिलानें ऊपर जोयण एक लोगंत सादि अनंत तिहां थित जेहनी ते सिद्ध प्रणमो संतरे न्न० सि० ॥ ३ ॥ जाणे पिण नस के कहि। परगुण प्राकृत तिम गुण जास। उपमा विण नांणी न्नव मांहें। ते सिद्ध दिउ ऊल्लास रे न्न० ॥ ४ ॥ जोतिसुं जोति मिली जस अनुपम। विरमी सकल ऊपाधि। आतम राम रमापति समरो। ते सिद्ध सहज समाधि रे न्न० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

रूपातीत स्वन्नाव जे। केवल दंसण ना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णीरे। ते ध्याता निज आतमा। होइं सिध
गुण खाणी रे वी० ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल० नुँह्रीं परम० सिद्धेभ्यो ॥

॥ इति श्री द्वितीय सिद्ध पद पूजा ॥

॥ अथ तृतीय पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिवआचारज पदतणी पूजा करोविशेष
मोहतिमिर दूरेंहरे। सूरजभाव अशेष ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं णमो णमो सूरिसमप्पहाणं। सद्देसणा दाण समायराणं। अखंड छत्तीसगुणायराणं ॥ २ ॥ नमूंसूरिराजा सदातत्वताजा। जिनेंद्रा गमें प्रौढ साम्राज्यभाजा षड् वर्गवर्गित गुणे शोभमाना। पंचाचारनें पालवें सावधाना ॥ ३ ॥ जिकेपंच आचार पालें सुभावें। अनित्यादि सद्भावना नित्यभावें। जिनेंद्रागमें ज्ञान दानेंसुरत्ता।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बहूनव्यमें जेरहें अप्रमत्ता ॥ ४ ॥ ढतीसे गुणे दीप्यमाना गणेज्ञा । सदाज्ञासना धार नूता सुलेज्ञा । बहूनव्य लोका सुमार्गनयं ता । ऊज्योसूरि मुष्या सदातेजवंता ॥ ५ ॥ नविप्राणिनें देज्ञना देज्ञकालें । सदाअप्रम त्ता यथासूत्रआलें । जिकेज्ञासनाधारदिग्दं तकल्या । जगत्ते चिरंजीव जोगुरुजल्या ॥

॥ ढाल ॥

आचारिज मुनिपतिगणी । गुणढत्रीसेंधा मोजी । चिदानंद रसस्वादता । परनावें नि क्षामोजी ॥ १ आ० ॥

॥ त्रूटक ॥

निः कामनिर्मलगुरुचिदघन । साध्यनिज निरधारथी । वरज्ञान दरसण चरणवीरज । सा धनाव्यापारथी । नविजीवबोधक तत्वसोध क । सयलगुण संपतिधरा । संबर समाधिग तिउपाधि । दुविध तपगुण आगरा ॥

॥ ढाल ॥

पंचआचार जेसूधापालें । मारगनाखेंसा चो । तेआचारज नमियेनेहसुं । प्रेमकरीनें जा चोरे न० ॥ १ ॥ वरढत्तीस गुणेंकरिशोजें ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

युगप्रधान जगमोहै । जगमोहै नरहै खिणु कोहै । सूरिनमुंते जोहै रे ज० सि० ॥ २ ॥ नितअप्रमत्त धरमउवएसें । नहिविकथान कषाय । जेहनें तेआचारजनमियें । अकलुष अमलअमायरे ज० सि० ॥ ३ ॥ जेदियेसार णवारण चोयण । पडिचोयण बलिजननें । पटधारी गछथंज आचारज । तेमान्या मुनि मननें रे ज० सि० ॥ ४ ॥ अत्यमियें जिमसूरज केवल । वंदीजैजगदीवो । जुवन पदारथ प्रगटपटूते । आचारज चिरजीवोरे ज० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

ध्याता आचारजजला । महामंत्र शुज ध्यानीरे । पंचप्रस्थानें आतमा । आचारज होयप्राणी रे ॥ ३ ॥ वीरजि० ॥

॥ श्लोक ॥

विमलकेवल० ॥ ॐह्रीं परम ० आचार्य ॥

॥ इतिश्री तृतीयकलश पूजा ॥ ३ ॥

॥ अथचतुर्थ पद पूजा ४ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुंदर सोभित गात्र ॥ उवझाया पद अरचिये । अनुभव रसनो पात्र ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

सुत्तत्थ वित्थारण तप्पराणं । णमो णमो वायग कुंजराणं । गणस्स संधारण सायराणं सव्वप्पणा वज्जिय मच्छराणं ॥ १ ॥ महा सूत्र सिद्धांत शुद्धे करीनें । पढावें सुशिष्यां अनुग्रह धरीनें । करें पूजना लोक मध्ये तदीया स्फुरंती दशी जास शक्ति स्वकीया ॥ २ ॥ गणे सारशुद्धिं सहर्षं करंता । मुनी वर्ग मध्ये प्रमादं हरंता । पचीसे गुणे युक्तदेहा सुधूर्या । सदा वंदिये ते उपाध्याय पूर्य्या ॥ ३ ॥ नही सूरि पण सूरिगुण नें सुहाया । नमुं वाचका त्यक्त मद मोह माया । वली द्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने । जिके सावधाने निरुद्धा जिमाने ॥ ४ ॥ धरे पंच नें वर्ग्ग वर्गित गुणौघा । प्रवादी द्विपोच्छेदने तुल्य सिंघा । गुणी गच्छ संधारणे स्तंभ नूता । उपाध्याय ते वंदिये चित् प्रभूता ॥ ५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥

खंतिजुवा मुत्तिजुवा । अज्जव मद्दवजुत्ता जी । सच्चंसोय अकिंचना । तव संयम गुणरत्ताजी ॥ १ खंति० ॥

॥ त्रूटक ॥

जे रम्या ब्रम्हसुगुप्तगुप्ता । सुमति सुमता श्रुति धरा । स्यादवाद वादें तत्ववादक । आत्म पर वीभंजन करा । भव भीरु साधन धीर शासन । वहनधोरी मुनि वरा । सिद्धांत वायन दान समरथ नमो पाठक पदधरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादशअंग सिज्झाय करे जे । पारग धारगतास । सूत्र अरथ विस्तार रसिक ते । नमोउवज्झाय उलासे रे भ० ॥ १ ॥ अर्थ सूत्र नें दान विभागें । आचारज उवज्झाय । भवतिन्ये जेलहे शिवसंपद । नमियेते सुपसायें रे भ० २ मूरख शिष्यनिपायें जेप्रभु । पाहणनें पल्लव आणे । तेउवझाय सकल जन पूजित । सूत्र अरथ सवजाणेरे भ० ॥ ३ ॥ राज कुमर सरिखागण चिंतक । आचारज पदयोगें । जेउवझाय सदातेनमतां । नावें भवभयसोगें रे भ०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

४ ॥ सि० बावना चंदनरस समवयणे । शु हित ताप सविटालें । तेउवझाय नमीजें जे वलि । जिनशासन अजुवालें रे न० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

तप सिझाये रत सदा । द्वादश अंगनो ध्यातारे । उपाध्याय ते आतमा । जगबंधव जग त्राता रे वी० ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल केवल० ॥ नेंजी परम० उपा० ॥

॥ इति श्री उपाध्याय जी चतुर्थ पद पूजा ॥

॥ अथ पंचम साधु पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्ष मारग साधन नणी । सावधान थ या जेह । ते मुनिवर पद वंदतां । निरमल थायें देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

साफूण संसाहिय संयमाणं नमो नमो शु द्ध दयादमाणं । तिगुत्ति गुत्ताण समाहियाणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मुणीण मानंद पयठ्ठियाणं ॥ १ ॥ जिके दर्शन ज्ञान चारित्र रत्नें । करी मोक्ष साधै प्रधान प्रयत्नें । सुमत्ती गुपत्ती धरे सावधाना ज्ञुनाचार पालें हरैं मोह माना ॥ २ ॥ विवर्जी विकत्था प्रमादादि दोषा । जितेंद्री पणें जे महा ज्ञान कोसा । ज्ञुन ध्यान ध्यावें गुणौघे समिठ्ठा । नमो ते सदा सर्व साधु प्रसिठ्ठा ॥ ३ ॥ करैं सेवना सूरिवायग गणी नी । कजं वर्णना तेहनी सी मुणीनी । समेता सदा पंच सुमति त्रिगुप्ता । त्रिगुप्तैं नही काम जोगेषु लिप्ता ॥ ४ ॥ वली बाह्य अभ्यंतरे ग्रंथि टाली । जुइं मुक्ति नें योग चारित्र पाली । ज्ञुनाष्टांग योगें रमें चित्त वाली । नमुं साधुनें तेह निज पाप टाली ॥ ५

॥ ढाल ॥

सकल विषय विषवारनें । निक्कामी निस्संगीजी नवदव ताप समावता । ज्ञातम सा धन रंगी जी ॥ ५ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे रम्या ज्ञुरु स्वरूप रमणें देहनिर्मम निर्मदा ॥ काउसग्ग मुद्रा धीरआसन ध्यान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अभ्यासी सदा । तप तेज दीपें कर्म जीपें नही छीपें परज्ञणी ॥ मुनिराज करुणा सिंधु त्रिजुवन बंधु प्रणमूं हित ज्ञणी ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जिम तरु फूलें ज्ञमरो बैसे । पीछा तसुन उपायें । लेई रस आतम संतोषें । तिममुनि गोचरि जायें रे ज्ञ० सि० ॥ १ ॥ पंचेंद्री नें जेनित जीपें । षटकायक प्रतिपालें । संयम सतरे प्रकार आराधे । वंदों तेह दयाल रे ज्ञ० ॥ २ ॥ अठार सहस्स शीलांगनाधोरी । अचल आचारचरित्र । मुनिमहंत जयणा युत वंदी कीजे जनमपवित्त रे ज्ञ० सि० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रम्हगुप्तजेपालें । बारहविहतपसूरा । एहवामुनि नमियेंजेप्रगटें । पूरबपुन्य अंकूरा रे ज्ञ० सि० ४ ॥ सो नांनीं परें परिक्षादीसें । दिनदिन चढतेवानें । संयम खपकरतां मुनि नमिये । देज्ञ कालअनुमानें रे ज्ञ० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

अप्रमत्त जेनित रहे । नविहरषें नविसोचैं रे । साधु सूधा ते आतमा । स्यूं मूंझे स्यूं लोचैं रे वी० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ श्लोक ॥
॥ विमलके० नँह्रीं० परम० साधु ॥

॥ इति पंचम पद पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ षष्टमदर्शण पूजा ॥

॥ दोहा ॥
जिनवर जाषित शुद्धनय। तत्वतणी परतीत ते सम्यग दर्शण सदा। आदरिये सुजरीत

॥ बंद ॥
जिणुत्ततत्ते रुइलरकणस्स। नमोनमो निम्मल दंसणस्स। मिच्छत्त नासाइ समुग्गमस्स मूलस्स सद्धम्ममहा दुमस्स ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥
अनंतानुबंधी क्रुधादिप्रकारें। महामोह मिथ्यात्वनें जेहवारै इगट्यादिन्नेदें करीवर्ज्जीजे। सडसठिन्नेदैं वली जे थुणीजे ॥ ३ ॥
जिनेंद्रोक्त तत्वार्थश्रद्धान रूपो। गुणासर्व मध्ये प्रवर्त्तैंश्रनूपो। विनाजेण नाणंचरित्तंनशुद्धं सुहंदंसणंतं नमामो विशुद्धं ॥ ४ ॥ विपर्य्या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सहोबासना रूपमिथ्या । टलें जेअनादि अ
वें जे कुपथ्या । जिनोक्तै क्षयेंसहजथी शुद्ध
ध्यानं । कहीयेंदर्शनं तेहपरमंनिधानं ॥ ५ ॥
विनाजेहथीज्ञान मज्ञानरूपं चरित्रं विचित्रं न्न
वारण्यकूपं । प्रकृतिसातमें उपशमें क्षयेंतेहहो
वें । तिहांआपरूपें सदाआपजोवें ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

सम्मग्दर्शनगुणनमो । तत्वप्रतीत स्वरू
पोजी । जसुनिरधार स्वन्नाव छै । चेतनगुण
जेअरूपोजी ॥ ५ ॥

॥ त्रूटक ॥

जे अनूप श्रद्धा धर्म प्रगटैं । सयलपरईहा
टलें । निजशुद्ध श्रद्धान्नाव प्रगटै । अनुन्नवक
रणाऊबलें । बहुमान परणति वस्तुतत्वें । अ
हव सुर कारण पणें निज साध्य दृष्टें सरब कर
णी । तत्वतासंपतिगिणें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

शुद्धदेव गुरुधर्मपरीक्षा । सद्दहणा परिणा
म । जेह पांमी जे तेह नमीजें । सम्म ग्दर्शन
नामें रे न्न० सि० ॥ १ ॥ मलउपशम क्षयउ
पशम क्षयथी । जेहोइ त्रिविधि अन्नंग । सम्म

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ग्दर्शन तेह नमीजे। जिनधर्मे दृढरंगें रे न० सि० ॥ २ ॥ पंचवार उपसम लहिजै। क्षयउ पशमियअसंख। एकवार क्षायक तेसम्मग्। दर्शन नमीयें असंख रे न० सि० ॥ ३ ॥ जे विणनाण प्रमाण नहोवें। चारित तरुनविफ लिउ। सुखनिर्वाणन जे विण लहिये। सम कित दर्शन वलिउ रे न० सि० ॥ ४ ॥ सड़ सठबोलें जे अलंकरिउ। ज्ञान चारित्रनूंमूल। समकित दर्शन ते नित प्रणमुं। शिव पंथ नुं अनुकूल रे न० सि० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

शमसंवेगा दिकगुणा। क्षयउपसम जेआ वेंरे दर्शन तेहिज आतमा। स्युं होवें नाम धरावें रे वी० ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विम० नुंह्रीं परम० दर्शन प० ६ ॥

॥ इतिश्री षष्ठम पद पूजा ॥

॥ अथसप्तम ज्ञान पद पूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि । आराधी जे सुन्न मनें । दिन दिन अधिक उछाह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

अन्नाण संमोह तमोहरस्स । नमोनमोनाण दिवायरस्स । पंचप्पयार स्सुवगारगस्स सत्ताणसव्वत्थ पयासगस्स । जवेंजेहथी सर्व अज्ञानरोधो । जिनाधीश्वर प्रोक्तअर्थावबोधो । मतीआदिपंच प्रकारप्रसिद्धो । जगद्भासने सर्वदैवा विरुद्धो ॥ २ ॥ यदीय प्रन्नावें सुन्नक्ष्यं अन्नक्ष्यं । सुपेयं अपेयं सुकृत्यं अकृत्यं जिणेजांणियें लोकमध्ये सुनाणं । सदा मे विशुद्धं । तदेव प्रमाणं ॥ ३ ॥ जइंजेहथी ज्ञान शुद्धिप्रबोधें । यथावर्णनासें विचित्रा वबोधें तिणेंजाणिये वस्तुषद् द्रव्यन्नावा । नहोवें वितत्यानिजेच्छास्वन्नावा ॥ ४ ॥ होइंपंच मत्यादि सुज्ञानन्नेदें । गुरूपास थीयोग्यतातेनवेदै वलिज्ञेयहेया उपादेयरूपें । लहेंचित्तमांजेम ध्यानेप्रदीपें ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भव्यनमो गुणज्ञाननें। स्वपरप्रकाशक भावेंजी। पर्यायधर्म अनंतता। भेदाभेद स्वभावेंजी भ० ॥ १ ॥

॥ त्रूटक ॥

जेमुख्यपरणित सकलज्ञायक। बोधवास विलासता। मतिआदि पंचप्रकारनिर्मल। सिद्धसाधन लंछता। स्याद्वादसंगी तत्वरंगी प्रथम भेद अभेदता। सविकल्पनें अविकल्प वस्तु। सकल संशय छेदता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

भक्ष अभक्ष न जेविन लहियें। पेयअपेय विचार। कृत्य अकृत्यन जे विन लहिये ज्ञानते सकल आधाररे भ० सि० ॥ १ ॥ प्रथम ज्ञान नें पीछेअहिंसा। श्रीसिद्धांतेभाष्युं ज्ञान नें वंदो ज्ञान मनिंदो। ज्ञानीये शिवसुखचाख्युं रे भ० सि० ॥ २ ॥ सकलक्रियानो मूलजेश्रद्धा। तेहनूं मूलजे कहिये। तेहज्ञान नितनित वंदीजै। ते विन कहो किम रहियेरे भ० सि० ॥ ३ ॥ पांचज्ञान मांहि जेह सदागम। स्वपर प्रकाशक तेह। दीपकपर त्रिभुवन उपकारी। वलिजिम रविशशिमेहरे भ०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सि० ॥ ४ ॥ लोक उरध अध तिर्यग् ज्योतिष । वैमानिक नें सिद्धि । लोक अलोक प्रगट सब जेहथी । ते ज्ञानें मुझसिद्धिरे न० सि०

॥ ढाल ॥

ज्ञानावरणी जेकर्मछै । खयउपशम तसथायेरे । तोहोय एहिजआतमा । ज्ञान अबोधताजायेरे वी० ॥ ५१ ॥

॥ श्लोक ॥

॥ विमल० ॐह्रींपरमपरमात्मनेज्ञान० ॥

॥ इतिश्री सप्तम ज्ञानपद पूजा ७ ॥

॥ अथाष्टम चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टमपद चारित्र नों पूजो धरी उमेद । पूजन अनुभव रस मिलै । पातिक होय उछेद ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

आरा हिया खंडिअ सक्किअस्स । नमो नमो संयम वीरिअस्स । सब्भावणा संग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निवर्हि अस्स। निव्वाण दाणाइ समुज्जाय स्स ॥ १ ॥ फलै जेह संपूर्ण थी तत्तकालं। सुणाणंपि सर्वात्मभावे विशालं। जिणें आद स्यो जे प्रयत्नें करीनें। दियो लोक नें जे अनुग्रह धरीनें ॥ २ ॥ ऊवें जेहथी रंकलोको पि पूज्यो। गुणश्रेणि थी दीपतो जेम सूर्यो। स्वकीये सुभेदैं करी जे विचित्रं। जयो ते सदा लोक मध्ये चरित्रं ॥ ३ ॥ वली ज्ञान फल ते धरिये सुरंगें। निरायंसता द्वार रोधै प्रसंगे। भवांभोधि संतारणे यान तुल्यं। धरूं तेह चारित्र अप्राप्त मूल्यं ॥ ४ ॥ होइं जास महिमा थकी रंक राजा। वली द्वादशांगी भणी होइ ताजा। वली पापरूपोपि निःपाप थावे। थई सिद्ध ते कर्म नें पार जावे ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

चारित्र गुण बलि २ नमो। तत्व रमण जसु मूलो जी। पररमणीय पणो टलें। सकल सिद्ध अनुकूलो जी चा० ॥

॥ त्रूटक ॥

प्रतिकूल आस्रव त्याग संयम तत्व थिर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ता दम मयी । शुचि परमखंती मुनींद शम पद । पंच संवर उपचयी । सामायिकादिक भेद धर्मैं यथाख्यातैं पूर्णता । अकषाय अकलुष अमल उज्जल काम कश्मल चूर्णता ॥ १

॥ ढाल ॥

देश विरतनें सर्व विरतजे । गृही यती अभिराम । ते चारित्र जगत जयवंतो । कीजें तास प्रणामरे भ० ॥ १ ॥ तृण पर जे षट खंड सुख छंडी । चक्रवर्त्ति पण वरिउ ॥ ते चारित्र अखयसुख कारण । ते मैं मनमांहि धरिउ रे भ० ॥ २ ॥ हूवा रंक पिण जेहनें आदरि । पूजित इंद नरेंद । अशरण शरण तेहिज वारू । वरिउ ज्ञान आनंद रे भ० ॥ ३ ॥ बारमास परिजायें जेहनें अनुत्तर सुख अतिक्रमिये । शुक्ल शुक्ल अभिजात्य तेऊपर । ते चारित्र नें नमिये रे भ० ॥ ४ ॥ चयते आठ कर्म नो संचय । रिक्त करै जे तेह । चारित्र नाम निरुत्तै भाष्युं । ते वंदूं गुणगेह रे । भ० ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

जाणी चारित्र तेआतमा । निज स्वभा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वमांहि रमतोरे । लेश्या शुद्ध अलंकस्यो ।
मोह वने नवि नमतो रे वीर० ॥ १३ ॥

॥ श्लोक ॥

विमल केव० नुँझी परम परमा० चारि०

॥ इत्यष्टमी कलश पूजा

॥ अथ तप पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कर्म काष्ठ प्रति जालवा परतिख अग्नि समान तपपद पूजो नवि सदा । निरमल धरिये ध्यान ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

कम्महु मुन्मूलन कुंजरस्स । नमो नमो तिब्ब तवो नरस्स । अणेग लद्धीण निबंध णस्स । दुस्सज्झ अत्थाणय साहणस्स ॥ १ ॥ इय नव पय सिद्धिं लद्धि विज्ञा समिद्धं । पयडिय समवग्गं ह्रींति रेहासमग्गं । दिसिवइ सुरसारं खोणि पीढा वयारं । तिजय विजय चक्कं सिद्धचक्कं नमामि ॥ २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विधै जे करयो आतमा ऊजा वालै । घणा कालनी कर्मराशि प्रजालें । अनेका सुलब्धी लहै यत् प्रन्नावें । क्षमायुक्त ए साधु महानं द पावे ॥ ३ ॥ वली वाह्य अभ्यंतरें नेद जिन्नं जिनेंद्रा गमें वर्णव्यूं जे अठिन्नं । अनासं स्वन्नावें तिलोके सुबंदं । नमूं ते प्रमोदे तपः पद मनिंदं ॥ ४ ॥ इति जिनवरवृंदं नक्तितो ये स्तुवंति । परम पद निधानं मानसे संस्म रंति । परन्नव इह वा श्रीपालव न्मानवानां प्रन्नवति किल तेषां चारु कल्याण लक्ष्मीः ॥ ५ ॥ विकालिक पणै कर्म कषाय टाली । निकाचित पणे बांधिया तेह वाली । कह्यो तेह तप वाह्य अभ्यंतर दुन्ने दे । क्षमायुक्त निर्हेतु दुर्ध्यान बेदे ॥ ६ ॥ होइं जास महि मा थकी लब्धि सिद्धि । अबांठक पणै कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तप जे महानंद हेतै । होइं सिद्धि सीमंतिनी जिम संकेतै ॥ ७ इसा नवपद ध्यान नें जेह ध्यावें । सदानंद चिद्रूपता तेह पावें । वली ज्ञान विमलादि गुणरत्न धामा । नमो तेह वृंदा सिद्धचक्र प्रधाना ॥ इम नवपद ध्यावें । परम आनंद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पावें । नव न्नव शिव जावें । देव नर न्नव पावें । ज्ञान विमलगुण गावें । श्रीसिद्धचक्र प्रन्नावें । सवि दुरित समावें । विश्वजय कार पावें । ॥ ९ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छा रोधन तप नमो । वाह्यअभ्यंतर न्नेदेंजी । आतम सत्ता एकत्वता । परपरणित उच्छेदैजी ।

॥ त्रूटक ॥

उच्छेदकर्म अनादि संतति जेह सिद्ध प णोवरें । योगसंगै निद्राआहारटाली । न्नाव अक्रयता करें । अंतर मद्धूरत तत्वसाधै स र्व्व संवरता करी । निजआत्म सत्ता प्रगटन्ना वें । करो तपगुण आदरी ॥ १० ॥

। ढाल ॥

इमनवपद गुण मंडलु । चउनिक्षेप प्रमा णंजी । सातनयें जेआदरें । सम्मग् ज्ञानें जा णंजी ॥

॥ त्रूटक ॥

निरधार सेतीगुणें गुणनोकरें जेवद्धमान ए । जसु करणईहा तत्वरमणें थायें निर्मल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ध्यान ए । इम शुद्ध सत्ता ज्ञलो चेतन सकल सिद्धी अनुसरें। अक्षय अनंत महंत चिदघन परम आनंदता वरें ॥ १ ॥

॥ कलश ॥

इम सयल सुख कर गुण पुरंदर सिद्धचक्र पदावली । सविलविध विज्ञा सिद्धि मंदिर नविक पूजो मनरली । उवझाय वर श्री राज सागर ज्ञान धर्म सुराजता । गुरुदीपचंद सु चरण सेवक देवचंद सु शोभता ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

जाणंता त्रिज्ञंज्ञानें संयुत । ते नव मुकति जिणंद । जेह आदरें कर्म खपेवा । ते तप सुर तरु कंदरे न० ॥ १ ॥ करम निकाचित पिण क्षयजावें। क्षमा सहित करंतां । ते तप नमि ये तेह दिपावें । जिन शासन उजवालें रे न० २ ॥ आमोसहि पमुहा बक्षलद्धी । होइं जा स प्रन्नावें अष्ट महा सिधि नव निधि प्रग टें । नमिये तेह प्रन्नावें रे न० ॥ ३ ॥ फल शिव सुख मोटूं सुर नरवर । संपति जेहनुं फूल । ते तप सुरतरु सरिखो वंदुं । सम मकरंद अमूल रे न० ॥ ४ ॥ सर्व मंगल मां

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हें पहिलो मंगल । वरणवियो जे ग्रंथे । ते तप पद त्रिकरण नित नमिये । वर सहाय शिव पंथें रे न० ॥ ५ ॥ इम नव पद थुण तो तिहां लीनो । ज्ञवो तनमय श्री पाल सुजस विलास बे चौथे खंझें । एह इग्यार मी ढालें रे न० ॥ ६ ॥

॥ ढाल ॥

इच्छारोधें संवरी । परणित समता योगें रे तप ते एहिज आतमा । वरतें निज गुण नोगें रे वी० ॥ १ ॥ आगम नोआगमतणो । नाव ते जाणो साचो रे । आतम नावे थिर ज्ञवो पर नावें मत राचो रे वी० ॥ २ ॥ अष्ट स कल समृद्धिनीं । घटमांहें रिद्धी दाखी रे । तिम नवपद रिद्ध जाणज्यो । ज्ञातमराम बें साखी रे वी० ॥ ३ ॥ योग असंख्य कें जिन कह्या नवपद मुख्य ते जाणो रे । एह तणें अवलंब नें । ज्ञातम ध्यान प्रमाणो रे वी० ४ ॥ ढाल बारमी एहवी । चौथे खंझें पूरी रे वाणी बाचक जस तणी । कोइ न रही अधूरी रे वी० ॥ ५ ॥

॥ श्लोक ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ बिमल केवल० नुँऊँ तपसे ॥

॥ इति तप पद पूजा ॥ ९ ॥

॥ इति बृहन्नवपद पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ नवपद जी की आरती ॥

जय जय जग जन बंछित पूरण सुरतरु अभिरामी । आतम रूप बिमल करतारक अनुभव परिणामी ज० ॥ १ ॥ जय २ जग सारा । भविजन आधारा ॥ आरति पार उतारा । सिद्ध चक्र सुख कारा ज० ॥ २ ॥ जग नायक जग गुरु जिणचंदा । भज श्री भग वंता । आतमराम रमा सुख भोगी । सिद्धा ज वंता ज० ॥ ३ ॥ पंचाचार दिये आचारज युगवर गुण धारी । धारक बाचक सूत्र अ रथना पाठक भव तारी ज० ॥ ४ ॥ सम दम रूप सकल गुण धारक मोटा मुनि राया दरसण नाण सदा जय कारक । संजम तप गाया ज० ॥ ५ ॥ नवपद सार परम गुरु भाषै । सिद्धचक जयकारी । इह भव पर

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नव रिधि सिधि दायक नव सायर वारी ॥ ज० ॥ ६ ॥ कर जोडी सेवक जस गावे मन वंछित पावे। श्री जिन चंद चरण परि पूजक शिव कमला पावे ज० ॥ ७ ॥

॥ इति नवपद आरती संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद लघु पूजा ॥

उप्पन्नसन्नाणमहोमयाणं। सप्पाडिहेरास णसंठिआणं ॥ सद्देसणाणंदियसज्जणाणं। नमोनमो होउसया जिणाणं ॥ १ ॥ नमोनंतसंतप्रमोदप्रधानं। प्रधानाय भव्यात्मने भास्वताय। थया जेहना ध्यानथी सौख्यभाजा ॥ सदा सिद्ध चक्राय श्रीपालराजा ॥ २ ॥ कस्या कर्म दुम मर्म चकचूर जेणें। भलाभव्य नव पद ध्यानेन तेणें ॥ करी पूजना भव्य भावें त्रिकाले। सदा वासियो आतमा तेण का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लें ॥ ३ ॥ जिके तीर्थंकर कर्म उदयें करी नें । दियें देशना भव्य नें हित धरी नें ॥ सदा आठ महापाडिहेरें समेता ॥ सुरे सें नरे सें स्तव्या ब्रम्ह पूता ॥ ४ ॥ कस्याधा तिया कर्म च्यारे अलग्गा । भवो पग्रही च्यार छे जे विलग्गा ॥ जगत् पंच कल्याण के सौष्य पामें । नमो तेह तीर्थंकरा मोक्ष कामें ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

परम मंत्र प्रणमी करी । तास धरी उर ध्यान ॥ अरिहंत पद पूजा करो । निज २ सक्ति प्रमाण ॥

॥ ढाल ॥

तीजे भव विधि सों करी । बीसस्थानक तप करिनें रे ॥ गोत्र तीर्थंकर बांधियो । समकित सुधमन धरिनें रे ॥ १ ॥ अरिहंत पद नितवंदिये करम कठिन जिमछंडिये रे अं० ॥ जनम कल्याणकनें दिनें । नारकीसु खियाथावें रे । मतिश्रुत अवधिविराजता । ज सुउपमकोई नावें रे अ० ॥ २ ॥ दीक्षालीधी सुभमनें । मनपर्यव आदरियो रे ॥ तपकरि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्मखपायनें । ततखिणकेवल वरियोरेअ० ३ चोतिस अतिसय सोहता । वांणीगुण पेंतीसोरे ॥ अठदस दोष रहितथई । पूरेंसंघ जगीसो रे अ० ॥ ४ ॥ मनतन वयण लगायनें । अरिहंत पद आराधै रे ॥ तेनरनिश्च यथीसही । अरिहंतपदवी साधें रे अ० ५

॥ श्लोक ॥

अथाष्ठ दलमध्याब्ज कर्णिकायां जिनेश्वरान् आविर्भूतो लसद्बोधा नावृतः स्थापयाम्यहम् ॥ १ ॥ निःशेषदोषें धनधूमकेतू। नपार संसार समुद्रसेतून् ॥ यजेसमस्ता तिशयैक हेतून् । श्रीमज्जिना नंबुजकर्णिकायां २ ॐह्रीँअर्हद्भ्यो नमः ॥ इति अरिहंत पूजा ॥

॥ अथ सिद्ध पूजा ॥

॥ दोहा ॥

दूजी पूजा सिद्धनी कीजे दिल खुसियाल असुभ कर्म दूरें टलें फलें मनोरथ माल ॥ १ सिद्धाणमाणंदरमालयाणं । नमो नमो णंतचउक्कयाणं। करी आठकर्मक्षयें पार पाम्या जरा जन्म मरणादि भय जेण वाम्या । निरावर्ण आत्म स्वरूपें प्रसिद्धा । थया पा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रपामी सदा सिद्ध बुद्धा ॥ त्रिनागो न देहा वगाहात्म प्रदेशा । रह्या ज्ञानमय जात वर्णा दि लेशा । सदानंत सौख्या श्रिता ज्योति रूपा । अनाबाध अपुनर्भवादि स्वरूपा ॥

॥ ढाल ॥

सकल करमनों क्षय करी । सिद्ध अव स्था पाई रे गुण इगतीस विराजता । उपम जस नहि काई रे ॥ ६ ॥ मनसुध सिद्धपद बंदिये क० श्रां० । जन्ममरण दुख नीगम्या शुद्धातम चिदरूपी रे । अनंतचतुष्टय धारता अव्याबाध अरूपी रे म० ॥ ७ ॥ जास ध्या न जोगीसरू । करे अजप्पा जापें रे । नव २ संच्या जीवडै । कठिन करम ते कापें रे ॥ म० ॥ ८ ॥ ध्यान धरंता सिद्धनों पूजंतां मन रागें रे । अविचल पदवी पाईये । कह्यो जिनवर वड़ नागें रे म० ॥ ९ ॥

॥ श्लोक ॥

तस्यपूर्व दलेसिद्धान् । सम्यक्तादि गुणा त्मकान् ॥ निः श्रेयस पदंप्राप्तान् । निदधे र्भक्तिनिर्भरः ॥ १ ॥ तत्पूर्वपत्रे परितः प्रण ष्टः । दुष्टाष्टकर्मा नधिगम्यशुद्धिं ॥ प्राप्तान्नरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न् सिद्धि मनंतबोधान् । सिद्धान्यजे शांति कराब्नराणां ॥ २ ॥ ॐह्रीं सिद्धेभ्यो नमः ॥
॥ इति सिद्ध पूजा ॥

॥ अथ आचार्य पूजा ॥

॥ दोहा ॥

हिवआचारिज पदतणी । पूजा करो विशे ष ॥ मोह तिमिर दूरें हरै । सूरज नाव अशेष

॥ छंद ॥

सूरीण दूरीकय कुग्गहाणं । नमोनमो सूरिसमय्यहाणं । नमोसूरिराजा सदातत्वताजा जिनेंद्रागमे प्रौढ साम्राज्यनाजा । षट्वर्गव र्गितगुणे शोजमाना । पंचाचारनें पालवें सा वधाना । नविप्राणिनें देशनादेशकालें । स दा अप्रमत्ता यथासूत्रआलें । जिके शासना धारदिग्दंतिकल्पा । जगत्ते चिरंजीव जोशु द्धजल्पा ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

गुणछत्तीसे दीपता । पालै पंचआचारोरे ॥ जिनमारग साचोकहै ॥ युगप्रधान जयकारो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रे । आचारिज पदवंदीये क० । सारण वारण चोयणा । पडिचोयण चौसिक्षा रे । भव्यजीव समझायवा । देवानें ते दक्षा रे आ० ॥ १ ॥ जिनवर सूरिज आथम्यां । परतिख दीपक जे हारे । सकल भाव परगट करें । ज्ञानमयी ज सु देहा रे आ० ॥ २ ॥ विधिसुं पूजा साचवें ध्यावें निज हित जाणी रे । पावें लघुतर काळमां आचारिज पद प्राणी रे आ० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

स्थापयामि ततः सूरीन् दक्षिणेस्मिन् दले मले चरतः पंचधाचारं षट्त्रिंशत् सद्गुणैयुतान् ॥ १ ॥ सूरीन् सदाचाररतां श्चसारानाचारयंतः स्वपरान्यथेष्ठं उग्रोपसर्गैक निवारणार्थं मभ्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः ॥ २ ॥ ॐह्रीं सूरिभ्योनमः ॥ इति आचार्य पद पूजा ॥

॥ अथ उपाध्याय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

गुण अनेक जग जेहना । सुंदर सोभित गात्र ॥ उवझायापद अरचिये । अनुभव रस नो पात्र ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ छंद ॥

सुत्तत्थवित्थारण तप्पराणं । नमो नमो वायग कुंजराणं । नहीसूरि पिणसूरिगुणनें सुहाया । नमुं वाचकात्यक्त मद मोहमाया । वलीद्वादशांगादि सूत्रार्थ दाने ।जिके सावधाने निरुद्वाभिमाने । धरै पंचनें वर्गवर्गित गुणौघाः प्रवादी द्विपोच्छेदनेतुल्यसिंहा । गुणी गच्छ संधारणे स्तंभभूता । उपाध्याय तेवंदिये चित् प्रभूता ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

द्वादशांगी वांणी वदें । सूत्र अरथ विस्तारै रे । पंचवरग गुण जेहना । सुमति गुपति नित धारै रे ॥ १ ॥ श्रीउवझाया वंदीयें क० आं० ॥ दायक आगम भावना । भेदभावयुत सारी रे । मूरखकुं पंडित करै । जगत जंतु हित कारी रे ॥ २ ॥ शीतल चंद किरण समी वांणी जेहनी कहियें रे । तेउवझाया पूजतां । अविचल सुखडा लहीयें रे श्री० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

द्वादशांग श्रुता धारान् । शास्त्राध्ययन तत्परान् ॥ निवेशयाम्युपाध्यायान् । पवित्रे

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पञ्चमे दले ॥ १ ॥ श्रीधर्मज्ञास्त्राण्य निशंप्र ज्ञांत्पै । पठंतिये न्यानपिपाठयंति ॥ अध्या पकांस्तांनपराब्जपत्रे । स्थिता न्पवित्रान्परि पूजयामि ॥ २ ॥ ॐह्रीं उपाध्यायेभ्यो नमः । ॥ इति उपाध्याय पूजा ४ ॥

॥ अथ साधु पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मोक्षमारग साधनन्नणी । सावधानथया जेह ॥ ते मुनिवरपद वंदतां । निरमलथायें देह ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

साक्षण संसाहिय संजमाणं । नमो नमो सुरु दयादमाणं ॥ करैसेवना सूरिवायग गणीं नी । कक्षं वर्णना तेहनीसी मुणीनी । समेता सदा पंचसमितित्रिगुप्ता । त्रिगुप्ते नही का मन्नोगेषुलिप्ता । वलीवाह्य अन्यंतरें ग्रंथि टाली । क्षयेंमुक्तिनें योग्य चारित्र पाली । सुन्नाष्ठांग योगैं रमैं चित्तवाली । नमुंसाधुनें ते ह निज पापटाली ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सकलविषय विषवारनें। आतमध्यानेंरा तारे। उपशम रसमांझीलता। निजगुणशा नें माता रे ॥ १ ॥ हित धरि मुनिपद वंदिये क० आं०। रतनत्रयी आराधतां। षट्का या प्रतिपालै रे। पंचेंद्री जीपें सदा। जिन मारग उजवालै रे हि० ॥ २ ॥ गुण सत्ता वीस अलंकस्या। पंच महाव्रत धारी रे। द्वादशविध तपआदरै। चिदानंद सुखकारी रे हि० ॥ ३ ॥ नवविध ब्रम्हचरिज धरै। करम महा भट जीत्या रे। एहवामुनि ध्यावें सदा। तेनरजगत विदीता रे हि० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान्। शुभध्यानैक मानसान् ॥ उदवपत्रगतान्नित्यं साधून्वंदामि सुव्रतान् ॥ १ ॥ वैराग्यमंतर्वचसिप्रसिद्धं। सत्यंतपोद्वादशधाशरी रे येषामुदक्क पत्रगतान् पवित्रान्। साधून् सदातान् परिपूजयामि २ ॥ ॐह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः ॥ इति साधु पूजा ॥ ५ ॥

॥ अथ दर्शन पद पूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

जिनवर भाषित शुद्धनय। तत्वतणी पर तीत ॥ ते सम्यग्दर्शन सदा। आदरिये शु भरीत ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

जिणुत्ततत्ते रुइलक्खणस्स। नमोनमो नि म्मलदंसणस्स ॥ विपर्यासहो वासनारूप मि थ्या। टलै जे अनादी अबै जेम पथ्या ॥ जिनोक्त जुवें सहजथी शुद्ध ध्यानं। कहिये दर्शनं तेह परमं निधानं ॥ विना जेहथी ज्ञा न मज्ञानरूपं। चरित्रं विचित्रं भवारण्य कूपं प्रकृति सात उपशमक्षये तेहहोवें। तिहांआ परूपें सदा आप जोवें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सुगुरू सुदेव सुधर्मनी सरदहणा चित ध रियें रे। सात प्रकृतिनो क्षय करी। क्षायक समकित वरियें रे ॥ १ ॥ दरसण पद नित वंदीये क० आं०। इण विन ज्ञान निफल कह्यो। चारित निफल जायें रे। सिव सुख जे विण नां मिलें। बहु संसारी थाये रे॥ द० ॥ २ ॥ सतसठि भेदें सोभतो। अज

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रामर फल दातारे । जे नर पूजै ज्ञाव सुं ते पामें सुख सातारे द० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

जिनेंद्रोक्त मतं श्रद्धा लक्षणं दर्शनं यजे मिथ्यात्व मथनं शुद्धं । न्यस्त मीज्ञान सद्द ले ॥ १ ॐह्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ इति दर्शन पद पूजा ॥ ६ ॥

॥ अथ ज्ञान पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सप्तम पद श्री ज्ञाननो । सिद्ध चक्र तप मांहि । आराधीजे शुन्न मनें । दिन दिन अधिक उछाहि ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

अन्नाण संमोह तमो हरस्स । नमो नमो नाण दिवायरस्स । हुयें जेहथी ज्ञान शुद्ध प्रबोधं । यथा वरणनासे विचित्रं विबोधं ॥ तिणें जाणिए वस्तु षड्द्रव्य न्नावा । नहोवें वितत्था निजेछा स्वन्नावा ॥ हुवें पंच मत्यादि सुज्ञान न्नेदैं । गुरू पास थी योग्य तातेन वेदैं ॥ बलीज्ञेय हेयाउपादेय रूपें ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहें चित्तमां जेम ध्वांत प्रदीपें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

नक्ष अनक्ष विचारणा पेय अपेय निर धारो रे । कृत्य अकृत्य नें जांणिये ज्ञान महा जयकारो रे ॥ १ ॥ ज्ञान निरंतर बंदिये क० । आं० ॥ ज्ञान विना जयणानही । जयणा बिन नहि धर्मो रे । धर्म बिना शिव सुख नही । तेविण नमिटैन्नर्मो रे ज्ञा० ॥ १ ॥ पांचप्रकारछै जेहना । नेदइकावन तासोरे ॥ जाणीनें पूजेंसदा । तेलहै केवलखासोरे ॥ २ ॥

॥ श्लोक ॥

अशेषद्रव्यपर्याय । रूपमेवा वन्नासकं ॥ ज्ञानमाग्नेय पत्रस्थं । पूजयामि हितावहं १ ॥ इतिज्ञान पद पूजा ७ ॥

॥ अथ चारित्र पद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

अष्टमपद चारित्रनो । पूजोधरी उमेद ॥ पूजत अनुन्नव रसमिलें । पातिक होयउछेद

॥ छंद ॥

आराहिया खंडिय सक्कियस्स । नमो २ सं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यमवीरियस्स । ज्ञानफल तेहधरियें सुरंगे । निरायंसता द्वार रोधेंप्रसंगें । नवांनोधि संतारणे यानतुल्यं । धरुंतेहचारित्र अप्राप्तमूल्यं । हुवें जास महिमा थकी रंकराजा । वली द्वादशांगी भणीहोय ताजा । वली पाप रूपोपिनिः पापथायें । थईसिद्ध तेकर्मनोपार पायें ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

सर्वविरतिनें देशविरतिथी । अणागार सागारी रे । जयवंतो थावोसदा । तेचारित्र गुणधारी रे ॥ १ ॥ चारित्रपद नितवंदीये क० आं० । षटखंड सुखतजिआदरे । संयमशिव सुखदाई रे । सत्तरिभेदैं जिनकह्यो । तेआदरियेंभाई रे चा० ॥ २ ॥ तत्वरमण तसुमूलवै । सकलआश्रवनो त्यागी रे । विधिसेती पूजनक रे । भावधरी वडभागी रे चा० ॥ ३ ॥

॥ श्लोक ॥

सामायिकादिभि र्भेदै । श्चारित्रं चारुपंचधा । संस्थापयामि पूजार्थं पत्रे हिनैर्कृते क्रमात् ॥ १ ॥ ॐह्रींसम्य ग्चारित्राय नमः ८ ॥ इति चारित्र पद पूजा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ तपपद पूजा ॥

॥ दोहा ॥

कर्मकाष्ठ प्रतिजालवा । परतिख अगनि समान । ते तपपद पूजोसदा । निरमल धरियेध्यांन ॥ १ ॥

॥ छंद ॥

कम्मद्दुमुन् मूलन कुंजरस्स । नमो २ति ह्रतवो नरस्स । त्रिकालिक पणें कर्म कषाय टालें । निकाचित पणें बांधिया तेहवालें । कह्यो तेह तप वाह्य अभ्यंतर दुनेदें । क्षमा युक्ति निर्हेतु दुर्ध्यान छेदें । ऊवें जास महिमा थकी लब्धि सिद्धि । अवांछ कपणे कर्म आवरण शुद्धि । तपो तेह तपजे महानंद हेतैं । ऊवें सिद्धि सीमंतिनी निज संकेतै

॥ ढाल ॥

निज इच्छा अवरोधीये । तेहिज तप जिन नाख्योरे । वाह्य अभ्यंतर नेदथी द्वादश नेदें दाख्योरे ॥ १ ॥ अनुपम तप पद बंदीये क० । आं० । तद्नव मोक्ष गामीपणो । जाणें पिण जिनरायारे । तप कीधा अति आकरा । कुत्सित करम खपायारे अ० ॥ २

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करम निकाचित क्षय हुवें । ते तप नें परभावें रे । लवधि अठावीस ऊपजे । अष्ट महा सिध पावें रे अ० ॥ ३ ॥ एहवो तप पद ध्यावतां । पूजंतां चित चाहैरे । अक्षय गति निर्मल लहै । सहु योगिंद सराहै रे ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

द्विधा द्वादशधा भिन्नं । पूते पत्रे तप श्चयं निस्थापयामि भकृत्यात्र । वायव्यांदि शिशार्मदं ॥ १ ॥ ॐह्रीं सम्पक् तपसे नमः ।

॥ इति तप पद पूजा ॥

॥ अथ कलश ॥

इम नव पद ध्यावे । परम आनंद पावे नव भव शिव जावे । देव नर भव पावे । ज्ञान विमल गुण गावे । सिद्ध चक्र प्रभावे । सहु दुरित समावे । विश्व जयकार पावे ॥

॥ अथ तवन उपरको कलश ॥

अरिहंत सिद्ध आचार्य उवझाय साधु दंसण नाणए । चारित्र तप नवपद थकी इहां सिद्ध चक्र प्रमाणए । श्रीपाल राजा सु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

एक ताजा लह्या सिद्धचक ध्यानसों । नवि जन नजो जिन लान जांणी । हिये आंणी ना वसों ॥ १ ॥ इय नवपय सिद्धिं । लद्धि विज्जा समिद्धं । पयडिय सर वग्गं । ह्रीं ति रेहा समग्गं । दिसिवइ सुर सारं । खोणि पीढा वयारं तिजय विजय चक्कं । सिद्ध च क्कं नमामि ॥ १ ॥ निः स्वेदत्वादि दिव्याति शय मय तनून् । श्री जिनेंद्रा न्सुसिद्धान् । सम्यक्त्वादि प्रकृष्टा ष्टगुण गणनृदा चार सा रांश्च सूरीन् । शास्त्राणि प्राणिरक्षा प्रवचन रचना सुंदराण्या दिसंत स्तात्सद्भि पाठका नां यति पति सहिता नर्चयाम्य र्घ्यदानैः ॥ १ ॥ इत्य मष्टदलं पद्मं पूरये दर्हदा दिनिः स्वाहांतैः प्रणवाद्यै श्च पदै र्विघ्ननिवृत्तये॥ २ ॥ ॐ ह्रीं पंच परमेष्ठिने सम्य ग्ज्ञानादि चतु रन्वितेभ्यो नमः ॥ इति श्री नवपदस्तु तिः ॥ सिद्धचक्र तप महिमा वर्णनम् ॥

॥ इति लघु नवपद पूजा ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ आरती ॥

ए नवपद प्राणी नित ध्यावो । पंचम गत आसय सुख पावो ॥ आं० ॥ धुरथी अरिहंतपद ध्याईजै थिरता यें श्रीसिद्ध थुणीजे । ॥ १ ॥ आचारज तीजे आराधो । सूधै मन निज कारिज साधो ए० ॥ २ ॥ उवझाया पंचम अणगारा प्रणमंतां पामें नवपारा । ३ ॥ दंशण नाण चरण जलदीपें । तप तपतां कृमअरिनें जीपें ए० ॥ ४ ॥ ए नवपद प्राणी नित थुणतां । गिरवा नरनव सफल गिणंता ए० ॥ ५ ॥ सिद्ध चक्रनी कीजे सेवा मनबंछित लहिये नितमेवा ए० ॥ ६ ॥ अजर अमर सुखदायक साचो । रूडै मनसे नितप्रति राचो ए० ॥ ७ ॥ इति आरती ॥

॥ अथ विंशति स्थानक पूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

सुखसंपति दायकसदा । जगनायक जिन चंद ॥ विघनहरण मंगलकरण । नमो नाभि नृपनंद ॥ १ ॥ लोकालोक प्रकासिका । जिनबाणी चितधार ॥ विंशतिपद पूजनतणो । कहिस्यूं विधि विस्तार ॥ २ ॥ जिनवर अंगें भाषिया । तपजप विविधप्रकार ॥ विंशति पद तपसारिखो । अवर न कोइ उदार ॥ ३ ॥ दानशील तपजप क्रिया । भावविना फलहीन जैसें भोजन लवण विन । नहीसरस गुणपीन ४ ॥ जेनवियण सेवेंसदा । भावें स्थानकवीस तेतीर्थंकर पदलहै । वंदै सुरनरईश ॥ ५ ॥

॥ ढाल ॥

श्री अरिहंत पद १ सिधपद २ ध्यावो प्रवचन ३ आचारिज ४ गुणगावो ॥ स्थविरपं चमपद ५ पुनरुवझाया ६ । तपसी ७ नाण ८ दंसण ९ मनभाया ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

मनभाव विनया १० वश्यका ११ मल । शील १२ किरिया १३ जानिये ॥ तप १४ विविध उत्तम पात्र १५ वेया । बच्च १६ समाधि १७

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वखानिये ॥ हितकर अपूरब नाण संग्रह १८ धरो मन सुजगीसए ॥ श्रुतिन्नक्ति १९ फुनि तीर्थ प्रन्नावन २० एह थानक वीसए ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

एथांनकवीश्रा जग जयकारा । जपतांलही ये जिनपदसारा ॥ करम निकंदैवीश्रा बावीसै न्नाष्या जग तारक जगदीसैं ॥

॥ उल्लालो ॥

जगदीस प्रथम जिणंद । जगगुरु चरमजिनवरजीमुदा । न्नवतीसरैं पद सकल सेवी २० लही जिनपति संपदा । बावीस जिनवर २२ सकल सुखकर । इंद्रजसु गुनगाइये । इग १ दोय २ त्रिण ३ सऊ २० पद जपीनें । तीर्थपति पदपाइये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अरिहंतादिक पदसदा । न्नजिये तपकरि गुरु ॥ अतिनिर्मल ग्रुन्नयोगता । करिकेतसु गुणलुरु ॥ १ ॥ बिमल पीठत्रिक तदुपरें । ठवियें जिनवर वीस ॥ पूजन उपग्रण मेलकरि । अरचीजै सुजगीस ॥ २ ॥ एक २ ए पदे तणो । द्रव्यपूज परकार ॥ पंच ५ अष्ट ८ बि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धजानिये। सत्तर १७ इगविस २१ सार ॥ ३ ॥ अष्ट ८ जातिना कलश करि। बिमलजलैं नर पूर ॥ पूजो नवियण सञ्ज २० मुदा। होय सकल दुख दूर ॥ ४ ॥ सोहै सञ्ज परमेष्ठि मैं जिनवरपद अनिराम ॥ बेद ४ निक्षेपें सम रिये। वधते शुनप रिणाम ॥ ५ ॥

॥ रागदेशाख। पूर्बमुखसावनं एचाल ॥

सकलजगनायकं। परमपददायकं। लायकं जिनपदं विमलनानं। चतुरधिकतीस ३४ अतिशय अमलबार १२ गुण। वचन पणतीस ३५ गुणमणिनिधानं ॥ १ ॥ सुखकरण जिनचरण पद्मसेवित सदा। नमर सुर असुर नर हृदयहारी। एहजिनवरतणी आण पूरणसदा दामजिम जगतजन शिरसि धारी अईयो ॥ २ जिनपपददरशपारसफरशतेंनवें। प्रगटनिज रूप परिणति विन्नासं। तजिय वहिरात्म गिरिसारता नविलहै। अनुपमं आत्म कांचन प्रकाशं ॥ ३ ॥ नवइ जिनराज पद जाप रवि किरण तै। तुरत बञ्ज दुरित नर तिमिर नाशं। घन चिदानंद वरकंदघन नवि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लहैं। तीर्थंकरचरण कमलाविलाग्नं ॥ ४ ॥ वर बिबुध मणि लही काच लघु ग्राकल कों। ग्र हण करिवा कवण कर पसारे। तिम लहीजि न चरण ग्रारण ग्रुन्न योग सें ॥ ग्र्वर सुरसरण कुण हृदय धारै ॥ ५ ॥ प्रन्नु तणैं पंच कल्या केरे दिनैं। प्रगट तिड्डां लोकमें ड्डइ उजेरो। न्नविक देव पाल श्रेणिक प्रमुख जिन नमी बांधियो गोत्र जिनराज केरो ॥ ६ ॥ जेह त्रिण काल नित नमैं जिन हरखसुं। तेह न्न व जल तिरे जनम तीजें। ग्र्धिक न्नव य दि करे। तदपि निश्चय करी ॥ सप्त ७ वलि ग्रष्ट न्नव करीय सीझै ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

णमो णंतविन्नाण सद्दंसणाणं। सयाणंदि या सेस जंतू गणाणं। न्नवं न्नोज विच्छेयणे वारणाणं। णमो वोहियाणं वराणं जिणाणं ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ग्रर्हद्भ्यो नमः ॥

॥ इति प्रथमपदे श्रीजिनेंद्र पूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

तनु त्रिन्नाग के घटन ते ॥ घन ग्र्वगा हन जास। विमल नाण दंसण कियो। लो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कालोक प्रकास ॥ १ ॥ अबिनासी अप्रमित अचल । पदवासी अविकार । अगम अगोचर अजर अज । नमो सिद्ध जयकार ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ कुंदकिरणशशिऊजलोरेदेवा ॥

अनुभव परमानंदसुं रे बाला । परमातम पद बंदो रे । करम निकंदो बंदिनें रे बा० । लहि जिनपद चिरनंदो रे ॥ १ ॥ गगन पए शंतर बली रे वा० । समयांतर अणफरसी रे द्रव्य सगुण परजायना रे वाला । एकसमय विध दरसी रे ॥ २ ॥ एक समय ऋजु गति करी रे वाला । नए परमपद रामी रे । नांजै सादि अनंत रे वा० । निरुपाधिक सुख धामी रे ॥ ३ ॥ अखिल करममल परिहरी रे बाला । सिद्ध सकल सुख कारी रे । विमल चिदानंद घन थया रे बाला । वर इकतीस गुण धारी रे ॥ ४ ॥ उतपन्नता वलि विगमता रे बाला ध्रुवता ३ त्रिपदी संगें रे । प्रनु मैं अनंत चतुष्कता रे बाला । सोहें शमक्रम नंगें रे ॥ ५ ॥ पनर १५ नेद ए सिद्ध थया रे बाला । सह जानंद स्वरूपी रे । परम ज्योति मैं परिण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

म्यारे बाला । अव्याबाध अरूपी रे ॥ ६ ॥ जिनवर पिणप्रणमैं सदारे बाला । एहनेंदीक्षा अवसरें रे । तिण प्रभुपद गुणमालिका रे बा ला । कंठे धरिये सुपरैं रे ॥ ७ ॥ हस्ति पा ल नवि नगतिसुं रे बाला । सिद्ध परम पद नजिनें रे । पद श्री जिन हरखे लह्यो रे बा ला । पर गुण परणति तजिनें रे ॥ ८ ॥

॥ काव्यं ॥

लोगग्गनागोपरि संठियाणं । बुद्धाणसिद्धा ण मणिंदियाणं । निस्सेस कम्मक्कय कारगा णं । णमो सया मंगल धारगाणं ॥ १ ॥ ॐ श्री सिद्धेभ्यो नमः ॥

॥ इति द्वितीय पदे श्रीसिद्ध पूजा ॥

॥ दोहा ॥

पदतृतीय प्रवचन नमो । ज्युंनन्नमो संसा र ॥ गमो कुमति परिणमनता । दमो करण नयकार ॥ १ ॥ जैसे जलधर वृष्टि तें । ओखि ल फलद विकसाय ॥ तैसें प्रवचन नक्तितें । शु न्न परिणति उलसाय ॥ २ ॥

॥ श्रीराग जिनगुणगानंश्रुतञ्चमृतं एचालमैं ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रवचन ध्यानं सुखकरणं। परिहरिये सङ्क विषय विकारं। करिये प्रवचन आचरणं प्र० १ ॥ सप्त ७ नंगिनूषित एप्रवचन। स्यादवाद मुद्रान्नरणं। सप्त नयात्मक गुणमणि आगर। बोधबीज उतपति करणं प्र० ॥ २ ॥ जैसें अमृत पानकरणतें। जुवें सकलविष संहरणं। तैसें प्रवचन अमृतपानें। कुमति हलाहल प्रविसरणं प्र० ॥ ३ ॥ प्रवचनकों आधेयकहीये। सकलसंघ तसु अधिकरणं। तिण एसंघ चतुरविध प्रवचन। एपद अखिल कलुषहरणं प्र० ॥ ४ ॥ यदि नविजन तुमएचाहतुहै। मुगति रमणि जन वश्य करणं। करण तीनइक करि लद करिये। प्रवचन पदसमरण धरणं प्र० ॥ ५ ॥ जिनवरजी पिण एतीरथनें। प्रणमें मध्य समवसरणं। नवजल तारण तरणि समानं। ए तीरथ अशरण शरणं प्र० ॥ ६ ॥ जिमन्नरतेसर संघनगति करि। लहियो पुण्यफला चरणं। चक्रीपद अनुन्नवि वलि शिवपद। लीध करिय क्रम निर्जरणं प्र० ॥ ७ ॥ नरपति संनवजिन हरषेंकरि आराधी प्रवचन चरणं। करम निकंद थया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जगदीसर जिनप रमाउर आन्नरणं प्र० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

अणंतसंसुद्ध गुणायरस्स । दुरकंधया रुग्ग दिवा यरस्स ॥ अणंतजीवाण दयागिहस्स । णमो णमो संघचउव्हिहस्स ॥ १ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीप्रवचनाय नमः ॥ इति तृतीयपदे श्रीप्रवचन पूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पदचतुर्थ नमियेसदा । सूरीसर महाराज सोहम जंबू सारिसा । सकल साधु सिरताज १ ॥ सारण वारण चोयणा । पडिचोयण करतार ॥ प्रवचनकज विकसायवा । सहस किरण अवतार ॥ २ ॥

॥ राग रामगिरी गात्र लूहैं ॥

आचारिज पद ध्याइयेरे वाला । तासविमल गुण गाइये ॥ पाइये हांहोरे वाला पाइये जिनपति पद जगशिर तिलो रे आ० ॥ १ ॥ जिन शासन उजुवालतारे वाला । सकलजीव प्रतिपाल तां ॥ पालतां हां० ॥ चरण करण मगचाल तां आ० ॥ २ ॥ सूरी सकल गुण सोहता रे वाला । सुरनर जन मनमोह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ता। मोहता हां० ॥ जवियण नें पमिवोह ता श्रा० ॥ ३ ॥ पंचाचार विराजिता रे वाला स जलजलद जिम गाजता ॥ गाजता हांहो० सूरि सकल सिर छाजता श्रा० ॥ ४ ॥ उप देशामृत वरसतारे वाला। दुरित तापसञ्ज निरसिता ॥ निर० हांहो० ॥ परमातम पद फरसता श्रा० ॥ ५ ॥ धरम धुरंधरता धरा रे वा० जग बांधव जग हितकराहि० हांहो स्वपर समय विउ गणधरा श्रा० ॥ ६ ॥ प द श्रीजिन हरषें ग्रह्योरे वाला सूरीसर पद तप वह्यो ॥ त० हांहो० ॥ पुरुषोत्तम नृप शिवलह्यो ॥ श्रा० ॥

॥ काव्य ॥

कुवादि केली तरु सिंधुराणं। सूरीसराणं मुनिबंधुराणं ॥ धीरत्वसंतज्जिय मंदराणं। ण मो सया मंगलमंदिराणं॥ १ ॥ नँह्रँीं श्रीआ चार्येज्योनमः ॥ ४ चतुर्थपदे आचार्यपूजा ॥

॥ दोहा ॥

द्विविध थविर जिनवर कह्या ॥ द्रव्य जाव परकार। लौकिक लोकोत्तर वली। सु नियें जेद बिचार ॥ १ ॥ जनका दिक लौकि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क थविर । लोकोत्तर अणगार । पंचम पद में जानिये। द्वितीय थविर अधिकार ॥ २ ॥

॥ राग सारंग ॥

नित नमिये थविर मुनी सरा । पंचमहाव्रत धारक वारक । कुमति जगत जन हित करा नि० ॥ १ ॥ संयमयोगें सीदत बालक ग्लाना दिक सक्ल मुनिवरा। एहनें उचित सहाय दियणते। वारे एहनां दुखन्नरा नि० ॥ २ ॥ पर्यय वय श्रुत त्रिविध ए थविरा । वीस रु साठ समोपरा । वयधर समवया धिक पाठक । एह थविर गुण आगरा नि० ॥ ३ ॥ तीजे अंग कह्या दस थविरा । रत्न त्रयीनां गुण धरा । ते इह निर्मल न्नाव ग्रहित्रा न्नविक सरोज दिवाकरा नि० ॥ ४ ॥ क्षीरजलधिसम अतिहि गन्नीरा । सुरगिरि गुरु धीरज धरा । ञ्ञारणागत तारणता धारा । ज्ञान विमल जल सागरा नि० ॥ ५ ॥ श्रुत तप धीरज ध्यान धरणतें । द्रव्यादिक ज्ञाता वरा । तेह स्वरूप रमण कह्या थविरा । नहीय धवल केञ्ञांकुरा नि० ॥ ६ ॥ एह थविर पद सेवी न्नगतें । पदमोत्तर बसुधेसरा। पद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्री जिन हरखें तिण लहियो । मुनिवर कुमुद निसाकरा नि० ॥ ७ ॥

॥ कलश ॥

सम्मत्तसंयम पतित नविजन । श्रुतिहि थिर करता नला । अवगुण अदूषित गुण विनूषित । चंद्र किरण समुज्जला । अष्टाधि कादश सहस शीलांग । रथ रुचिर धारा धरा नव सिंधु तारण प्रवर कारण । नमो थविर मुनीसरा ॥ ८ ॐह्रींश्री स्थविराय नमः ॥

॥ इति पंचमपदे स्थविर पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रवरनाण दरसण चरण धारक यतिधर्म सार ॥ समितिपंच त्रिण गुपतिधर । निरुपम धीरज धार ॥ १ ॥ चरण कमल जेहनां नमें अहनिशि सुरनर राय ॥ जमतागिरि दारण कुलिश । जय जय सिरि उवझाय ॥ २ ॥

॥ राग नैरव पंचवरणी अंगीरची० एचाल ॥

नावधरि उवझाया वंदो विजयकारी । श्री उवझाय परमपद वंदी । लहो जिनपद अतिशय धारी ना० ॥ १ ॥ कुमती मदतरु

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नंजन सिंधुर । सुमतिकंद घन अवतारी ॥ अंग दुबालस नणै नणावें । शिष्य नणी चि तहित धारी ना० ॥ २ ॥ सकल सूत्र उपदे श दियण तैं वाचक श्रुति विमलाचारी ॥ नव तीजैं अमृत सुख पावें । सुर असुरेंद्र मनोहारी ना० ॥ ३ ॥ हय गय वृष पंचान न सरिखा । करमकंद वरतर वारी । वासु देव वासव नृप दिनकर । विधु नंठारि तु लाधारी ना० ॥ ४ ॥ जंबू सीता नदि कांच न गिरि । चरमजलधि नुपम नारी । एनुपम बऊश्रुतनी जाणों उतराध्ययनें कही सारी ना० ॥ ५ ॥ अमल पंचविंशति गुण मणि निधि सकल नुवन जन उपगारी । संशय तिमिर हरण वासर मणि । पाप ताप आ तप वारी ना० ॥ ६ ॥ प्रवर संख पय नरि यो सोहै । तिमए ज्ञान चरण चारी । महेंद्र पाल पाठक पद सेवी । लहियो जिन पद विजितारी ना० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सद्बोहि बीजं कुर कारणाणं । णमो णमो वायग वारणाणं । कुबोहि दंती हरिणेसरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णं । विग्घोघ संताव पयो हराणं ॥ ८ ॥
ॐह्रीँ श्री उपाध्यायेभ्यो नमः ॥ ६ इति षष्ठ पदे उपाध्याय पूजा ॥

॥ दोहा ॥

जाणें जिनवाणी सरस । स्याद वाद गुण वंत ॥ मुनि कहिये शिव पंथनें । साधैं साधु कहंत ॥ १ ॥ समता रस जल झीलता । थि सदानंद सुरूप ॥ तिण पाम्यो पद सप्तमें । नमो नमो मुनि भूप ॥ २ ॥

॥ राग गुंड मिश्रित भीममल्हार मेघबरसे ॥
॥ भरी पुष्प बादल करी एचाल ॥

———o———

भक्ति धरि सातमें पद भजो मुनिवरा । सुखकरा विजित इंद्रिय विकारा ॥ गुण सतावीस भूषण करी सोभिता । क्षोभिता विकट कर्म सुभट सारा भ० ॥ १ ॥ चरण सत्तरि परम करण सत्तरि धरा । शिव करण नाण किरिया प्रधाना ॥ प्रति दिनें दोष श्या हारना वरजिता । सप्त ७ चालीस ४० यति धर्म निधाना भ० ॥ २ ॥ मदन मद भंजता कुमति जन गंजता । भक्त जन रंजता क्षांति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भरिया ॥ सुमत धरिया सदा चरण परिया जना । तारिया ज्ञान गंभीर दरिया भ० ॥ ३ ॥ तृणमणी सम गिणें चतुर बिध धर्मना परम उपदेश दायक उदारा ॥ बाह्यिरभ्यंतर भिदा वार बिध भ्रुति कठिन । तपतपें सकल जीउ अभयकारा भ० ॥ ४ ॥ वलि भ्रुठा वीस मनहरण गुण लबधि निधि । सातमें छठ गुण ठाण वसिया । सप्त भय वारका प्रवरजिन आगन्या । धारका स्वगुण परिण मनरसिया भ० ॥ ५ ॥ पंच परमाद कल्लोल ता कुल महा । पार संसार सागर जिहाजा बिविध नव वाफि युत शील व्रत के धरा मधुर निज वाणि रंजित समाजा भ० ॥ ६ ॥ कोफि नव सहस थुणियें महामुनि वरा । वी रभद्र जिम करिय साधु सेवा ॥ परम पद जिन हर्षसुं ग्रह्योतसु तणा । चरण कजयुग नमें सकल देवा भ० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

संतज्जिया सेस परीसहाणं । निस्सेस जीवाण दया गिहाणं ॥ सन्नाण पज्जायतरू वणाणं । नमो नमो होय तवोधणाणं ॥ ८ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐह्रीँ श्री सर्व साधुभ्यो नमः ॥ इति सप्तम पदे श्री साधु पूजा ॥

॥ दोहा ॥

बिमल नाण खर किरण किय । लोका लोक प्रकास ॥ जीत लही निज तेज सें । जिण अनंत रविन्नास ॥ १ ॥ सज्ञ संज्ञाय तम अपहरे । जय २ नाण दिणंद ॥ नाण चरण समरण थकी विलय होय दुख दंद ॥

॥ राग घाटो मेरो मन बस करलीनो ॥

॥ जिनवर प्रभु पास एचाल ॥

———o———

भावें ज्ञान वंदन करिये । शिव सुख तरु कंद ॥ जिन चन्द्र पद गुण धरिये वरिये परम आनंद भा० ॥ १ ॥ मतिनाण १ श्रुत २ पुनरवधि ३ मन परजय जाण ४ भा० । लोकालोक भाव प्रकासी । वर केवल नाण ५ भा० ॥ २ ॥ पंच ५ ए इकावन ५१ भेदैं । कह्यो जिनवर भान ॥ जग जीव जडता छेदैं ज्ञानामृत रस पान भा० ॥ ३ ॥ बिन ज्ञान धीकी किरिया । होय तसुफल ध्वंस ॥ भक्ष्याभक्ष्य प्रगट ये करिये । जिम पय जल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हंस न्ना० ॥ ४ ॥ वरनाण सहित सुकिरिया करी फल दातार ॥ ज्ञवो ज्ञान चरण रसी ला । लहो न्नव जल पार न्ना० ॥ ५ ॥ ज्ञाना नंद ञमृत पीधो । * न्नरतेसरराय ॥ तिणसे ञमृत पद लीधो । सुरपति गुण गाय न्ना० ६ ॥ सेवी ज्ञान जयत नरेसैं । न्नये जिन महाराज ॥ सोहें ज्ञान ये त्रिन्नुवन में । स ज्ञ गुण सिरताज न्ना० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

ठद्दव्व पज्जाय गुणुक्कारस्स । सया पयासी करणो ठुरस्स ॥ मिच्छत्त ञन्नाण तमोहरस्स नमो नमो नाण दिवायरस्स ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री ज्ञानाय नमः ॥ इति ञष्टम पदे श्री ज्ञान पूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

दरज्ञाण ञाश्रय धर्म्मनों । एहना षटउप मान ॥ दरज्ञाण विणनहि चरणचिद । उतरा ध्ययनें जान ॥ १ ॥ जिन दरसण फरस्यो न्नलो । अंतर मुज्ञरत मान ॥ अर्द्धपुगल परि यट रहें । तसु संसार वितान ॥ २ ॥

* मरुदेवीमाय ॥ इत्यपिपाठः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ राग कामोद चंपक केतक मालती एचाल ॥

जिनदरसण मुझमनवस्योए । श्रइयोमन वस्योए । उपजत परमआनंद । जिनदरसण दरसणदिये । विमल नाण तरुकंद ॥ १ ॥ दरसण मोह रिपु जीतिया ए अ० । वरदरसण उलसंत । दरसण घट परगट हुवां । नविय ण नव न नमंत ॥ २ ॥ जिनवर देव सुगुरु व्रतीए । केवलि कथित जिनधर्म । तीन तत्व परिणति रमें । ते दरसण करेंशर्म ॥ ३ ॥ जिन प्रनु वचनो परिसदाए श्र० । थिर सरदहण धरंत । इण लक्षण तै जानिये । समकित वंत महंत ॥ ४ ॥ इग १ दुग २ ति ३ चउ ४ आर ५ दस १० विहाए । सतसठि ६७ नेदविचार । वलि परतीति समकित नण्यो द्रव्य नाव परकार ॥ ५ ॥ द्रव्येंजिन दरशण कह्यो ए । नावें समकित सार । द्रव्यत दरशण नावतो । दरशण कारण धार ॥ ६ ॥ द्रव्यदरसण यदिगतवलीए श्र० । तदपि उत्तर हित कार आव्य नव जिनदरसणें । पायो दरसण सार ७॥ दरसण विण किरियाहताए श्र० । अंक विना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिम बिंदु । वलिहणियों विनचंद्रिका । वा सरमें जिम इंदु ॥ ८ ॥ हरिविक्रम नृप सेवतो ए अ० । दरशण पद अभिराम । पद श्री जिन हरषैं धस्यो ॥ बधतै शुन परिणाम । ८ ।

॥ काव्य ॥

अणंत विन्नाण सुकारणस्स । अणंत सं सार विदारणस्स ॥ अणंत कम्मावलि धंस णस्स । णमो २ निम्मल दंसणस्स ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं श्री दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ इति नवम पदे श्री दर्शन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

विनय नुवन रंजन करै । विनयें जस वि सतार ॥ विनय जीव नूषित करै । विनयें ज य जय कार ॥ १ ॥ विनय मूल जिनधर्मनों । विनय ज्ञानतरु कंद ॥ विनय सकलगुण से हरो । जय जय विनय सनंद ॥ २ ॥

॥ रागसामेरीपूजोरीमाईजिनवरअंगसुगंधैं ॥

ध्यावोरीमाई विनय दशम पद ध्यावो । पंच५नेद दस १० विध तेरस१३विध । बा वन ५२ नेद गणेसै ॥ बासठि ६२ नेद कह्या

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आगम में। विनयतणा सुविसेसें ध्या० ॥ १ ॥
तीर्थंकर १ सिद्ध २ कुल ३ गण ४ संघा ५
किरिया ६ धर्म ७ वरनाणा ८ ॥ नाणी ९
आचारिज १० मुनिथविरा ११। पाठक १२
गणि १३ गुणजाणा ध्या० ॥२॥ ए अरिहादिक
तेरस १३ पदनो। विनय करैं जेभावें। ते
तीर्थंकर पद अनुभविनें। अमृतपद सुखपावें
ध्या० ॥ ३ ॥ जिम कंचन मैं मृदुगुण लाभैं।
नहीय कालिमा पावें ॥ तिण ए सकल धातु
मैं उत्तम। नाम कल्पाण कहावें ध्या० ॥ ४ ॥
तिम विनयी मैं छै मृदुता गुण कुमति कठि
नता नासें। कृष्णादिक लेश्यानी मलिनता
जाये विनय गुण भासे ध्या० ॥ ५ ॥ दोय स
हस अरु अधिक चिडुत्तर। देववंदन निरधा
रो। गुरु वंदन विधि च्यार सै बाणुं ४९२
भेद करी उरधारो ध्या० ॥ ६ ॥ तीर्थंकरादि
कनो मन रंगें। विनय चरण शुभ ध्यायो ॥
धन नामा भविजन शुभ योगें। पद जिन
हर्ष पायो ध्या० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

आणंदया सेसजगज्जणस्स। कुंदिंदु पादा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मलता चणस्स ॥ सुधम्म जुत्तस्स दयारूयस्स णमोणमो सव्विणया लयस्स ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री विनयाय नमः १० इति दशमपदे श्रीविन यपूजा ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

इग्यारमपद नितनमुं। देशसरव चारित्र पंकमलिनता दूरकरि। चेतनकरे पवित्र ॥ १ ॥ एह चरण सेवन करें । रंकथकी सुरराय ॥ तीन जगतपति पददिये । जसु सुरनर गुण गाय ॥ २ ॥

॥ राग सारंग बावन चंदनघसिकुम०एचाल ॥

चरण सरण मुऊमनहस्यो । सुखकरण ह रण घनपापए। हांहो रे वाला ॥ एहचरण ज लधरहरें । अज्ञान तरूणतर तापए हां० १ आठकषाय निवारतां । देशविरत प्रगटऊवें खासए हां० । चारकषाय निवारिया । सम विरत लहै गुण वास ए हां० ॥ २ ॥ इगवा सर सेव्यो थको । सुधसरव संवरचारित्रए हां० परमानंद घनपददिये । सुरलोक जनि तसुखचित्रए हां० ॥ ३ ॥ नवनय तरुगण

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

छेदिवा । ए संयम निसित कुठार ए हां० ॥ ज्ञान परंपर करण छै । अमृतपदनों हित कार ए हां० ॥ ४ ॥ चरण अनंतर करण छै । निरबाण तणों निरधार ए हां० । सरब विरति सुध चरणसे पामें अरिहंत पद सार ए हां० ॥ ५ ॥ वरस चरण पर जायमें । अनुत्तर सुख अतिक्रम होय ए हां० । सतर १७ भेद चारित्रना । कहिया जिन आगम जोय ए हां० । देश थी सम संयम विषें । उज्जलता अनंत गुण भाज ए हां० । अरुण देव सेवी चरणनें । भ ये जगगुरु जिन महाराजए हां० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

कम्मोघ कंतार दवानलस्स । महो दयानंद लयाजलस्स । विन्नाण पंकेरुह काणणस्स णमो चरित्तस्स गुणापणस्स ॥ ८ ॥ ॐह्रीं श्री चारित्राय नमः ॥ ११ ॥

॥ इति एकादश पदे श्री चारित्र पूजा ॥

॥ दोहा ॥

सुरतरु सुरमणि सुरगवी । काम कलश अवधार । ब्रम्हचर्य इण सम कह्यो । कामित फल दातार ॥ १ ॥ जिम जोतिसियां र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जनि कर । सुर गण में सुरराय । तिम सब्ब व्र त शिर सेहरो । ब्रम्ह च रिज कहिवाय ॥ २ ॥

॥ रागकाफी जंगला भला प्रभुगुण वाल्हाहो ॥

भवभयहरणा शिवसुखकरणा । सदाभजो ब्रम्हचाराहो भ० ॥ शीलविबुध तरुप्रतिपाल नकों । कही जिनवर नववाराहो भ० ॥ १ ॥ दिव्यौदारिक करण करावण । अनुमति विष य प्रकारा हो भ० ॥ त्रिकरणजोगें ये परिहरि ये । भजिये भेद अढारा हो भ० ॥ २ ॥ कन क कोडिनो दान दिये नित । कनक चैत्यकर तारा हो भ० ॥ येहथी ब्रम्हचरिज धारकनो । फल अगणित अवधाराहो भ० ॥ ३ ॥ सहसचो रासी श्रवण दानफल । शाम ब्रम्हव्रतफल सारा हो भ० ॥ विजयसेठ विजयासेठाणी । उभय पक्ष ब्रम्ह धारा हो भ० ॥ ४ ॥ भये सुदर्शन से ठशीलसें । मुगतिबधू भरताराहो भ० ॥ सह स अढार शीलांगरथ धारा । धार करो निस तारा हो भ० ॥ ५ ॥ सिंहादिक वसुभय तरु भंजन । सिंधुर मदमतवारा हो भ० ॥ कलह कारि नारद रिषिसरिखे । तस्योभवजलधि अ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पारा हो ज० ॥ ६ ॥ पच्चरकाण विरति न
हि एहमें । येव्रम्हव्रत उपगाराहो ज० ॥ स
कल सुरासुर किन्नर नरवर । धरीय जगति
हितकाराहो ज० ॥ ७ ॥ व्रम्हचरिज व्रतधरन
रवरके । प्रणमैंचरण उदाराहो ज० ॥ दशमें
अंगेंजणियों नरवर्मा । नरपति गुण श्लाधा
राहो ज० ॥ ८ ॥ व्रम्हचरिजव्रत पाल लह्यो
पद । जिनहरषें * जयकारा हो ज० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

सग्गा पवग्गग्ग सुहपयस्स । सुनिम्मला
णंत गुणालयस्स ॥ सव्वुव्वया भूसण भूसणस्स
णमोहि सीलस्स अदूसणस्स ॥ १ ॥ ॐह्रींश्री
व्रम्हचर्याय नमः १२ इति द्वादशपदे श्रीव्र
म्हचर्य पूजा ॥ १२ ॥

॥ दोहा ॥

करम निरजरा हेतु है । प्रवर क्रिया गुण
खाण ॥ जिनशासन नीस्थितिरही । किरिया
रूपें जाण॥ १ ॥ जवन मांहि किरियामही ।
सकल शुद्ध विवहार ॥ प्रवरनाण दरसण त
णों । शुधकिरिया सिणगार ॥ २ ॥
॥ राग मालवीगौडी सब अरतिमथन० धूपं ॥

* भव तारा जो ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शुभध्यान किरिया हृदय धरिनें। धर्म सकल उरधार रे ॥ आर्त्तरौद्रनी हेतुकिरिया। अशुभ पणवीस वार रे सु० ॥ १ ॥ ज्ञानवंत अशास्त्रनटहैं। क्रिया शास्त्र वतंसरे ॥ सुभटनाणी क्रियाशस्त्रै। करयकर्म अरिध्वंस रे सु० २ ज्ञान सेती वदेंशिवयदि। तेरमें गुणठाणरे ॥ येकनाणें करि जिनेसर। किमु न लहैं निरवाणरे सु० ॥ ३ ॥ जिनप शैलेशीकरण करि। चउदमें गुणठाण रे ॥ सरस संबरचरण करणें लहैं पद निरवाणरे सु० ॥ ४ ॥ ये अनंतर अमृतकारण। कह्यो जिनवर नाणरे ॥ सरवसंवरचरणकिरिया। नशिवइण विनुजाणरे सु० ५ ॥ येकनाणें इकक्रियामें। नशिव वितरण शक्ति रे ॥ कहें जिनवर उभय योगें। लहेंभविजन मुक्तिरे सु० ॥ ६ ॥ गरलमिश्रित सरसभोजन। अशुभ परिणति धाररे ॥ अमृत संयुत तेहभोजन। रुचिर परिणति कार रे सु० ७ ॥ ज्ञानसहता तेमकिरिया। करिकरें निसताररे ॥ ज्ञानविन किरियानदीयें। मनोमत फलसाररे सु० ॥ ८ ॥ ज्ञान परिणत रमीकिरिया। तेहकिरिया साररे ॥ भयोहरि वाहन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनेसर । शुद्धकिरियाधार रे सु० ॥ १ ॥

॥ काव्यं ॥

विशुद्ध सद्धान विभूसणस्स । सुलद्धि संपत्तिसुपोसणस्स ॥ णमोसदाणंत गुणप्पदस्स णमोणमो सुक्किरिया पदस्स ॥ १० ॥ ॐह्रीँ श्री क्रियायै नमः १३ इति त्रयोदशपदे श्री क्रिया पूजा ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

शमतारस युत तपरुचिर । भणियो जिन जगभान ॥ शिवसुर सुख चंदनफलद । नंदनविपिन समान ॥ १ ॥ सघन करम कानन दहन । करनविमल तपजान ॥ विपिन धूमकेतनसमो । जय तप सुगुण निधान ॥ २ ॥

॥ रागकल्याण तेरीपूजावनीतेरसमैं एचाल ॥

मेरीलगी लगन तपचरणें। सकल कुशल में प्रथम कुशल ए । दुरित निकाचित हरणें मे० ॥ १ ॥ जैसे गणधर की जिनचरणें। चातक की जल धरणें ॥ जैसे चक्रवाक की अरुणें । चकोर की हिम किरणें मे० ॥ २ ॥ जिनवर पिण तद्भव शिवजाणें। त्रिणचउना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ण सुकरणें मे० ॥ तदपि सुकोमल करण सर
णनें । ठवय कठिन तप करणें मे० ॥ ३ ॥
कपट सहित तपचरणधरणतें । वांछित फल
नवितरणैं मे० ॥ नितएदंज्ञ रहित तपपदके
सुरपति गणगुण वरणें मे० ॥ ४ ॥ पीठम
हापीठमुनि मल्लीजिन । पूरब ज्ञव तप सर
णैं मे० ॥ रहिया तदपि कपट नवि बंन्धो ।
ज्ञये स्त्रीगोत्रा चरणें मे० ॥ ५ ॥ दृढप्रहारी
पांझव घनकरमी । बंन्धाकरमावरणें मे० ॥
तपसे ज्ञोज्ञलही त्रिज्ञुवनमें । केवल कमलाज्ञ
रणें मे० ॥ ६ ॥ लाषइग्यारह असीहजारा ।
पंचसयस दिनखिरणें मे० ॥ मासखमण करि
नंदन मुनिवर । पाम्यों फलशिव धरणै मे० ७
तपकरियो गुणरयण संवच्छर । खंधक ज्ञाम
तादरणें मे० ॥ चउदसहस मुनिमैं कह्यो अ
धिक० । धन्नोतप आचरणें मे० ॥ ८ ॥ बाहिर
ज्यंतरज्ञेदें एतप । बारज्ञेद अधिकरणें मे० ॥
वसनें कनककेतु पाम्यो पद । जिन हरषें ज्ञ
वतरणें मे० ॥ ९ ॥

॥ काव्य ॥

लक्ष्मीसरोजा वलिता वणस्स । सरूव सं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लग्ग सुपावणस्स ॥ श्रमंगलानो कुहदुद्दवस्स णमोणमो निम्मल सत्तवस्स ॥ १० ॥ नुंजी श्री तपसे नमः १४ इति चतुर्दश पदे श्री तप पूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

गौतम गणधर पनरमें । पदसेवो सुप्रसन्न वलिसङ्ग जिन गणधर नमों । चवदैसें बाव न्न ॥ १ ॥ दानसकल जग वशकरें । दान ह रें दुरितारि ॥ मनवांछित सङ्ग सुखदियें । दा न धरम हितकारि ॥ २ ॥

॥ रागसोरठ तेरी प्रीति पिठानी हो प्रजुमें ॥

पनरम पद गुणगाना होजवि पनरम० ॥ जावधरी करियें मनरंगें । परम सुपात्रें दा ना हो जवि पनरम० ॥ १ ॥ पात्रकह्या द्रव्य जाव दुजेदें । द्रव्यलक्षन एजानाहो जवि प० ॥ सर्वोत्तम उत्तमङ्गवें जाजन । रतनकनक रू पाना होजवि प० ॥ २ ॥ मध्यम पात्रकही जे एहवा । ताम्र धातु निपजाना हो जवि प० पात्रलोहादिक अपरजातिना । तेहजघन्य क हाना होजवि प० ॥ ३ ॥ जावपात्रनो लक्ष न कहियें । सुनियें सुगुण सयाना हो जवि प०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पंचम चरणधरें वलि वरतें। क्षीणमोह गुण ठाणाहोजवि प० ॥ ४ ॥ रतनपात्र समते स र्वोत्तम । पात्रकह्या जिनजाना हो जवि प० प्रवरनाण किरियाधर मुनिवर । लाजालाज समाना हो जवि प० ॥ ५ ॥ तेकांचन जाज न समकहिये । जवजल तारन याना हो जवि प० ॥ सुधमन ठादशव्रत दरशन धर । तार पात्र समजाना हो जवि प० ॥ ६ ॥ शुध स मकित धरश्रेणिक परमुख । रह्या अविरति गुणठाणा हो जवि प० ॥ तामूपात्र समएहनें कहीयें। जावी गुणमणि खाना हो जवि प० ७ ॥ अपर सकलजन मिथ्यादृष्टी। लोहादि पात्र गिनाना हो जवि प० ॥ जिनशासन रंगें रंगाना । वाचंयम सुप्रमाना हो जवि प० ८ एहनें दान दियांशिव लहिये। एहसुपात्र प हिचाना होजवि प० ॥ पंचदान दशदान नि करमें । अजयसुपात्र महिराना होजवि प० ९ ॥ नरवाहन शुजपात्रदानतें । जयेजिन ह रष निधाना होजवि प० ॥ सालिजद्र वलि सुर सुखलहियो । सुरनर करय वखाना हो ज वि प० ॥ १० ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ काव्य ॥

अनंतविन्नाण विन्नासरस्स। दुवाल संगी कमला करस्स ॥ सुलद्धवासा जरगोयमस्स। णमो गणाधीसर गोयमस्स ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीँ गौतमाय नमः। इति पंचदश पदे सुपात्रदानाधिकारे गौतम पूजा ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

सोलमपदमें जानिये। वेयावच्च विधान अखिल विमल गुणमणि तणों। सोहै प्रवर निधान ॥ १ ॥ जिन १ सूरी २ पाठक ३ मुनी ४ बालक ५ वृद्ध ६ गिलान ॥ तपसी ८ चैत्य ९ संघनोंकरो। वेयावच्च प्रधान ॥ २ ॥

॥ रागजंगलावालोम्हारोकबमिलसीमनमेलू ॥

सेवोभाई। सोलमपद सुखकारी ॥ श्री जिनचंद्र प्रमुख दशपदनों। करो वेयावच भारी से० ॥ १ ॥ श्रीतीर्थंकर त्रिभुवन शंकर। अवर केवली बलिहारी २ मनपर्यवधर ३ अवधिनाणधर ४ चवदपूरब श्रुतधारी से० २ ॥ दशपूर्वी १६ उत्कृष्ट चरणधर। लब्धिवंत अणगारी ॥ ए जिन कहिये इनवंदनतें। भ

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विक्रवें जिनअवतारी से० ॥ ३ ॥ जिनमंदि
र बिंबकरयन्नरावें। पूजकरें मनुहारी ॥ वेया
वच्चकहीये जिनकी। करिये न्नवजलतारी से०
४ ॥ श्राचारिज परमुख नवपदकी । वेयाव
च विजितारी ॥ न्नक्तिपूर्व वस्त्रौषध श्रनजल
देवें गुणविस्तारी से० ॥ ५ ॥ पंचसय मुनि
नीकरीय वेयावच । पूरबन्नव व्रतचारी ॥ न्न
रतबाक्तबलि चक्रीपदन्नुज। बललह्यो वरीत्रि
वनारी से० ॥ ६ ॥ नंदिषेण सुलसामुनि जि
नकी करीय वेयावचसारी ॥ तिनसें स्वर्गलोक
में दुयकी । न्नईय प्रशंसान्नारी से० ॥ ७ ॥ इत्या
दिक सोलमपद उधरे । बक्तलन्नव्य क्रमजा
री ॥ तिनसें इन वेयावचपद की । वारीजा
उं वारहजारी से० ॥ ८ ॥ नृपजीमूत१केतु२
सोलमपद । सेवीन्नये दुखवारी ॥ श्रीजिनह
र्षधरी हरिवंदित। शरणागत निसतारी से०

॥ काव्य ॥

मणुस्स सव्वातिसया सयाणं। सुरा सुराधी
सर वंदियाणं ॥ रवींदु बिंबामल सग्गुणाणं।
दयाधणाणंहि नमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐह्रीँजिने
न्योनमः ॥ इति षोडशपदे वेयावृत्य पूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

सतरम पद में सेविये । सङ्ग सुख करण समाधि ॥ जिन सेवन तें ज्ञविक नों । गमें व्याधि श्रुरु आधि ॥ १ ॥ ब्रम्ह नगर पति विचरतां । बरपाथेय समान ॥ ए समाधि पद जानिये । सुरमुणि कियेहै रांन ॥ २ ॥

॥ रागकहरवा बाजै तेरा बिबुआ रे वा० ॥

मेरो रे समाधि चरण चित बसियो । तसु गुण समरण कियो मनु बसियो मे० ॥ सकल जगत जन जिनकुं स्तवतु हें । अनु ज्ञव रंगे अतिहि विकसियो मे० ॥ १ ॥ द्रव्य तज्ञावत दुबिधि समाधि । सुरतरु मानुं नित ज्ञुवन विलसियो ॥ श्रुसन वसन सलिला दिक ज्ञक्ति । करय संघनी करुणा रसियो ॥ मे० ॥ २ ॥ द्रव्य समाधि प्रथम ये सुनियें । कह्यो जिन लोकालोक दरसियो ॥ सारण वारण चोयण प्रमुखें । पतित सुथिर करै घ्रम में हरसियो मे० ॥ ३ ॥ ज्ञाव समाधि द्वितीय ये कहिये । जो करै सो जिन चरण फरसियो ॥ सकल संघ कों जो उपजावत ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुविध समाधि दुरित तसु नसियो मे० ॥ ४ ॥ सुमति पंच त्रिण गुपति धरें नित। सुरगिर वरनों धीरज करसियो ॥ जगत जंतु छुध त पति हरन कुं अनुभव अमृत धार वरसियो मे० ॥ ५ ॥ ध्यान अनल करमें धन दाहत जिनसे पर गुण परिणत खिसियो ॥ ये मुनि तरणि तेजसम दीपत। अमृत सुखामृत पान तिरसियो मे० ॥ ६ ॥ इन पदमें असे मुनि जन के समरन तें। भये जग अवतं सियो ॥ ये पद सेवी नृपति पुरंदर भये ज गपति जिन हरख उलसियो मे० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

सन्निंदिया पारविकारदारी। अकारणासेस जणोवगारी॥ महाभयातंकगणापहारी।जयो सदा शुद्ध चरित्त धारी ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री नमश्चारित्र धारेभ्यः ॥ इति सप्तदश पदे समाधि पूजा १७ ॥

॥ दोहा ॥

श्रुत अपूर्व ग्रहिवो सदा। अष्टादश पद मांहि ॥ इण पद सेवक जन तणा । सफ संकट भय जाहि ॥ १ ॥ जेती कुमति निशु

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऊता । घोर तपें करि होय ॥ तत अनंत गुण ज्ञाऊता । सुज्ञानी की जोय ॥ २ ॥
॥ दिलदारयार गबरू राषूं रे हमारा घट में ॥

———o———

जिन चंद्र नाम तेरा । महाराज ज्ञान तेरा ॥ जीतैं रे बिकट जव जटनें । सदपूर्व ज्ञान धरणा ॥ वितरे जिनेंद्र चरणा । करेस वें कर्म हरणा जी० ॥ १ ॥ जग में महोप कारी । जय सिन्धु वार तारी ॥ कुमतांधता विदारी जी० ॥ २ ॥ सक्त जावनों प्रकासी । परम स्वरूप जासी । परमात्म सद्भवासी ॥ ३ ॥ बिनु हेतु विश्व बंधू । गुण रत्न राशि सिंधू ॥ समता पियूष अंधू जी० ॥ ४ ॥ स्या द्वाद पक्ष गाजे । नयसप्त सें विराजे ॥ एकांत पक्ष जाजे जी० ॥ ५ ॥ लहि तीर्थपाव तारा । इनसें जिनेंद्र सारा ॥ जविके किया उधारा जी० ॥ ६ ॥ पद सेवि ए नरिंदा । जये सागरादि चन्दा ॥ जिन हर्ष केसमंदा । जी० ॥ ७ ॥

॥ काव्य ॥

ज्ञानक्रिया मंगल मंगनरस । संदेह संदोह

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विखंडणस्स ॥ मुत्तीउपादान सुकारणस्स । णमोहिनाणस्स जसोधणस्स ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीँ श्री ज्ञानाय नमः ॥ इति अष्टादश पदे अपूर्व श्रुत ग्रहण रूपा ज्ञान पूजा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

पापताप संहरणहरि । चंदनसम श्रुतसार ॥ तत्वरमण कारण करण । अशरण शरण उदार ॥ १ ॥ एगुनवीस पद में भजो । जिनवर श्रुतनीभक्ति ॥ इनपद वंदनसैंलहें । विमलनाण युतमुक्ति ॥ २ ॥

॥ राग देसी व्रजवासीकानतें मेरी ॥

॥ गागरढोरीरे एचाल ॥

भविजन श्रुतभक्ति चरणशरण उरधरियें रे । ए श्रुतभक्ति सुमंगलमाल ॥ विमलकेवल कमलावरमाल भवि० ॥ १ ॥ सकलद्रव्य गणगुणपर्याय । प्रगटकरण एश्रुत मनभाय भ० अतुल अनंतकिरण समवाय । धरणतरणगण समकहिवाय भ० ॥ २ ॥ एश्रुतकुमति युवति नेंसंग । अगणित रमणतणो करैंभंग भ० ॥ अरथैभाष्यो श्रीजिनराज । सूत्रैंगणधर मुनि सिरताज भ० ॥ ३ ॥ एश्रुत सागर आगम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपार । अनंतअमल गुणरयणाधार ज० ॥ जवजय जलनिधि तरण जिहाज। निसुणमग नजई सकलसमाज ज० ॥ ४ ॥ जवकोटील गें तपकरिजीव । अज्ञानीकरें जितनीसदीव ज० ॥ कर्मनिरजरा तितनीहोय । ज्ञानीके इकक्षणमेंजोय ज० ॥ ५ ॥ एकसहस कोमि उसयकोमि । चतुरतीस कोमि अक्षरजोमि अमसठिलाषरु सातहजार । अमसय असी य प्रमित चित धार ज० ॥ ६ ॥ इतनें वर नसें इकपदहोय । एकजलोकके गणितएजो य ज० ॥ इकपदको परिमाण एजान । इण पद सें आगम परिमाण ज० ॥ ७ ॥ तीन कोमि अरु अमसठि लाख । सहस बैयालि स एपद जाख ज० ॥ इतनेंपदसें अंगइग्यार केरीगणना जविचितधार ज० ॥ ८ ॥ बारम दृष्टि वादकोमान । असंख्यातपदकों पहिचा न ज० ॥ इनको चवदपूरबइकदेश । एनों पा रलह्योहें गणेश ज० ॥ ९ ॥ एहदुवालस अंग उदार । एहनीजइयें नितबलिहार ज० ॥ ए हनी द्रव्यजाव बहुजक्ति । करियेधरिये जि नपदयुक्ति ज० ॥ १० ॥ रत्नचूम नृपसुखमा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

धार । जिनश्रुत भक्तिकरी हितकार भ० ॥ भये जिनहरष परम पददाय । जिनके सुरन रपति गुनगाय भ० ॥ ११ ॥

॥ काव्य ॥

अन्नाणवल्ली वणवारणस्स । सुबोहिबीजं कुरकारणस्स ॥ अणंतसंसुद्ध गुणालयस्स । ण मोदया मंदर सच्छुयस्स ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीँ श्री श्रुताय नमः १९ इति एकोनविंशतिपदे श्रु तपूजा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

प्रावचनी १ अरुधर्मकथी २ । वाद ३ नि मत्ती ४ जाण ॥ तपसी ५ विद्या ६ सिद्ध ७ पुन । कवी ८ एहमुनिभाण ॥ १ ॥ भावती र्थके प्रभुकह्या । प्राभाविक एअष्ट ॥ तीर्थप्र भावन जेकरें । तेफललहें विशिष्ट ॥ २ ॥

॥ राग धन्यासी ॥

तीरथ परभावन जयकारा । जिनसें भव सागर जल तरिये ॥ ते तीरथ गुण धारा । ती० ॥ १ ॥ जिनके गणधर तीरथकहिये । वलि सङ्घ संघ सुखकारा ॥ एह महा तीरथ पहिचानो । बंदिलहो भवपारा ती० ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अमसठि लौकिक तीरथ तजिकरि । नंजलो कोत्तरसारा ॥ द्रव्यन्नाव दोयन्नेद लोकोत्तर । थिरजंगम नयहारा ती० ॥ ३ ॥ पुंमरीक प रमुख पंचतीरथ । चैत्यपंच परकारा ॥ एवर तीरथ थावरकहिये । दीठांदुरित विदारा ती० ४ ॥ श्रीसीमंधर प्रमुख वीसजिन । विहरमा न नवतारा ॥ दोयकोमि केवलि विचरंता । जंगमतीर्थ उदारा ती० ॥ ५ ॥ संघचतुर वि ध जंगमतीरथ । जिनशासन उजियारा ॥ वरअनंत गुणनूषण नूषित । जिनकुं नमत जिनसारा ती० ॥ ६ ॥ ए तीरथ परन्नावन करिये । शुन्न नावन आधारा ॥ शिवकज जलविंशति तमपदकी । जाउं प्रतिदिन बलि हारा ती० ॥ ७ ॥ एतीरथ परन्नावन करतो मेरुप्रन्न अविकारा ॥ पदजिनहरषलहीनें तरि यो । नवअंन्नोधि अपारा ती० ॥ ८ ॥

॥ काव्य ॥

महामहानंदपदप्रदाय । जिनश्रुतज्ञानपयो नदाय ॥ जगत्रया धीश्वरवंदिताय । नमोस्तु तीर्थाय सुन्नंददाय ॥ १ ॥ ॐह्रींश्रीतीर्थायनमः इतिविंशतितमपदेतीर्थप्रन्नावनापूजा ॥ २०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ सुणि चतुरसुजाण परनारीसुं प्रीति ॥
॥ कबहुंन कीजिये एचालमे ॥

चितहरषधरी । अनुभवरंगें वीसपरमपद वंदिये ॥ शिव रमणिबरी । केवल सखीयस हायकरी चिरनंदिये ॥ आ० ॥ एवीसचरण अशरणशरणा । चिरसंचित दुरित तिमिरह रणा । नितचित ए पदसमरण धरणा चि० १ एपदसमरण जिन चितधरिया । तरिया तर सें तरें भवदरिया । सदनंत भविकसहु भय हरिया चि० ॥ २ ॥ एपद गुणसागर मनुहा रा । वरणनतरणीये बहुहारा । इंद्रादिकसु रनर नलह्योपारा चि० ॥ ३ ॥ एपद अतिशय महिमाधारा । अमृत पद्द कमला भरतारा ॥ जिनचंद्रानंद घन पदकारा चि० ॥ ४ ॥ जि नहरष सुरिंदके शिव करणा । चंद्रामल गुण विंशतिचरणा । हइज्यो प्रभुअरजए अवधर णा ॥ ५ ॥ इति श्रीसमस्तविंशतिपद स्तुतिः ॥

॥ कलश ॥

ए बीसथानक भुवनबंदन अघ निकंदन जानिये विबुधेंद्रचंद्र नरेंद्र बंदित पद जिनें द्र बखानिये ॥ ए बीसपद भवजलधि तारन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तरन गुन पहिचानिये । इम जानि नविजन कुशलकारन बीसपद उर आनिये ॥ १ ॥ इह वरस चंद्रदिनेंद्र हरिमुख बिधिनयन बितिमिरधरू । तिह मासनादव धवलदल तिथि पंचमी रविवासरू ॥ बंगालजनपद जिहां बिराजत शिखर तीरथ गिरिवरू । सक्ष नगरशोनि अजीम गंजपुर द्वितीय बालूचर पुरू ॥ २ ॥ खरतरगणेशर विजितसुरगुरु विमल गुणगरिमाधरा । गुणनवन नविजन नलिन कानन नितविकासन दिनकरा ॥ मुनि चंद्र श्रीजिनलानसूरिंद सुगुरु महियल युगवरा । सकलेंड बंद्य जिनेंडशासनमंफना नितहितधरा ॥ ३ ॥ तसुपट्टउज्जल अचलगन वर उदयगिरि बासैरकरा ॥ योगींद्र वृंद नरेंद्र बंदितचरणपंकज गणधरा ॥ आचार पंचबतीसगुणधर सकल आगमसागरा । युग प्रवर श्रीजिनचंदसूरी गुरु सकलसूरीसरा ॥ ४ ॥ तसु चरण कमलज युगलसेवन अहनिशि मधुकरताधरी । पुन सुगुरुपद अरविंद युग नीं कृपा नित चित आदरी ॥ गणधार श्री जिनहरषसूरी हरषधर घनअघहरी या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बीसपदकी बिबिध पूजन बिधितणीं रचनां करी ॥ ५ ॥ इतिश्री बिंशतिस्थानकस्तुति :

॥ जियाचतुरसुजाणनवपदके गुणगायरे ॥
॥ इस चालमें आरती ॥

पिया बिंशतिथान मंगलआरति गायरे सुमतिप्रिया कहैं चेतनपतिकों निसुण बचन मनलायरे पि० ॥ १ ॥ यदि निजगुण परिणति तुमचहिये । तिणको एह उपायरे पि० अरिहंत सिद्ध आचारज पाठक साधु सकल समु दायरे पि० ॥ २ ॥ इत्यादिक बिंशति पद समरण भवभय हरण विधायिरे । एह आरती अरतिवारती । अनुपमसुर सुखदायरे पि० ॥ ३ ॥ जैसेंभगतैं करय आरती । सकलसुरा सुररायरे ॥ तैसेंभवितुमे करोआरती एपदगुण चितलायरे पि० ॥ ४ ॥ पंचप्रदीपसें करयआरती । जेनितचित उलसायरे ॥ तेलहीपंच चिदानंद घनता । अचलअमर पदपायरे पि० ॥ ५ ॥ पंच प्रदीप अखंडित ज्योतैं । दुर्मति तिमिर विलायरे ॥ एहआरती तुरत तारती । भवजल निपतित धायरे पि० ॥ ६ ॥ पदजिन हरष तणी एकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णी । मनहरणी कहिवायरे ॥ चंद्रविमलशि वसिधिनिधि धरणी । वरणीकिण विधजाय रे पि० ॥ ७ ॥ इतिविंशति स्थानकारात्रिका ॥ ६ ॥ अथ चौवीसजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

प्रणमी श्रीपारस विमल । चरण कमल सुखदाय ॥ ऋषिमंफल पूजन रचुं । बरविध जूचितलाय ॥ १ ॥ नंदीश्वर मंदरगिरैं । शाश्व त जिनमहाराज ॥ अरचैं अष्टविध पूजसुं ॥ जैसे सक्रसुरराज ॥ २ ॥ तिम चित जिनपति गुणधरी । श्रावक समकितधार ॥ विरचैं जि न चौवीसकी । अष्टविध पूज उदार ॥ ३ ॥

॥ गाथा ॥

सलिल १ सुचंदन २ कुसुमत्तर ३ । दीवगकरणंच ४ धूवदाणंच ५ ॥ बर अरकत ६ नेविज्जं ७ । सुत्र फल पूजाय अठविहा ॥ १ ॥ अष्टविध पूजा करणं सुणिये सूत्रमकार ॥ जे त्रविविरचैं प्र तुतणी । ते पावें त्रवपार ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

प्रथम जिनेश्वर तिम प्रथम । योगीश्वर नरराय ॥ प्रथम त्रये युगआदिमें । सकलजीव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुखदाय ॥ १ ॥

॥ रागदेसाख पूर्बमुखशावनं एचाल ॥

विमलगिरि उदयगिरिराज सिखरोपरे। तरुणतरुतेज दीपतदिणंदा ॥ युगलधूमवार करधरम उद्योतकिय। विमलइक्ष्वाकु कुल जलधिचंदा ॥ १ ॥ मातमरुदेवि वरउदरद रि हरिवरा। सकलनृपमुकटमणि नाभिनंदा अखिलजगनायका। सुगतिसुखदायका विम लवरनाणगुण मणिसमंदा ॥ २ ॥ वृषभलांछ नधरा। सकलभवभयहरा ॥ भ्रमरवरगीतगु णकुशलकंदा। गहिर संसारसागरतरणसमध रा। नमतशिवचंदप्रभुचरणवंदा ॥ ३ ॥

॥ काव्य ॥

सलिल१चंदन२पुष्प३फल ४व्रजै। सुविम लाक्षत५दीप६सुधूपकै७ विविधनव्यमधुप्रव राऩकै८। र्जिनममीभिरहंवसुभिर्यजे॥ १ ॥ ॐ ह्रींश्रीपरमात्मनेअनंतानंतज्ञानशक्तये॥ जन्म जरामृत्युनिवारणाय॥ श्रीमद्दषभजिनेंद्राय॥ जलं चंदनं पूष्पं धूपं दीपंअक्षतं नैवेद्यं फलं यजामहेस्वाहा॥ इतिश्रीरिषभजिनपूजा ॥१॥

॥ दोहा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जयजिणंददिणइंदसम । लखिन्नविकजबिकसात ॥ परमानंदसुकंदजल । विजयामातसुजात ॥ १ ॥

॥ रागआसावरी हो दिलबागमें ॥

॥ प्यारे जिनजी ॥ एचाल

एक अरज अवधारिये । अजितजिन ए० अजितजिनेसर जगअलवेसर । कुरम निजर निहारिये अ० ॥ १ ॥ चरमसिंधु नवनय जलनिपतित चरणपतित मोहे तारिये अ० ॥ २ ॥ परमानंदघन शिव बनितानन । कजमधुपान सुकारिये अ० ॥ ३ ॥ चिर संचित घनदुरित तिमिर हर । तुम जिनन्नये तिमिरारिये अ० ॥ ४ ॥ कहैं शिवचंद अजित प्रनु मेरे एह अरज न विशारिये अ० ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीँ परमप० अनं०जन्म० श्रीम० ज० चं०स्वाहा ॥ इति अजितजिन पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

जय जितारि संनव सदा । श्रीसंनवजिनराज ॥ सकललोक जिण जीतियो । जीतोमोह समाज ॥१॥ जैनाकर गुणपूर । सेवो तेजसनूर नक्तिनवपूरण उरधार । मुक्तिपुरीपथसार ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ रागवेलाउलसबाबागंधवटी०सारए० ॥

अपरमित वर शिखरसागरधार संजवकारए । जिनरायसंजव पाय बंदो लहो जवजल पारए ॥ वल जलधिजात सुजातकुंजरकुंजजंजन जानिये । तसुजनकनाम समाननामा । जये जिन उर आनिये ॥ १ ॥ जसु चरण पंकज मधुर मधुरस पान लयलागीरह्या । मिलकर सुरासुर खचर व्यंतर जमर निलचितऊमह्या ॥ जसुचरण कमलेंप्लवगलांछनकनक सुवरणकायए । सकलजुवननायक सुमतिदायक । जननि सेना जायए ॥ २ ॥ जसुमधुरबाणी जगबखाणी । तीस सरगुण धारिणी ॥ संसार सागर जयजराकर । पतित पारउतारिणी ॥ स्याद्वाद पक्ष कुठारधारा । कुमतिमद तरुदारिणी ॥ प्रजु बाणि नित शिवचंदगणिके । जवो मंगल कारिणी ॥ ३ ॥ ॐह्रींश्रीं परम० अनं०ज्ञान० श्रीमत्संजव जिनें० ॥ जलं०स्वाहा ॥ इतितृती यसंजव पूजा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

श्रीचतुर्थ जिनवर सदा । पूजो जविचित लाय ॥ जगति युवति संकटहरण । करण ति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न सुध थाय ॥ १ ॥

॥ कुंदकिरणशशिउजलोरे एचाल ॥

संवरनंदन जिनवरूरे बाला। अजिनंदन हि त कामीरे ॥ जगदजिनंदन जयकरूरे बा० ॥ दुरित निकंदन स्वामीरे ॥ १ ॥ लोका लोक प्रकासता बा० ॥ करता अविचल धामीरे अ व्याबाध अरूपितारे बा० ॥ विमल चिदानंद रामी रे ॥ २ ॥ वंछित पूरण सुरमणी रे बा० एप्रभु अंतरजामी रे। अैसे प्रभुमहाराजकुं रे बा०। सिवचंद नमेंसिरनामी रे ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं पर०अनं० अजिनंदनजिनेंद्राय जलं० स्वाहा

॥ दोहा ॥

पंचमजिननायकनमूं। पंचम गतिदातार पंचनाणधरविमलकज। बनविकसनदिनकार

॥ कहरवा बंसीतेरी बैरणबाजै एचाल ॥

सुधनावचितथिरधरकेरे। पूजोसुमतिजि णंद ॥ जिनभक्ति करण रसीला। लहें परम आनंद सु० ॥ १ ॥ जिनराज सुमति समंदा करे कुमतिनिकंद ॥ प्रभुनाचरण अरविंदा। बंदै असुर सूरिंद सु० ॥ २ ॥ कनकाभ तनु दुतिसोहें। प्रभुसुमंगालानंद ॥ करुणोपशम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रसन्नरिया । बंदे नित सिवचंद सु० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ परम० अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत् सुमति जिनेंद्राय जलं० नैवे० यजामहेस्वाहा ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

हिवषष्ठमजिनवरतणी । पूजनकरिऊं उदार ॥ नविचित नक्ति धरीकरी । सुखसंपतिकरतार ॥ १ ॥

॥ रागसारंग वावनचंदनघसिकुमकुमा ॥

हांहोरेबाला पदमप्रनू मुखचंद्रमा । नित सकललोक सुखदायए । हांहोरे बाला ॥ हरिसुरअसुरचकोरझा । नित निरखरह्या ललचायए । हांहोरेबाला । जिनमुख बचनअमृततणो । जे श्रवणकरें नविपानए । हांहोरे बाला ॥ ते अजरामरता लहै । हरिगण करें जसुगुणगान ए । हांहो० घर नृप कुलनन्दिनमणी । प्रनु मातसुसीमा नंदए हां० ॥ प्रनु दरसणते प्रति दिनें । झयज्यो शिवचंद्र आनंद ए ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ परम० अनं० ज्ञा० ज० श्रीमत्यदमप्रन जिनें० य जलं० नैवे० यजामहेस्वाहा ॥ इति छठी पूजा संपूर्ण ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीसुपार्श्व सुरतरूसमो । कामित पूरण काज ॥ ज्ञो ज्ञवियण पूजो सदा । बसुविध पूजसमाज ॥ १ ॥

॥ राग तेरीपूजावणीहैं रसमें एचाल ॥

मेरी लगी लगन जिनवरसें मे० ॥ जैसें चंदचकोर ज्ञमरकी । केतकिकमलमधुरसें मे० एहसुपारस ज्ञए प्रज्ञुपारस । गुणगणसमरण फरसें मे० । चेतन लोहपणो परिहरके । क्ष्यलैकंचन सरिसें मे० ॥ २ ॥ एप्रज्ञु करुणा करकुं धरिले । ज्ञर जिमकमल ज्ञमरसें मे० ॥ जेज्ञवि जिनपदलगनधरें तसु ॥ नहिज्ञये म रन ऋसुरसें ॥ ३ ॥ माल पृथवी तनुजात त नुद्युति । समज्ञुज्ञकंचनसारिसें मे० ॥ कहैं सिव चंद चित नितमेरो रहो प्रज्ञुपदलय ज्ञरसें मे० ॐह्रीं परम० ज्ञनं० ज० सुपार्श्वजिनें० जलं० नैवे० यजामहेस्वाहा ॥ इति सातमीपूजा ॥ ७

॥ दोहा ॥

अष्टमजिनपदपूजिये। बिबिधकष्टहरतार अष्टसिद्धनवनिध लहै । जिनपूजाकरतार ॥

॥ रागमेघबरसेज्ञरीपुष्पबाइलकरीएचाल ॥

परमपदपूर्बगिरिराज परिउदयलहि । बि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जितपरचंद्र दिनकरअनंता ॥ चंद्रप्रन्नुचंद्रिका बिमलकेवलकला । कलित शोन्नितसदाजिन महंता प० ॥ १ ॥ कुमतिमत तिमिरन्नरहरि यपुनन्नूरिन्नवि । कुमुद सुखकरिय गुणरयणद रिया ॥ गहिरन्नवसिंधु तारणतरणतरणिगुण धारि न्नवितारि जिनराज तरिया प० ॥ २ ॥ राखियेआज मोहेलाजजिनराजप्रन्नुकरणसुख जिनचरण सरणपरिया । परम शिवचंद्र पद पद्मन्नमकरंदरस ॥ पाननितकरण ततपरन्नरी या प० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं परम० अनं० श्रीम चंद्र प्रन्नजिनें० जलं० नैवे०यजामहेस्वाहा इतिअ ष्टम जिनपूजा ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

सुबिध२समरणथकी । कामितफलप्रकटा य ॥ अतीगहनसंसारवन । बकुलअटनमिट जाय ॥ १ ॥

॥ राग चंपक केतकी मालती एचाल ॥

सुबिध चरण कजबांदियेए अइयो बं० । नंदियेअतिचिरकाल शिवतरवारनिकंदिये । बिघनकंदततकाल अइ० ॥ १ ॥ आजजनमस फलोन्नयो अ०ए दीठोप्रन्नुदीदार। तनमनद्रुग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बिकसितन्नये ॥ जिमकजलखिदिनकार ॥२॥ अ
मृतजलधरबरसियो अ० ब०ए । न्नविउरखे
त्रमझार । दर्ज्ञनसुरतरु ऊगियो अ०ए ज्ञिव
फलनोंदातार ॥ ३ ॥ नँह्रीँपर० अ्रनं०ज० श्रीम
त्सुबिधिजिनेंद्राय ज० नैवे० यजामहेस्वाहा
९ ॥ इति सुविधिजिन पूजा ॥

॥ दोहा ॥

मुझतन मन ज्ञीतलकरो । श्रीज्ञीतलजिन
राय ॥ तुमसमरण जलधारसें । अंतरतपतपु
लाय ॥ १ ॥

॥ दादाकुज्ञलसूरिंदएचालमें ॥ घाटो ॥

मेरेदीनदयाल । तुमन्नयेसकललोक प्रति
पाल मे० ॥ सुणज्ञीतलजिनवरमहाराज । च
रणसरणधस्यो प्रन्नुनोंआज ॥ ननमूंसझकारी
देव । करिस्यूंचरणकमलनीसेव मे० ॥ १ ॥ जैसे
सुरमणिकरतलपाय । कुणलेकाचसकलउलसा
य ॥ तुमसमसुरवर अवरनकोय । हेर २ जग
निरख्योजोय मे० ॥ २ ॥ प्रन्नुदरसण जलध
रघनघोर । लखीयनिरतकरें न्नविजनमोर ॥
पदज्ञिवचंद बिमलन्नरतार । * ज्ञिवबनिता
घरेंअतिसुखकार मे० ॥ ३ ॥ नँह्रीँपरमअ्र०नं०

*चरज एह करधरिये सार ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मच्छीतलजिनें० ज० नै० य०स्वाहा॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

श्रीश्रेयांसजिनेंदपद। नददुति सलिलाधार ॥ जेनेत्रेंमज्जनकरें। तेसुचिइक्कंबिधुतार॥

॥ राग सोहमसुरपतिवृषभरूपकरएचाल॥

श्रीश्रेयांसजिनेसरसाहिब । इंद्रियसदन सनंदहे । जसुबसुबिधपूजनसेअरचो ॥ उरधरिपरमानंद हे श्री० ॥ १ ॥ ए समकित धर श्रावककरणी । हरणी भवमनरंगहे ॥ बिजय देवजिनप्रतिमापूजी । जीवाभिगमउवंगहे ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूरियाभजिनपूजनकरियो । रायपसेणीउवंगहे । ज्ञाताअंगेंद्रुपदिश्राविका ॥ पूज्याजिनचितचंगहै । जेनिन्हवकुमतीजिन पूजन॥उत्थापेंतेहअनंतहे काललगेंभमसीभव बनमें ॥ मंदमतीभयभ्रांतहे ॥ २ ॥ बिभनुमाततनुजात बिस्नुभूप। बिमलकुलांबरहंसहे ॥ सकलपुरंदरअमरअसुरगण । शिरु वरिप्रभुअवतंसहे ॥ इणसुरवरनीपरभविश्रावकजेपूजेंजिनउछरंगहे ॥ ते शिवचंद परमपद लहिस्येंनिश्चयकरि भवभंगहे श्री० ॥ ३ ॥ ॐह्रींपर० अनं०ज० श्रेयांस जिनें० जलं० नैवे० यजा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महेस्वाहा ॥ इति एकादशमजिन पूजा ॥ ११

॥ दोहा ॥

हिवबारमजिनवरतणी । पूजनकरियेसार भावभक्तियुत भविसदा । द्रव्यभक्ति चितधार

॥ राग सबञरति०मुदारधूपं एचाल ॥

सकल जगजनकरतबंदन । जयानंदन स्वामि रे ज० । दुरितताप निकंदचंदन । परम शिवपदगामि रे स० ॥ १ ॥ नृपतिवर बसुपूज्यनृपकुल । विपिन नंदनजातरे देवा वि० सु हरिचंदन नंदनंदन । नंदमदकियधातरे ॥ स० ॥ २ ॥ बसुपूज्यनंद जिनेंद्रपूजो । सकलजिन महाराजरे ॥ करतनुति शिवचंदप्रभु ए । निखिल सुरशिरताजरे दे० ॥ ३ ॥ ॐह्रीँ पर० अनं० ज० वासुपूज्यजिनें० ज० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ इति बारमजिनपूजा ॥ १२

॥ दोहा ॥

बिमल बिमलजिन करमुझे । मलिनकरम करि दूर ॥ तेरमप्रभु रमिये सदा । मुझ उर मझि गुणपूर ॥ १ ॥

॥ सिधचक्र पदबंदोरे भविका एचाल ॥

विमलचरणकजबंदोरे । सूरीजनवि०बंदी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नेंआनंदोरे ॥ जसुगणधरमुनिवरगण मधुकर। सेवतपदअरविंदोरे स्यामाउदरसुगति मुगता फलकृतवरमानृपनंदोरे सू० ॥ १ ॥ सकजगमं फलबिमलकरणकुं निजसासन नन्नबंदो। उदय नयोन्नविकुमुदबिकसवा। बरगुणरयणसमंदो रे ॥ २ ॥ यदिन्नवबंदिहरण न्नविचाहो। प्रन्नु बंदीचिरनंदो। बिमल चिदानंद घन मयरू पी। नितवंदित शिवचंदो रे वि० ॥ ३ ॥ऊँह्रीं परम०अ०ज०श्रीबिमलजिनें० जलं० स्वा०

॥ दोहा ॥

हिवचवदमजिनपूजतां। हरिये बिषयवि कार ॥ न्नी न्नवियण सुणिये सदा। एप्रन्नुआ रणाधार ॥ १ ॥

॥ पंचवरणीअंगीरची एचाल ॥

पूजकरणीप्रन्नुनीदुरितनिवारी। अनंततर णिहिमकिरणतरूणतर। किरण निकरजीताहै न्नारी। अनंतनाण वरदरन्नाण तेजें। प्रन्नुसुय सोदर अवतारी पू० ॥ १ ॥ लोकालोक अ नंतद्रव्यगुण। पर्यंयप्रगट करणहारि ॥ तातै अन्वययुतजिन धरियो। अनंतनामअतिम नुहारी पू० ॥ २ ॥ सिहसेननृपनन्दन बंदन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करतइंद्रचंद्रसुखकारी । सादिञ्चनंत ञंगथि
तिधरियो ॥ पदशिवचंद्र बिजयधारी पू० ॥
ॐह्रीँ परम०अनं० ज० श्रीम दनंतजिनेंद्राय
ज०नैवे०स्वाहा इतिञ्चनंतजिनपूजा ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

भानुभूपकुलभानुकर । धनरमजिनसुखका
र ॥ सोभित सकजग विपिन जन । हरख
फलदजलधार ॥ १ ॥

॥ धीरसमीरेजमुनातीरेवसतिबनेवनमाली ॥

धरमजिनेसर धरमधुरंधर । जगवंधव जग
बालामें वारीजाउं ॥ सुव्रतानंदनपापनिकंदन
प्रभुभएदीनदयालामें वारीजाउं ध० । प्रभुधी
रजगुणनिरखञ्चमरगिरि । लजिलीनो ञ्चचला
धारा में ॥ १ ॥ जिनगंभीरताचरमसिंधुलखि
कियलोकांत बिहारामें ध० ॥ एजिनचंद्रचर
णञ्चरचनतें । लहिजिनपतिञ्चवतारामें ॥ २
करमवैरिदलकरि भविलहस्यो पदशिवचंद्रउ
दारा में ॐह्रीँ परम०ञ्चनं०ज०श्रीधर्मजिनेंद्रा
य ज०स्वाहा ॥ १५ ॥ इति धर्मजिनपूजा ॥

॥ दोहा ॥

ञ्चचिराउयरेञ्चवतरी । शांतिकरीसुखका

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र ॥ मारि विकार मिटायकरि । नामधस्यो शांतिसार ॥ १ ॥

॥ रागभाव धरिधन्य दिनआजसफलोगिणुं ॥

शांतिजिनचंद्र निजचरणकजशरणगत तरणिगुणधारि भववारितारी कुमतिजनविपिनजनिकुमतघन ब्रततितत निशितधारतरबारवारी शांति० ॥ एकभविपदउभयचक्रधरतीर्थकरधारियावारियाविघनसारा सकलमदमारियाविमल गुणधारिया सारियाभक्तवांछित अपारा शां० हरिणलांछनधराकरणसुवरणकरासुरवराहितधरागतबिकारा मोहभटधरणिधरगणहरणबज्रधरकुमुद शिवचंद्रपदरजनिकाराशां० ॥३॥ ॐह्रींपरम० अनं० ज० श्रीशांतिजिनेंद्राय जलं०चं० यजामहेस्वाहा १६ ॥

॥ दोहा ॥

सतरम जिनवर दीवसम । मकिभवसागरजाण ॥ भक्तियुक्ति नित पूजिये । लहिये अमलविनाण ॥ १ ॥

॥ राग अरिहंतपद नितध्याइये एचाल ॥

कुंथुजिणंद गुणगाइये । मनबंछितफलपाइये रे ॥ प्रभु समरण लयल्याइये । भविभव

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तजिशिवजाइये रे कुं० ॥ १ ॥ नवजलगतनि
जआतमा । बारी करुणाउरधरिताइये रे चर
णकरणउपयोगिता । ग्रहणकरणकुंध्याइये रे
कुं० ॥ २ ॥ एप्रनुदरशणजीवनें । अनुनवर
सनोदाई रे ॥ वरशिवचंद बिमलबधें । दिन
दिनसोनसवाई रे कुं० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ परम० श्र०
श्रीकुंथुजिनें० जलं० नै० स्वाहा ॥ १७ ॥ इति

॥ दोहा ॥

जिनअठारमोध्याइये । नवियण चित्तम
फार ॥ करण तीनइक करिमुदा । प्रतिदिन
जयजयकार ॥ १ ॥

॥ राग संगलागोही श्रावे० एचाल ॥

निजबिमल नक्तिसें अरजिन सुं नितरमि
ये रे ॥ जिनगुण निजगुणतुल्यकरणकुं । चंच
लचित्तहयदमिये रे नि० ॥ १ ॥ सुमतिसुवति
संगतिउरधरिके । कुमतिनारसंगगमिये रे ॥
अनुनव अमृतपान करणसें । विषयविकृति
विषवमियें रे नि० ॥ २ ॥ जिनवरसंगरमण
दव अनिलें । पंकसघनबन धमियें रे ॥ कहें
शिवचंद जिनेंद्र रमणसे । नवबनमें नहिन
मिये रे नि० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ परम० श्र० श्रीम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्थरजिनें० जलं० यजामहेस्वाहा ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

उगणीसमजिन चरणकज । नमरहोयलय लाय ॥ सेवे तसुनवनमरता । अगणिततुरत बिलाय ॥ १ ॥

मल्लिजिणंदउपगारी रे वाला हांहोरेवाला वारीजाउं वारहजारी रे वाला म० ॥ कुंनन रेसर गगनांगण में । सहसकिरण अवतारी रेवा० ॥ म० ॥ १ ॥ पूरबनव खटमित्र नरिंद पति । बोधसिंधुनवतारी ॥ वेदत्रई विरही तनुधास्यो । सकलसंघसुखकारी रेवा० म० ॥ २ ॥ सकलकुशलहरिचंदनतरुवर । नंदनवन अनुकारी ॥ संघचतुर्बिध नूरिखचरगण प्रण तचंदमनुहारी रे वा० म० ॥ ३ ॥ नुँजी पर म० अनं० श्रीमल्लिजिनेंद्राय जलं० यजाम हेस्वाहा ॥ इति मल्लिजिनपूजा ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

पद्मोदरवरपद्मनंद गतपरपद्म समान ॥ बिंशातितमप्रनुपूजिये । केवललच्छिनिधान ॥

॥ नविन्नक्तिधरीनवपदनव० एचाल ॥

सुणसुव्रतजिनेंद्र सुनिजरधर मुरुपर वर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दरसणदीजिये। प्रभुदरसप्रीतनिरूपाधिकता करियेलहिये शिवसाधकता। तबतुरतमिटेंशि वबाधकता सुण० ॥ १ ॥ अमृत मेंसाध्यपणों बिलसें प्रभुदरसणसाधनताउलसें तद मुझनें साधकतामिलसें सु० ॥ २ ॥ भिन्नाधिकरणता यदिबिघटै। एकाधिकरणतायदिसुघटें ॥ तद मुझशिवसाधकताप्रगटें सु० ॥ ३ ॥ एकाधि करणता मुझकरिये। भिन्नाधि करणतापरिह रिये ॥ शिवचंदबिमलपदतदबरिये। सु० ॥ ४ ॥ ॐह्रीँ परम० अनं० मुनिसुव्रत जिनें० जलं० चंद० यजामहेस्वाहा ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

अंतरबैरीमारिया। तबलहियोनमिनाम॥
भवियणएप्रभुपूजसें। सरियें बंछितकाम ॥१॥

श्रीनमिजिनवरचरणकमलमें। नयनभमरयुग धरिये रे ॥ तिणकियगुण मकरंदपानसें। चे तनमदमत करिये रे श्री० ॥ १ ॥ एहचरण कजअहनिशिविकसै। परकजनिशिकुमलावें रे ॥ ए न बलेंबलि तुहिन अनलसै अपरक मल बलजावें रे श्री० ॥ २ ॥ एपदकजगुन मधुरस पीवत। जीव अमरता पावें रे वा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भ्रवर कमल रसलीनो मधुकर ॥ कजगतग लगलजावे रे वा० । परकज निजगुण लच्छि पात्र है ॥ पदकज संपद देवे रे । ताते पद शिवचंद जिणंद के ॥ अहनिशि सुरनर सेवे रे श्री० ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीँ परम० अनं० नमिजि नें० जलं० नैवे० यजामहे स्वाहा ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

बावीसमजिन जगगुरू । ब्रम्हचारि बिख्यात इणबंदन चंदन रसैं । पापताप मिटजात १

॥ राग गाबलूहै जिनमन रंगसुं ०एचाल॥

नेमि जिणंद उर धारी रे बाला । विषय कषाय निबारिये रे बाला । बारिये रे हां रे बाला ॥ ए जिननें न बिसारिये रे ॥ १ ॥ जलधर जिम प्रभु गरजता रे बाला । देशना अमृत बरसता रे बाला दे० बरसता हां रे० भविक मोर सुण उलसता रे बाला ॥ २ ॥ समवसरण गिरि पर रह्या रे बाला । भामंड लचपलावह्यारेवा० ॥ सुरनर चातकऊमह्या रे ॥ ३ ॥ बोधबीज उपजावियो रे बाला । भविउरक्षेत्र बधावियो रे बाला भ०ब० भवि क सुगति फलपावियो रे ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीँपरम०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

श्रीमन्नेमिजिनेंद्रायजलं०नैवे०स्वाहा॥ २२ ॥

॥ दोहा ॥

अश्वसेननंदनसदा । वामोदरखनिहीर ॥
लोकशिखरसोंप्रन्नू । बिजितकरमबफबीर १

॥ बाजै तेरा बिछुवा रे बा० एचाल ॥

पासजिणंदा प्रन्नुमेरेमनबसिया मे० ॥ शि वकमलानन कमलविमलकल । तरमकरंदपा नअतिहिसरसिया पा० ॥ १ ॥ बामानंदनमोह निमूरत । सकल लोक जनमन किय बसिया पा० ॥ परमजोति मुखचंद विलोकित । सु र नर किंनर चकोर हरसिया ॥ २ ॥ अंजन गिरि तनुदुति जिनजलधर देशन अमृतधार बरसिया पा० ॥ २ ॥ पियकरि न्नवि चिर काल तरसिया । मुगति युवति तनु तुरत फरसिया पा० ॥ २ ॥ कुमुद सुपद शिव चंद जिणंद नी ॥ वारी जाउं मन मेरो अ तिहिउलसिया पा० ॥ ३ ॥ उँह्रीं परम०अ० ज० श्रीमत्पार्श्वनाथाय ज० यजामहे स्वाहा

॥ दोहा ॥

बरइखाकुकुलकेतुसम। त्रिसलोदरअवतार
एप्रन्नुनीनितकीजिये । बिबिधन्नक्ति सुखकार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ रागतेजतरणिमुखराजेंप्रभूजीको एचाल ॥

चरमवीरजिनराया । हां रेजिनराया मेरे प्रभुचरमवीर जिन० सिद्धा रथकुलमंदिरधज सम । त्रिसलाजननी जाया । निरुपम सुंदर प्रभुदरणतें । सकललोकसुखपाया मे० ॥ १ ॥ वामचरणअंगुष्टफरसतें । सुरगिरिवर कंपाया इंद्रभूतिगणधर मुनिजन । सुरपति बंदितपा या मे० ॥ २ ॥ वरतमानसाशनसुखदाया ॥ चिदानंदघनकाया । चंद्रकिरण गणबिमल रु चिरकर । शिवचंदगणि गुणगाया हां० ॥ ३ ॥ वरसनंद मुनिनाग धरणमित । हितियाश्विन मनभाया । धवलपक्ष पंचमितिथिशानियुत ॥ पुरजयनगरसुहाया मे० ॥ ४ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरिसूरीश्वर । वरखरतरगछराया । क्षेमकि र्तिशाषागणिभूषण रूपचंदभवझाया मे० ५ महापूर्वजसु भूरिनरेस्वर । वरखरतर गछरा या । तासुशीसबाचक पुन्यशीलगणि तसुशी ष्यनामधराया मे० ॥ ६ ॥ समयसुंदरअनुग्रहि ऋषिमंझल । जिनकीसोभासवाया । पूजरची पाठकशिवचंदनें । आनंदसंघबधाया मे० ७

॥ इति रिषिमंझल पूजा संपूर्णा ॥

मुख

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ नंदीश्वर जीकी पूजा ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्री सुखकरण घन। विघनहरण जयकार ॥ अश्वसेन नंदन चरण। शरण रुचिर उरधार ॥ १ ॥

जिनवाणी समरणकरी। सकलजीव सुखकार ॥ कहिस्युं नंदीश्वर जगत। पति पूजन विसतार ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

अखिलद्वीपसिरताज। अष्टम नंदीश्वरद्वीपछाजै ॥ वलयाकार जगत सुख कारी। निरूपम अतिशय गुण मणिधारी ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

मणिधारि बावन विमल गिरिवर। जैनमंदिर युतसदा ॥ शुभभक्ति धर निरजरपुरंदर निरषिपामें सम्मदा। इककोडि शततिण सठिकोडिय चोरासीलख योजना। इणद्वीपनो चक्रवाल विष्कंभ। मान जाणो भोजना

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥

इण द्वीपें पूरव दक्षिणआसा । पश्चिम उत्तर दिशा चउपासा ॥ चतुरंजन गिरिसुख माधारी । चारणसुर विद्याधर चारी ॥ २ ॥

॥ उल्लालो ॥

धरचारि निजदुति नरविनिर्जित सजल जलधर घनघटा । वलिचतुर शीति सहस्र योजन तुंगता धरता स्फुटा ॥ इणप्रवर अंजन सिखरि सिखरे शाश्वता जिनमंदिरा ॥ चउसंख्य सुंदर कनककलसो । पमधरा जग सुखकरा ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥

इकइक अंजनगिरि चउपासा । चउपुक्ख रिणी प्रगट प्रकासा ॥ विस्तर इगलख योज नसारा । तासुमांहि इक इक्कउदारा ॥ ३ ॥

॥ उल्लालो ॥

इकइक उदारा सहस्र चउसठि योजनोन्न तता कुला ॥ जिनराज मंदिर मंडिता सज्ञ चंद्र किरण समुज्वला । दधिमुख धराधरदी र्घिका प्रतिविदिशि दोयदोय रतिकरा । दश सहस्रयोजन उन्नताधर उदय करुणा रुणवरा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढाल ॥

जिनमंदिर युत रतिकर विमला । पूरब दिशितेरस सकुअचला ॥ यह रीतें परत्रिणदिशिजाणो । इम बावन्नगिरी इवखाणो ॥ ४ ॥

॥ उल्लालो ॥

इवखाणशतयोजनसुदीर्घा बहुत्तरयोजन प्रमा । अति उन्नता पंचास योजन विस्तरा जिनगृह समा ॥ शतएक अष्टोत्तर प्रमाणा पंचशत धनुरून्नता । इणरीति प्रति प्राशाद प्रतिमा जाणियें बिंबशाश्वता ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शषभानन चंद्रानना । वारिषेण वधमान ॥ एजाणो शाश्वत सकल । जिनप्रतिमा अभिधान ॥ ३ ॥

सुरगिरि शिखरे जिनतणों । जिन न्हवणोत्सव सार ॥ करिके नंदीश्वर जई । हरिगण विबुध उदार ॥ ४ ॥

अनुभव रसयुत भक्तिधर । हृदय सरोज मझार ॥ इणपरि शाश्वत जिनतणों । करैं पूजअति सार ॥ ५ ॥

पूरबदिशि अंजनगिरी । मंदिरगत जि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नराज ॥ श्रष्टविधि पूजायें सदा । श्रर
चीजै हित काज ॥ ६ ॥
प्रथम पूज जिन राजनी । विमल जलैं
जर पूर ॥ करियें न्हवण सदाजवी । हो
य सकल दुख दूर ॥ ७ ॥
॥ कुंदकिरण शशिऊजलोजी देवा एचाल ॥
मिलिकरि सकल सुरासुरा रेवाला । नि
जसेवक सुर पासें रे ॥ क्षीर जलधि मागध
थकी रे वाला । सिंधुनदी गंगासें रे ॥ १ ॥
वलि वरदामसुतीर्थसें रेवा० । विमल सलि
लश्रणावें रे ॥ मणिकनकादि कलश जरी रे
वाला । अषधि कुसुम मिलावें रे ॥ २ ॥ इं
द्रादिक सज्ञसुरगणा रेवा० । शाश्वत जिन
न्हवरावें रे ॥ विमल सलिल धाराकरी रेवा
कुमति तापनें गमावें रे ॥ ३ ॥ इणपरि जे
जगतेंजवी रेवाला । न्हवणकरै जिनश्रंगें रे
तेसुरवर सुख श्रनुजवी रे वा० । लहै शिव
पद मनरंगें रे ॥ ४ ॥ द्रव्यपूज करि सुरवरा
रेवा० । करै जिणंद गुणगानारे ॥ कुशल कु
मुद विकसायवारे वाला । प्रजु शिवचंद स
माना रे ॥ ५ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ काव्य ॥

दुरितदाव घनातप वारणं । सकलनाव विकासनकारणं ॥ जगतिनव्य नवोदधि तारणं । जिनगणं स्नपयाम्य मलै र्जलैः ॥ १ ॥ नुँह्रीँ श्रीअर्हं परमात्मन्यो ऽनंतानंतज्ञान शक्तिन्यः प्रणतसकल सुरासुरेंद्र वृंद विहित नक्तिन्यः कठिन कर्म्म शालमालो न्मूलन चरणेन्यो जन्मजरा मृत्युनिवारण कारणेन्यो नंदीश्वराष्टम द्वीपगत पूर्वांजन गिरिशिखर स्थ सिद्धायतन मंडनायमानेन्यः श्रीरिषनान न चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना निधानाष्टो त्तरैकशात शाश्वत जिनेंद्रेन्यो जलं यजामहे स्वाहाः इति प्रथमजल पूजा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

द्वितीयपूज जिनराजकी । करक्त नक्तिन
रसार ॥ वरसुगंध द्रव्यें करी । तरक्त सिं
धु संसार ॥ १ ॥

॥ मेघवरसैनरी पुष्फवादलकरी एचाल ॥

नक्तिधरी नविजन पूजमहाराजकुं । एह वरगंध द्रव्यें सदाई ॥ विमल घनसार चंदन सरसमृगमदा । कुंकमें कर विलेपन मुदाई न०

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१ ॥ जे नवि सुरन्नितरगंधद्रव्यें करी। सुरनि तनुकरै जिनराज केरो ॥ तेहनी चंद्र करअ मल यशावासना। सुरन्नितम करइ सकजग घणेरो न० ॥ २ ॥ एमवर सुरन्नितर द्रव्य सेंसुरवरा। अरचकरि जगपती बिंबसारा ॥ परमशुन्न नावना नावता गावता। विशद जिनवर गुणा अतिअपारा ॥ ३ ॥ सकलसुर गणमिलीएम जंपेंमुदा। नोसुरा आज जिन राज अरची ॥ विरति गुण रहितनिज जन्म सफलो कियो। सुमति संयोग दुरमति विगू ची न० ॥ ४ ॥ दुतियइम पूज करतांहरै न व्यनो। पापघनताप आपें अपारा ॥ सरग निरवाण पुरपंथ प्रगटीकरण। विशदन्नाव चंद्रकरगण उदारा न० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

मृगमदोज्वल कुंकुम चंदनै। भिवर तनां तर तापनिकंदनैः ॥ जिनवरा नघता मसन्ना स्करान्। स्वहितकहिधये चसमर्चये: ॥ ६ ॥ नुँह्रीं श्रीअर्हं परमात्म० प्रणत० कठिन० नं दीश्वरा० रिषनानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्ध माना शोत्तरैकशात शाश्वत जिनें० चंदनं य

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जामहेस्वाहा इतिद्वितीया गंधपूजा संपूर्णम्

॥ दोहा ॥

तृतीयपूज जिनराजनी । विकसित अ
तिहिरसाल ॥ सुरनि कुसुमकरि नवियज
न । करियें नक्ति विशाल ॥ १ ॥

॥ पांचवरणी अंगीरची एचाल ॥

एह जिनकी पंकहरणी नगतिसारी । मि
लिकरि हरिवर सकल सुरासुर ॥ त्रिकरण इ
क करि हितकारी एह० ॥ १ ॥ अनुनवरस
युत चित्त नक्तिधरि । पूरव पुन्य उदय नारी
एह० ॥ इणबिध कुसुम नक्ति जिनवरकी ।
करइ हरइ घन दुरितारी । एह० ॥ २ ॥ मा
लती नागपुन्नाग केवडो । दमणक कुंद सुगं
धिधारी एह० ॥ मरुक केतकी पद्म मोगरा
कुसुममालकरि मनुहारी ए० ॥ ३ ॥ जिनवर
कंठ ठवें प्रनु आगल । कुसुमपुंज धरि दुख
वारी ए० ॥ इण बिध पुष्प नक्तिकरि नवि
जन । वरइ सकल जग सिरि नारी एह० ॥
४ ॥ करिके शुकलध्यान पावकसें । नस्म वि
षम समकमवारी ए० ॥ चिदानंदघनपद शिव
चंदोपम । पामें अतिगुण विसतारी ॥ ए० ॥ ५

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ काव्य ॥

नव दवानल ताप घनाघनं । कुशल चंदन नंदन काननं ॥ विशद शारद चंद समाननं । जिनगणं कुसुमै र्च समर्चये: ॥ ६ ॥ ॐह्रींश्रीं अर्हं परमात्मभ्योऽनंता० ॥ प्रणत० कठिन० नंदी० श्री रिषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना भिधान श्र० जिनें०भ्यो पुष्पं यजामहेस्वाहा ॥ इतितृतीयपुष्पपूजा ॥ ३

॥ दोहा ॥

जगनायक जिनचंद नी । एह चतुर्थिजाण ॥ धूपपूज करिये सदा । हरिये कुमति अनाण ॥ १ ॥

सबभुरातिमथनमुदारधूपं एचाल ॥

जग कुशलकारि अघालि हरणं । धूपपूज उदाररे ॥ धूप अनलै कुगति दुखभर । फलद दहन अपाररे ॥ १ ॥ ज० ॥ सरस चंदन अगर अंबर । मृगमदा घनसाररे ॥ कुंदरु क्कबली सेलारस । करिये गंधवटि साररे ॥ २ ॥ जग० ॥ रतनमय वर धूप धाणो ॥ धूपभृत करधाररे । सुर पुरंदर पूजकरतां ॥ लहै लाभ अपाररे ज० ॥ ३ ॥ धूपपरिमल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महमहैं जिम ॥ तेम नुवन मफाररे ॥ धूप पूजा तें नविकनो । गुण सुगंधि बिचाररे ॥ जग० ॥ ४ ॥ नव अंधकूप पतंत उधरत । धूप अरचन धाररे ॥ कहत गणि शिवचंद पाठक । पूज चतुर्थी साररे ज० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

नव सुदुस्तर वारिधि तारणं । विषय सौख्य विकार निवारकं ॥ निरुपमोत्तर मंगल कारकं । जिनगणं धृतधूप करायते ॥ १ ॐ ह्रीं अर्हं परमात्म० प्रणत कठिन० ॥ नंदीश्वरा० श्री रिषनानन चंद्रानन । वारिषेण वर्द्धमानानिधान अ० धूपं यजामहे स्वाहा इति चतुर्थी धूप पूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

दीप पूज इह पंचमी । करिये विविध प्रकार ॥ दीप पूज करतो नविक । दीपें जगतमफार ॥ १ ॥

॥ तेरी पूजाबणी तेरसमै एचाल ॥

मेरी लगीय प्रीत प्रनु चरणा । जिनगुण परिणति करण कारण ॥ सकललोक सुखकरण मे० ॥ १ ॥ गहिरसिंधुनव निपतित ता

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रण । तरण तरणिगुणधरणे ॥ अनंतरूपधर दुरगतित्रय हर । परमज्योति अधिकरणे मे० ॥ २ ॥ करूणाधार विमलगुण आगर निरुपमअशरण शरण मे० । एजिनचरण दीप पूजनसे ॥ अरचीजे दुख हरणे मे० ॥ ३ ॥ केवल विमल चिदानंद लहिये दीपपूजके करणें मे० । रतन दीपसे करै आरती हरिगण जिनगुण चरणे मे० ॥ ४ ॥ एप्रभुचरण सेव भवि जनकुं ॥ अमृत पद सुवितरणे मे० । कुमति रजनि अज्ञान तिमिर हर । वर शिवचंद्र सु किरणे मे० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

मदन सिंधुर सिंधुर वैरिणं । गुरु कषाय करेणु समीरणं ॥ मद धराधरता वल वैरिणं जिनगणं प्रयजे वरदीपकैः ॥ ६ ॥ ॐह्रीं परमा० प्रणत० कठिन० नंदीश्वरा० श्रीरिषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमान अ० दीपं यजामहे स्वाहा ॥ इति पंचमी दीपपूजा ॥ ५

॥ दोहा ॥

छठीअक्षत अरचना । करिये धरि शुभ भाव ॥ वरिये सिद्धवधू परम । अक्षय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुख नोझाव ॥ १ ॥

॥ हांहोरे देवा बावनाचंदनघसिकुमकुमा ॥ हांहोरे वाला एजगदीसर हितकरू । श्रुलवेसर जिनमाहाराजए ॥ श्रुतिगहिराभ्नव जलधितें । प्रभुतारण तरण जिहाजए हां० १ ॥ भीमकरम कुंजरघटा । भंजन मृगराज समानए ॥ हांहोरे बाला भव्यकमल प्रतिबोधिवा । एप्रभुवासर महिरानए हां० ॥ २ ॥ रजत शालि तंदुलमयी श्रक्षत पूजन श्रग्रसारए ॥ एपूजा जिनचंद नी । बांछित सुखनी दातारए हां० ॥ ३ ॥ ठवणजिनंद दरसणश्रुवै । श्रनुभव रसतरुनो कंदए ॥ भावजिणेसरदरसनो कारण कह्यो सकलजिणंदए हां० ४ ॥ ए पाठक शिवचंदनें । जिनचरण शरण आधारए ॥ प्रतिभव क्षय ज्योयेकही बठी । श्रक्षत पूजासारये हां० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

विजित मंदर भूधर धीरतं । निहत सागरराजगभीरतं ॥ प्रदित पातकयोध सुवीरतं जिनगणं प्रयजेऽक्षत पूजया ॥ ६ ॥ उँह्रीं श्रर्हं परमात्मभ्यो श्रनंता० प्रणत० कठिन०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नंदीश्वरा० श्रीरिषभाननचंद्रानन वारिषेणव र्द्धमाना भिधानाष्टोत्तरैक० जिनें० अक्षतंयजा महे स्वाहाः ॥ इति षष्ठीअक्षतपूजा ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

हिवपूजा नैवेद्यनी । सप्तम अतिहिवि
साल ॥ करिये जिनवरनी अचल । लहि
ये मंगल माल ॥ १ ॥

॥ राग जिनगुणगानं श्रुतअमृतं एचाल ॥

जिनवरदरसण वरअमृतं । ए जिनदरशा ण अमृत फरसै ॥ भवि तजि मिथ्याअयगुण तं जि० ॥ १ ॥ जगदीसरपरमात्मदशापद । पामें अनुपम कांचनतं ॥ तिणसें सुरपति प्र भुदरसणवरि । भगते गावें जिनचरितं जि० २ ॥ मोदक घृत वरखज्जक परमुख । वरनैवे द्यसरसधरितं ॥ हरिगण जगप्रभु आगलढो वें । मणिमय कनकथाल भरितं जि० ॥ ३ ॥ जे नैवेद्य करी जिनपूजन । करइ तेह जगम न हरितं ॥ अतिही स्वादु सुरगति शिवपद सुख । ततिनित सेवें भवितुरितं जि० ॥ ४ ॥ विंशति पदमें ये जिनपतिपद । वरशिवचं द विमल अमितं ॥ इणपद सेवक भविजन

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

केरो । संचित भूरिहरइ दुरितं जि० ॥ ५ ॥

॥ काव्य ॥

अनंतविज्ञानमयस्वरूपं । समस्त लोकत्रय भूतिभूपं ॥ लसद्गुणौघामृत चारुकूपं । यजे सुनैवेद्यचया जिनौघं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीँ श्रीअर्हं परमात्मभ्योऽनंता० प्रणत० कठिन० नंदी० श्री रिषभानन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना भि धाना श्चोत्तरैक० जिनें०भ्यो नैवेद्यं यजामहे स्वाहाः ॥ इति सप्तमी नैवेद्य पूजा ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जिनफल पूजा अष्टमी । कष्टअनिष्ट वि दार ॥ करिये शुभभावें सदा । भरिये पु न्यभंडार ॥ १ ॥

॥ तेजतरणि मुखराजै एचाल ॥

सुरनायक जसगावें । जिनजीको सुर० ए आंकणी ॥ निरमल मनवच काय करणते । लुलि २ शीस नमावें । सुर अवतार सफल भयोमेरो । जिनपूजन सुपसावें जि० ॥ १ ॥ नयनचकोर चंद्र समज्योती । संचितदूर पु लावें ॥ निरखि२ मनमोहन मूरति । आनंद अंगनमावें जि० ॥ २ ॥ नालिकेर नारंगी क

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वला । केला आम्र अणावें ॥ पूंगीफल दाडि
म परमुखफल । जिनवर चरण चढावें जि०
३ ॥ जेनवि फलपूजा जिनवरकी । करैकरा
वेनावें ॥ अनुमोदें तेपरमचिदानंद । घनअ
मृत फलपावें जि० ॥ ४ ॥ वरस अढार ति
होत्तर जेठें । प्रतिपद सुकल सुहावें ॥ चंद्र
सूनुवासर जयनगरै । खरतर गच्छजगचावें
जि० ॥ ५ ॥ श्रीजिनहर्ष सूरि सूरीसर । वि
जयमान वरुदावें ॥ रूपचंद गणिपाठक पा
री । वादींद्र विरुद धरावें जि० ॥ ६ ॥ ता
ससीस वाचक पुन्यशील सिष ॥ समय सुंदर
कहिरावें ॥ तासुसीस पाठक शिव चंदै । पू
जरची मनभावें जि० ॥ ७ ॥ जेनंदीश्वर शा
श्वत जिनकी । वसुविध पूजरचावें ॥ तेजन
सकल लोकके ईश्वर । तीर्थंकरपद पावें जि०

॥ कलश ॥

सुरपति सुरासुर वृंद वंदित चरण पंकज
मघहरं । सत्द्वीप नंदीश्वर जिनालय परम
तर सुख माकरं ॥ अति विशद हिमकर चं
द्रिका मल निखिल गुण मणि सागरं । जि
नराज गण मह मर्चये वरफल चयैः करुणा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करं ॥ ९ ॥ ॐह्रीं श्रीं परमात्मज्यो ऽनंता० प्रणतस० कठिन० नंदीश्वरा० श्री ऋषभा नन चंद्रानन वारिषेण वर्द्धमाना भिधानाष्टो त्तरैकशत शाश्वत जिनेंद्रेभ्यः फलं यजामहे स्वाहाः ॥ इत्यष्टमीफल पूजा ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

पूरब दिसि अंजन गिरी । मंदिरगत जि नराज ॥ अष्टविधि पूजा यें सदा । अरची जै हितकाज ॥ १ ॥ पूरब परमुख चिऊं दि सै । पुष्करणी अभिराम ॥ दधि मुख चउमं दिर जिना । अरचीजै शुभ काम ॥ २ ॥ ई शानादि बिदिशिगत । वसुरतिकर गिरिराज मंदिर गत जिनराजकी ॥ करिये पूजसमाज ३ ॥ दक्षिण अंजनशैलमें । चउ दिशिदधि मुख सार । चउमंदिर जिनराज की ॥ करिये पूज उदार ॥ ४ ॥ दक्षिण दिशि अंजन गि री । मंदिरगत जिनराज ॥ वसुविधि पूजा ये सदा । पूजी जें हित काज ॥ ५ ॥ दक्षि ण ईशानादिकै । विदिशिं अतिहि उदार ॥ अष्ट रतिकर गिरिवर जिना । पूजो विवि ध प्रकार ॥ ६ ॥ पश्चिम दिशि अंजन गिरी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मंदिर जिन महाराज ॥ वसुविध पूजा यें स दा । पूजो नविक समाज ॥ ७ ॥ पश्चिम अंजन शैलनें । चउदिशि दधि मुखधार ॥ चउमंदिर जगनाथ की । पूज करो सुखकार ८ ॥ पश्चिम ईशानादिकै ॥ विदिशें जगहि त काज । अठ रतिकर गिरि जिनप्रतें ॥ अरचुं जगदाधार ॥ ९ ॥ उत्तर दिशि अंजन गिरी । मंदिर गत जगराय ॥ अष्टविधार्चन सें नविक । अरचो जीउ सुखदाय ॥ १० ॥ उत्तर अंजनशैलनें । चउदिशि दधिमुखनाम चउमंदिर तीर्थेशनें । अरचो शुन परिणाम ११ ॥ उत्तर ईशानादिकें । विदिशें रुचिराकार । वसु रतिकरगिरि जगविनू ॥ पूजो अरति विदार ॥ १२ ॥ सकल संघ वलि जेठमल ॥ कोठारी चितचंग ॥ इनके आग्रहसे करी ॥ पूजा अतिहि सुरंग ॥ १३ ॥

॥ इति श्री नंदीश्वरजीकी पूजासंपूर्णा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ पांच कल्याणक पूजा ॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिरूप जगदीसनों । अद्भुत रूप अनूप ॥ प्रवचनप्रज्ञुता प्रगटपण । जय जय ज्योति सरूप ॥ १ ॥

चौवीसे जिनवर नमी । पंच कल्याणक रूप ॥ शासन नायक वर्णवुं । दर्शन ज्ञान सरूप ॥ २ ॥

कल्याणक उच्छवकरै । इंद्रादिक जे देव तेनावें नविजन करै । श्रीजिनवरनीसेव

॥ राग सरपदो ॥

जोतिसकल जगदीसनी । हां रेज० हे ॥ च्यारनिक्षेप प्रमाण । नाम जिनादिक जिन कह्या । आगम मांहिप्रधान ॥ १ ॥

॥ गाथा ॥

नाम जिणाजिण नामा । ठवण जिणानं जिणंद पडिमानं ॥ दव्वजिणा जिण जीवा । नावजिणा समवसरणच्छा ॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ढालतेहीज ॥

विनकारण कारजनही हां रेका०ए । एसब लोकप्रसिद्ध ॥ नावनिक्षेप प्रधानता । कारज रूपेंसिद्ध ॥ २ ॥ विनआकारें द्रव्यनो हां० द्र० । नक्रवें थापन सिद्ध ॥ नामविना आ कारनो । प्रगट पणे नविबुद्ध ॥ ३ ॥ नामा दिक कारणसही हां०का० इनविन नावन होय । नावविशुद्ध जिनतणी पूजकरो सक्र कोय ॥ ४ ॥ विवहारें निश्चय लहै हां०नि० कारण कारज होय ॥ पावक ज्वालाक्रमकरी । सोधचढै सक्रकोय ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानकला कलितातमा । लोकालोक प्रका श ॥ व्यापक नावें थिर रह्यो । शुद्ध वि कास विलास ॥ १ ॥

॥ राग सारंग ॥

हांहोरेदेवा जोतिसकल जिनराजनी । स क्र लोकालोक प्रकास ए ॥ हांहोरेदेवा राजत श्रीजिनराजजी । वांणी प्रवचन शुनवासए १ हांहोरेदेवा मात नमुं नित सारदा । गुरुपंच कल्याणक सारए ॥ हांहोरेदेवा तीर्थंकरना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वर्णवुं । गुणशास्त्र परंपरधारए ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

शासन नायक जगधणी । त्रिभुवन पति परमेस ॥ पर उपगारी प्रभुतणा । गुण गावत सङ्कवेस ॥ १ ॥

॥ ढालतेहीज ॥

हांहोरेदेवा । वीसथान करि सेवना वांध्युंजिननाम प्रधानहे । हांहोरेदेवा दिव्यअमरसुखअनुभवें ॥ प्रायेंप्रभुपुन्य प्रमाणए १ हांहोरे देवा निरमल तरवरज्ञानना । धारक कारक शुभयोगए ॥ हांहोदेवा शब्दचरणरस गंधना । शुभफरस तणा वरभोगहे ॥ ४ ॥ हांहोरेदेवा शाश्वत सिद्धायण तणा । नितउच्छवकरत सुरंगए ॥ हांहोरे वाला बालचंद पाठक कहै । नितमंगल होतसुचंगहे ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पुन्य पूर्वभव प्रभुतणो । प्रगट्यो प्रगट प्रभाव ॥ सुरकुमरीनित प्रतिकरें नाटक नवनवभाव ॥ १ ॥

॥ पूर्व मुखसावनं एचाल ॥

शुरु निजदर्शनें करियगुणकर्सना । जिन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चरण सेवना ॥ विवधकारीहेअइयो विविध
कारी आ० । एक जिनधर्म्ममय परमलीनता
दीनतासकलतज रजनिवारीहे आई० ॥ १ ॥
आत्मगुणअंतरातमपणैवृत्तितातजिय बाहिरा
त्मजिन आंणधारी हेअ आ ॥ २ ॥ सुद्धसम्य
क्तगुण संपदा निज लही । सहीय शुध धर्मरु
चिन्नाससारीहे०अ० । विविधमणिरत्ननीजो
तिऊगमगजगें । चंद्रिका न्नासन्नासितकरारी
हे अ० सित० ॥ ३ ॥ प्रवर कुलशुद्धराजन्य
प्रमुखेंमुदा । आयुकर बंध नर न्नव सुधारीहे
अ० न्न० ॥ गर्न्न अवतार निजमात उदरेंल
है । बालशुन्नलग्न शुन्नयोग चारीहे अ० ।
योगचारी ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शुन्नदिन शुन्न मऊरत घमी । शुन्न उच्चग्र
हचार ॥ देवलोक चवि प्रन्नुलहै । मातुउ
दर अवतार ॥ १ ॥
सुंदरवरप्रासाद माँहि । मध्यनिशा जिनमा
त ॥ स्वप्नदेख सुखसेजमें । जाग्रत अति
हरषात ॥ २ ॥

॥ राग घाटाचैती ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिनजी जजो जवि प्यारा । याते आनंद अधिक अपारा जि० ॥ १ ॥ सुख सेऊ सूती जिन माता । देखैं सुपना मनजाता ॥ चित हरखित ऊय तिणवारा जि० ॥ २ ॥ शुचि गज वृष सिंह मनुहार। लक्ष्मी दाम शशी दिनकार। धजकुंज पदमसर सारा जि० वर कीर समुड विमान । रयणोच्चय मेरु समान निर्धूम पावक सुखकारा जि० ॥ ३ ॥ शिवधान्य मंगल श्रियकारी। जाणी अर्थ हृदय कमधारी॥ शुजसूचक पुन्य संजारा जि० सुंदर वर सखियन संगें । करिधर्म जागरिकारंगे । निशिशेषगई तिण वारा जि० ॥ ४ ॥ एकही पुष्पमाला चढाइये ॥

॥ दोहा ॥

परम पुरुष परमातमा । जावी जगवन जास ॥ प्रवचन प्रगटकरण प्रजु । पुन्य तणैं सुप्रकाश ॥ १ ॥

॥ पूजा सतर प्रकारी एचाल ॥

आज आनंद वधाई जई त्रिजुवनमें । चवद सुपन सूचित गुण जेहनां ॥ अवतरे माता उदर नेमैं । आ० ॥ १ ॥ नृपति सद

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न वक्र सुपन शास्त्र विध । अर्थ विचारक रि निज गनमैं ॥ पुत्र रतन फल वचत नृप ति कुल परम कल्याण होत जननमैं ॥ आ० २ ॥ प्रफुलित हरख नरत हिय झलसत । जिन जननी तात सुनि तनमैं ॥ दिन दिन बढत प्रवर धन जन मन । अधिक उछाह घर घरनमैं आ० ॥ ३ ॥ रूप्य रजत मणि माणक मोतियें । संख प्रवाल सिल वरसन मैं ॥ धनद धनद सुरइंद्र झकमतें । नरत नंकार नृपसदन मैं आ० ॥ ४ ॥ ताल कंसाल मधु वीण बजावत । गीत गाततननमैं ॥ दु न्दुभि मुरज मृदंग घन गरजत । गरज २ मानुं जैसे घनमैं आ० ॥ ५ ॥ सुर नर लोक मांऊ अधिकउछाहवाह । निशदिन होत जन जनपदमैं । इंद्र इंद्राणी नृप दोहद पूरत । म नोरथ होत जोजो मातु मनमैं आ० ॥ ६ ॥ परम कल्याण शुभयोग संयोग भयो । शु भघरि शुभग्रह शुभदिन मैं ॥ बरण सकै न ताहि कवि अवसर कों । आनंद भयो तीन भुवन मैं आ० ॥ ७ ॥ इति च्यवन पूजा ॥ ॐ परम० अ० ज० श्रीच्य० स्वाहा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

प्रगटे पावन पतित प्रभु । अधम उधार न काज ॥ नृपकुल मांहें अवतरें त्रिभुवन के शिर ताज ॥ १ ॥

॥ राग सोरठी ॥

आजअधिक आनंद भयोरेवाला । आज सुरंग वधाई रे ॥ जगपति जिनवर जनमि यारे वाला । सुरवधु वन मिलआई रे १ ॥ आलोआज आनंदघन उलटो रेदेवा । दिग कुमरी हरषाई रे ॥ आलोदगदिग निर्मलता थई रेदेवा । फूलरही वन राई रे ॥ २ ॥ फू लै फूली वन लतारे वाला । मधु मालती म हकाई रे ॥ आलिप्रमुष सजधाननीरे वाला । निपजी रास सवाई रे ॥ ३ ॥ नारकी जीवें नरकमारे वाला । क्षणइक साता पाई रे ॥ सबजन मन हरषित भयोरे वाला । भूमंडल ढविढाई रे ॥ ४ ॥ आजदिन आजमजरतघडी रेवाला । आजग्रह आजपल आई रे ॥ जन्मथ यो जिनराजनोरे वाला । प्रगटीपूर्व पुन्याई रे ५ ॥ पुष्पवर्षागुलाबजलबर्षाकरें ॥

॥ दोहा सोरठो ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

त्रिजुवन माहिसुरूप । जन्मसमय जिनरा
जनें ॥ वाजित्र वजत अनूप । सुरनरकृत
उव्व ज्ञवें ॥ १ ॥

॥ रावणनीरत वणावेंहोन्नलां एचालमें ॥

आजआनंद बधाई रे ॥ देखोआ० ॥ ज
यजय कारन्नयो जिनन्नासन ॥ सुरकुमरी ह
रषाई रे दे० ॥ १ ॥ घर२गौरी मंगलगावत
मोतियन चोक पुराई रे ॥ ईत उपद्रुव न्नय
सब न्नागे । खार समुर्दें जाई रे दे० ॥ २ ॥
आज सनाथ न्नयोहै त्रिजुवन । जिनवर ज
नम्या न्नाई रे ॥ आज अधिक जग हर्ष न्न
यो है । धन धन मात कहाई रे दे० ॥ ३ ॥
जन्म महोच्छव करननकुं सब । दिन्निकुमरी
मिल आई रे ॥ कर कदली गृह सुंदर रचना
पावन कर ऊर लाई रे दे० ॥ ४ ॥ जिनज
ननी जिनवर पय प्रणमी ॥ मस्तक आण
चढाई रे । स्नान करावत उन्नय न्नारीरें ॥ तै
लान्यंग कराई रे दे० ॥ ५ ॥ नूषण नूषित
अंग विलेपन । देव दूष्य पहराई रे ॥ दर्प
ण ले मंगल घट थापी । चामर जुगल ढु
लाई रे दे० ॥ ६ ॥ पंचवरन के फूल सुगंधित

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुर कुमरी वरषाई रे ॥ होमकरी रक्षापोटरि या । जिनवरकरै बंधाई रे दे० ॥ ७ ॥ मंगल गावत जिनजग जननी । निजगृह माहेंठाई रे सफलनयो निजआतम जाणी । दिग्गकुमरी घर आई रे दे० ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

अतिहि अधिक नच्छवकरी । गइकुमरी निजथान ॥ इंद्रहिवें उच्छव करै । जन्म समय जिन जांण ॥ १ ॥

॥ रागगौढ़ी सांझसमेंजिनवंदो एचाल ॥

आजउछव मन नायो रे ॥ देखोमाई ॥ ज गजननी जिनजायो रे देखो आ० ॥ त्रिनुवन मांहि प्रकास नयो है । इंद्रासन थररायो रे । दे० आ० ॥ १ ॥ अवधि ज्ञान धर जिनजी कुं निरखत । हृदय कमल झलसायो रे ॥ ह रिणेगमेषी इंद्र झकमतें । घंटसुघोष घुरायो रे दे० ॥ २ ॥ वनठुन नवररूप मनोहर । सु र समुदय मननायो रे ॥ सुरकुमरी वरनूषण नूषित । अदनुत रूप वनायो रे दे० ॥ ३ ॥ नवनव यानवाहनरच सुरवर । सुरगिरिशिख रें आयो रे ॥ चौसठ इंद्र करत अति उच्छव ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मेघ घटा घररायो रे दे० ॥ ४ ॥ कालीघटा वरदामनि चमकत। दादुर मोर सुहायो॥ अतिहि सुगंध पुष्प व्रज वरसत। मोतियन की झरलायोरे दे०॥ ५ ॥

प्रज्नुप्रतिमापंचतीर्थी ज्नीतरसेंल्यावें। सिंहासणपरस्थापनकरैंस्नात्रपूजाकरावें॥

॥ दोहा ॥

ज्ञाक्रजाय जिनवर गृहें। जिनजननी जिन राज ॥ प्रणमी श्री महाराजनी। ज्नक्ति करै सुरराज ॥ १ ॥

॥ सुंदरनेम पियारो माई एचालमें ॥

तुमसुत प्रानपियारो माई तु० ॥ आं० ॥ जग वत्सल जगनायक निरख्यो धन २ ज्नाग हमारो माई तु० ॥ १ ॥ धन जगजननी तुमसुतजायो। अधम उधारण हारो माई ॥ धन२ प्रगटज्नयो जगदिनकर। त्रिज्नुवन तारन हारो माई तु० ॥ २ ॥ सबसुर चाहत स्नात्र करनकुं। सुरगिरि प्रज्नुजी पधारो माई॥ करजोमी प्रज्नु अरजकरतहुं। सब जनकाज सुधारो माई तु० ॥ ३ ॥ मैंसेवक तुमसुत चरननको। आयोहूं अधिकारो माइ ॥ इंद्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहें पदपंकज प्रणमुं । भयसब दूरनिवारो तु० ४ ॥ पांचरूपकरि प्रभुजीकुं लावें । पांडुगवन सिणगारो माई ॥ चोसठ इंद्र महोत्सव करिहैं । पूजन अष्टप्रकारो माई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

पंचरूप कर इंद्र जिन । पंडुगवन लेजाय ॥ सिंहासन उछरंग गहि । स्नात्र करें सुरराय ॥ १ ॥

॥ इतनोंगुमाननकरियेंबबीलीराधाहेए० ॥

जिनजीको पूजन करिये । हांरे होरंगीले श्रावकहो जि० ॥ द्रव्यभाव बहुभेदेंकरतां । भवसागर निसतरियें जि० ॥ १ ॥ गंगाजल चंदन पुष्पादिक । अष्टविध मंगल धरियें ॥ भावविशुद्धें जिनगुणगावो । नाटक नवनव करियें जि० ॥ २ ॥ बहुविध प्रभुकी भक्ति रचावत । वर्नंनकरन नतरियें ॥ वोआनंद देखैं सोइजानें । दुखसब दूरेंहरियें जि० ॥ ३ ॥ पूजनकर प्रभुकुं घरल्यावें । आतम पुन्यैंभरियें करअठाही महोत्सव आवत । सबसुर मिल निजघरियें जि० ॥ ४ ॥ इतिश्री जन्मकल्याणके ज० श्री अष्ट द्रव्यं स्वाहा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

सुरकृतउच्छव अति अधिक। नये अनंतर प्रात ॥ मातपिता उच्छवकरें। निज कुल कमविष्यात ॥ १ ॥

पारनहीधनकेजहां। अगणित नरेनंझार॥ दानमनो वंछित दिये। दयावंत दातार

॥ गात्रलूहें०एचाल ॥

जिनजन्म महोच्छव रंगसुं रे। नयेप्रातक रतउछ रंगसुं रे ॥ हां रेदेवा रंगसुं॥ नृपउच्छ व करै अतिघणुं ॥ १ ॥ पुत्रजनम कुलक्रमक रै रेदेवा। जगजस कीरतविस्तरें वि०। घ रघरउच्छव रंगमें ॥ २ ॥ सुरवधुमिल सुरसं गसुं रे ॥ करेंनाटक नवनव रंग सुं रे रं ० ॥ हां रे बाललीला जिनसंगमें ॥ ३ ॥ रूपाति शयें शोभता रे देवा। इंद्रादिक मन मोहता रेवा०मो० हां०। विद्याप्रभु विस्मयवती ४ परमप्रमोद प्रवीणतारे देवा। सुरक्रीडा अ तिशयवता रे देवा अ० ॥ वैक्रिय शक्तिसमे लसुं रे देवा॥ ५ ॥ गावतगीत उमंगसुं रे देवा वाजित्र नवनव रंगसु रे देवा अ० ॥ वजित अहोनिशिसंगसुं रे ॥ ६ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

तीनज्ञान अतिशय धरैं । अतिशय कला सुधाम ॥ सुर सुसंग क्रीमातिशय । अतिशयगुण अभिराम ॥ १ ॥

॥ पंचवरणी अंगीरचीकु०एचाल ॥

वरणीन जातीरे व० । जिनजीकी सोभा व० न जाती ॥ चित्रजात नर सुरासुर निरषत । ओर न असोजगभाती जि० ॥ १ ॥ अनंत गुणेंकरि सोभित प्रभुजी । सुरु संवेग सोवन जाती ॥ शिव मारग शुध सेवत निसदिन । पुन्यपुरुष पायाराती जि० ॥ २ ॥ परउपगारी परम पुरुषोत्तम । अदभुत अनुभव रस पाती ॥ कामभोग वरविबुध प्रकारें । प्रातभये सुखसंघाती जि० ॥ ३ ॥ जसु जसख्यात प्रगट त्रिभुवनमें । कुल राजन्योत्तम जाती ॥ धन२तीन भुवनके साहिब । श्यामहमारो वर गाती जि० ॥ ४ ॥ इंद्र अहो निशा भावन भावत । देख दरस अति हरषाती ॥ दुन्दुभि प्रमुख वाजिन्त्र वजतानित । सुरवधु वनमंग लगाती जि० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं प० पुष्प वासक्षेप चढावें ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

प्रवरजोग प्रजुपुन्यतें । प्रगटें प्रगट प्रधान ॥ गुणग्राहक गृहवासमें । दर्शन ज्ञान निधान ॥ १ ॥

प्रजुविन दीनानाथ दया । विन कौंन कहावत कोई रे प्र० ॥ गृहवासै सुधसंयम धारी । शुरुसुजावें होइ रे प्र० ॥ १ ॥ सम्यग दर्शनजव निर्वेदें स्वतन की जरषोइरे । प्रजुता प्रजुकी कोकहि वरनें ॥ सुरनर नारीमो हीरे प्र० ॥ २ ॥ शुजलेश्या शुजध्यानरमें नित । शातम निरमलधोइरे ॥ शात्मरूप निहारत निजघर । संगसुमति जह जोइरे प्र० ३ ॥ प्रगट प्रकास आत्मउजियारे । सामक हावत सोइरे ॥ गृहवासैं सुधसंयम रागी । लागी लगनसवाइरे प्र० ॥ ४ ॥ निजप्रभुता प्रजुजीनो लीनो । अंतरशत्रु विगोइरे ॥ विषयवासना ठीणजइलख आतम शक्तिसुंठोइरे प्र० ॥ ५ ॥ इमकही फूलचढावें ॥

॥ दोहा ॥

दाता दीन दयाल प्रजु । देतसंवत्सरीदान ॥ दूरकरै दालिद्रजग । त्रिजुवन मांहि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रधान ॥ १ ॥

॥ मरुदेवानंदनकी क्याउबिलागतप्यारी ॥

जगपति जिनवरकी । क्याउबि मोहनगारी ज० ॥ मोहत प्रभुकेमोहनरूपें । निरषनि रषनरनारी क्या० ॥ १ ॥ भोगकर्म अंतरायक र्मकबु । क्षीणभए निरधारी ॥ दानसंवत्सरघ नजिम वरसत । पृथ्वी प्रमुदित कारी क्या० २ ॥ नवलोकांतिक देवसबेमिल । हाजरहोय सुचारी ॥ जयजय मंगल शब्द उचारत । ध र्म गहोसुख कारी क्या० ॥ ३ ॥ दानधर्म शिव मारगप्रभुजी । प्रगटकियो हितकारी ॥ दाता दीन दयाल जगतमें । जिनसम कोसुविचा री क्या० ॥ ४ ॥ इंद्रादिक सुरसुरी नरनारी । दीक्षोत्सव अतिभारी ॥ गानदान सनमानता नकरि प्रभुगति सकलसुप्यारी क्या० ॥ ५ ॥ तजि संसार लियो शुभयोगें । संयम सतरप्र कारी ॥ मनपर्यव वरज्ञान भयोतब । विहरत पर उपगारी क्या० ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं प० अ० ज०श्री० दीक्षा० अष्टद्रव्यं० स्वाहा ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

गजवर अश्व समूह रथ । पायक कोझा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कोम ॥ जिनदीक्षा महोच्छवसमें । हाज रहोय तिणठोर ॥ १ ॥ इंद्रादिक सुरअ सुरनर । प्रजुकुं करेंप्रणाम नरनारी आसी सदे । जयजय त्रिजुवन साम ॥ २ ॥ त जआश्रव संब्ररगहै । संयमजाव निधा न ॥ सबसंसार तजीकरी । जएअणगार प्रधान ॥ ३ ॥

॥ तेरीपूजावणी तेरसमें एचाल ॥

धारी धारी धारी जिनजए संयमपदधा री। चरनकमल बलिहारी जि० ॥ पंचसुमति धर तीन गुपतिकर। सबजीवां सुखकारी जि० १ ॥ जीतलियें उपसर्गपरी सह ॥ सत्रुसेना गणजारी । जयजैरव तेनिप्रकंपजए । निर्म मनिर हंकारी जि० ॥ २ ॥ क्रोधमान माया लोज अकिंचन। आकिंचन ब्रम्हचारी ॥ पुष्क रसम निरलेप जगत गुरु । निरंजन अवि कारी जि० ॥ ३ ॥ चेतन परप्रजु अप्रतिघा ती । खेसम निराश्रयारी ॥ खड्गीजंग परें एकाकी । अप्रतिबंध विहारी जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

रत्नत्रय परिग्रहकरी । मुक्तिमार्ग अजिराम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

निशदिन करत विहारक्रम । प्रासु कामनिज धाम ॥ १ ॥

॥ सदगुरुजी सुनो मेरी अरजी ॥ एचाल ॥

जिनवरजी जगहितकारी जि० ॥ जग वत्सल जगबंधु जगत गुरू । जग नायक जयकारी ॥ १ ॥ कूर्मतणीपर गुप्तइंद्री । अप्रमाद जारंझसुचारी ॥ अतिशय धाम धामनिजवीरज । वृषजपरैं सुविहारी जि० ॥ २ ॥ सूरवीर प्रजु सिंहतणीपर । कुंजर करम बिदारी ॥ अतिगंजीर सायरसम शोजित । सौम्यलेश्या सुख कारी जि० ॥ ३ ॥ तेज पुंज दिनकर सम दीपत । हेम वरण मनुहारी ॥ सर्वसहन कारक धरणी पर । स्वच्छ हृदयकजधारी जि० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अनुत्तरधरसंयमक्रिया । कल्पातीतजिणंद ॥
वीतरागविचरैंप्रवर । रत्नत्रयजगचंद ॥ १ ॥

॥ कुमरीनें जादूमारा एचाल ॥

जाके रागद्वेष जया न्यारा रे । सोई श्याम सकल सुखकारा जा० ॥ वासीचंदन सम प्रजु जगमें । अपका रें उपकारारे जा०

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

१ ॥ कंचन काष्ठ समानहै जाके । सुख दुख सम उपचारा ॥ कोऊ निंदत कोऊ पूजत । जिनजीहै अधिकारा रे सो० ॥ २ ॥ शिव सुख अरु नवसुख कूनबांछै । वीतराग प्रभु प्यारा ॥ सूरवीर प्रभु क्षपकश्रेणि चढ । मोहन मल्लपिछारा रे सो० ॥ ३ ॥ क्षायक संयमनें शुभयोगें । अनुत्तर गुणगण धारा ॥ पाठकविजय विमलकहै प्रभुके ॥ चरणकमलबलिहारारे सो० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

घनघातीकरकर्मको । क्षयकरक्षायकज्ञान ॥
दर्शनलोकालोकको । प्रगटप्रकासीभान १ ॥

॥ ठूमरी वसमन खितरोकुंभ केतीर ॥
॥ भजलें श्रीमहावीर एचाल ॥

पायोप्रभु भवजलनिधि कोतीर पा० ॥ अतुलीवल वडवीर पा० ॥ अनुत्तरजाकैसुमति गुपतिहै । अनुत्तरक्षमाधीर पा० ॥ १ ॥ मार्दवआर्यव अनुत्तरजाके । रोक्योआश्रव नीर ॥ संवरजोग क्रियानवि विणठी । रही ईयसुखसीर पा० ॥ २ ॥ घनघातीसब सत्रुविनासी । केवलज्ञान सुधीर ॥ पूरनदर्शन प्रग

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

टभयो है । निजआतम गुणहीर पा० ३ ॥ प्रातिहार्य अतिशय जिनसंपद । भयोअनुकूल समीर । देउपदेश भविकप्रतिबोधत । वचनातिशयगंभीर पा० ॥ ४ ॥ लोका लोक प्रकास परमगुरु । कहिनसकै मतिसीर ॥ पाठकविजयविमल परमातम । प्रभुतापरमसुधीर पा० ॥ ५ ॥ ॐह्रींपरम० ज० ज० श्रीम०केवलज्ञानकल्याणके अष्टद्रव्यं० यजाम० स्वाहा ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

इंद्रादिकसुरसबमिली । तीनभुवनासिरदार ॥
सबदरसीसर्वज्ञनी । महिमाकरेंअपार १ ॥

॥ अतुलबिमलमिलो अखंडगुणेंभिलो ॥

अतुलविमलप्रभुताप्रभुकीलखचोसठइंद्रउछवधरेंए॥ च्यारप्रकारकेसुरसबमिलकरसमवसरणरचनाकरैए आ० ॥१॥ रजतकनकरत्नप्राकारें कनकरत्नमणिकंगुराए ॥ वृक्षअसोक सिंहासन सोभित । तीनछत्र चामरढुरैंए अ० ॥ २ ॥ दुन्दुभिप्रमुख श्रवण सुखदायक । गाहिरसुरेंवाजित्रघुरेए ॥ जानुप्रमाण पुष्पघन वरसत । जलजथलज विकसितसुरेए अ० ॥ ३ ॥ साधुसाधवी श्रावकश्राविका । इंद्रादिकसुरीसुर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चरें ए ॥ नरनारीतिर्यग विद्याधर। द्वादशवि
धपरिषदन्नरें ए श्रु० ॥ ४ ॥ न्नविजनधर्मतणी
उपदेसें। जोजनगांमिमधुर गिरेए॥ प्रतिबो
धितचोमुख श्रीजिनवर ॥ निजरन्नाषाश्रनु
सरैंए श्रु० ॥ ५ ॥ वासक्षेपकीजै ॥

॥ दोहा ॥

प्रगटपणैप्रन्नुकीप्रन्ना। प्रगटप्रकासकरूप॥
प्रगटीप्रन्नुतापरमसम। परमातमपदन्नूप॥

॥ चिगझीकौनसुधारैनाथबिनाबि०एचालमें ॥

न्नूमंझलन्नविकमल विबोधन। दिनकरस
मजिनरायारे न्नू०। श्रणडातें इककोझ श्रमर
पद। पंकजन्नमर लुन्नायारे न्नू० ॥ १ ॥ ग्रा
मनगरपुरपट्टण विचरत। त्रिन्नुवननाथकहा
यारे ॥ चौसठइंद्रकरै जाकीसेवा। तनमनसे
लयलायारे न्नू० ॥ २ ॥ इंद्राणीमिल मंगल
गावत। मोतियनचौक पुरायारे ॥ सर्वजीव
हितकारकप्रन्नुजी निश्रेयससुखदायारे न्नू०।
३ ॥ न्नवजलनिधि निर्यामकजगगुरु। तारक
सकलकहायारे। शासननायक संघसकलकुं॥
प्रवचनतत्वसुनायारे न्नू० ॥ ४ ॥ श्रनंतगुणा
करप्रन्नुजीकी महिमा। बरनेंकोकबिरायारे ॥

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परउपकारकप्रभुके पाठक। विजय विमलगुण गावारे भू० ॥ ५ ॥ वासक्षेपकरैं ॥

॥ दोहा ॥

निजनिज भाषा भविकजन। तृपतन सुन तहि श्रोत ॥ मीठी अमृत समगिरा। सम ऊतश्रम नहि होत ॥ १ ॥

॥ राग कहरवो ॥

जिनंदवामिलगयोरे। दोयचरणुं परध्या न शुकल मनगह गह्यो रे जि०। ज्ञायकज्ञेय अनंतनोरे॥ सबदरसी जिनचंद। सुरतरुसम जग वालहो रे ॥ सेवत सुरनरइंद । धर्ममैं लह्यो रे दो० ॥ १ ॥ चवदम गुण थानक क रैरे। आतम वीर्य अनंत ॥ योग निरोधन की क्रिया रे। सूखम बादरकंत ॥ बंधसबटर गयो रे। सरब संवर भयो रे दो० ॥ २ ॥ घनकर आत्मप्रदेशनों रे। करशैलेशी कर्ण कर्म सकल दूरै क्रिया रे। जीर्णवस्त्र जिमपर्ण मुक्ति पद जिम लह्यो रे दो० ॥ ३ ॥ ज्ञान क्रिया कर कर्मको । क्षय कर पर अनुबंध निजआतम रूपें लह्योए॥ शाश्वत सुख संबं ध। सिद्ध सुध बुध धर्मोरे दो० ॥ ४ ॥ इति

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

अकल अगोचर अगमगम । सिद्धनएसु
वि शुद्ध ॥ परमातम प्रभु परम पद चिदा
नंद अविरुद्ध ॥ १ ॥

॥ रागधनासरी तेजतरणिमुखराजें एचाल ॥

तेजतरणि समराजै । प्रभुजीकोते० ॥ ए
कसमयप्रभु ऊरधगतिकर । मुक्तिमहल सुवि
राजै प्र० ते० ॥ १ सादिअनंत सदासाश्वत
वरअनंत महासुखछाजै। अचलअगोचर प्रभु
अविनाशी सिद्ध सरूप विराजै प्र० ॥ २ ॥
निरुपाधिकनिरुपम सुखप्रभुके । कहिनसकै
कविराजै ॥ अजर अमर अक्षय अविकारी
सकलानंद सहाजै प्र० ॥ ३ ॥ संवत उगणी
सेंतेरोत्तर । श्रावण सुदिपखराजै ॥ श्रीजिन
राज तणा गुणगाया । पंचमि दिवस समा
जै ॥ ४ ॥ श्रीविक्रम पुरनगर मनोहर । श्री
संघ सकल समाजै ॥ पंच कल्याणक पूजाप्र
भुकी । कीनीहित सुखकाजै प्र० ॥ ५ ॥ श्री
खरतरगच्छ नायक लायक । युगप्रधान पद
छाजै ॥ जंगमगुरु भट्टारकवरश्री । जिनसौ
भाग्य सुराजै प्र० ॥ ६ ॥ श्रीप्रीत विलास ध

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

र्म्मसुंदरगणि । अमृत समुद्र सुन्नाजै ॥ पाठ
कविजय विमल प्रनुकेगुण । गावत घनजि
मगाजें प्र० ॥ ७ ॥ हंसविलास प्रवरगणिव
रकी । प्रेरणिया सुसमाजें । श्रीजिन वरकी
स्तवनाकीधी । धर्म्मप्रनावन काजें प्र० ८ ॥
नुँह्रीँ प०श्रनं० जन्मजरामृत्यु निवारकेन्यः
श्री मज्जिनेंद्रेन्यो निर्वाणकल्याणके जलंचंद०
यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

॥ कलशपूजा राग मालवी गौमी ॥

सुनआरती प्रनुकी उदारचित्तें । करोनवि
करसालरे ॥ प्रथमधूप सुगंधजिनकुं । उखेवो
जिननालरे सु० ॥ १ ॥ नाल निजकरतिलक
सुंदर । पहरपुष्प सुमाल रे । दक्षिणकर जि
न राज जूके । करआवर्त्त सुथाल रे सु० २ ॥
यथासगतें सुद्धनगतें । करोदिल षुसियालरे
द्रव्यनावें विविधपूजा ॥ नविकनाव विला
सरे सु० ॥ ३ ॥ गुणअनंत महंतगावो । प्रनू
परम दयालरे ॥ जन्मसफली करो नविजन
कहैपाठक बाल रे सु० ॥ ४ ॥

॥ इति आरती ॥

॥ इति कल्याणक पूजा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ अथ पंच ज्ञान पूजा ॥

॥ दोहा ॥

स्वस्तिश्री केलीसदन । नतसुर अलिऊंकार ॥
नाभिनंदपदपद्मयुग। सुरुचिरमानसधार १ ॥
निखिलजंतुसुखकारिणी। जिनवाणीउरधार ॥
पंचज्ञानपूजनतणो। कहस्युंविधिविस्तार २ ॥

॥ ढाल ॥

सकल क्रियानो मूलजे राजै । अद्वैतिक जसुमहिमा ठाजै ॥ जेसज्ञ दुरित तिमिर अप हारै । लज्जित कोटि दिनंद अवतारै ॥ १ ॥

॥ उल्लालो ॥

अवतार जसुमतिनाण । श्रुत पुनरवधि नाण बखानियें ॥ मनज्ञाव परिणति विज्ञाद वेदन मनः पर्यय जानियें । वर अनंतानंत केवल अपरिहय गइ जाणए ॥ प्रतिपत्ति जे दै ज्ञान नाख्युं जिनपती जगज्ञाणए ॥ १ ॥

॥ ढाल ॥

विंशति पदमांहे अष्टम पद ए । नावें बंदन

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करिन्नव तरियें ॥ नवपद सप्तमपद मनन्नायो
श्रीतीरथ पति श्रीमुखगायो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

योग्यदेशथित वस्तु जे । विषय प्रगट प्र
तिन्नास ॥ इंद्रिय मन कारणकरी । न्नेद
वतीस प्रकाश ॥ १ ॥ उपयोग क्रमतेक
ह्यो । मति पूर्वक सुयनाण ॥ प्रथम पीठ
न्नवि श्र्चरचिये । नमोनमो मइ नाण २ ॥

॥ ढाल ॥

समकित उतपति कालें मतिस्रुत । लबधे
होय समकाले । सुयनिस्सिय पुन रस्सुय नि
स्सिय । न्नेदेसुय अजुवाले रे । न्नविका श्रीम
इनाण तेवंदो वंदीनें चिरनंदोरे न्न० समकित
रसनो कंदोरे न्न० शिवतरु बीजनोवृंदोरे न्न०
श्रीमइ० एश्र्चांकणी ॥ १ ॥ अष्टा विंशतिधा
सुयनिस्सिय । अत्युग्गह१ईहा२वाय३ ॥ धारण
४ एचउपणइंद्रियमण । करि चउविंशतिथायें
रे न्न० श्री० ॥ २ ॥ नयनमनोविन इंद्रियसा
रू । वंजणुगह चउन्नेय ॥ उप्पइया १ वेणइया २
कम्मिय ३ । पारिणामिय४ अवसेयरेन्न०श्री०
३ ॥ उग्गह इक्कसमयईहावाय । श्र्चद्ध मुहूत्तम

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

संख ॥ संखकाल धारणउक्किठ अरचोएहनिकं खरे न० श्री० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक युग्मम् ॥

लोकेवग्रहईहनंपुनरपायोधारणेत्यंचतु । र्भेदैःक्लृप्तमवग्रहोप्युभयथाथोव्यंजनातोर्थतः॥त्वङ्नासारसनाश्रवोभिरथसा वेदोन्मिताव्यंजनाषोढार्थोपिमनोक्षियुक्तरसनात्वग्घ्राणकर्णैःस्फुटम् ॥ १ ॥ षोढेहापितथेन्द्रियैश्चमनसापायोपिषड्धातथा । षड्धैवंखलुधारणापिचमतिज्ञानंकिलेत्यंचयत् ॥ अष्टाविंशतिधामतं नव पदेगंधादिभिः पूजन । द्रव्यै रष्टभिरर्चयामि तदहंभक्त्याशिवायामलम् ॥ २ ॥

ॐह्रींश्रीमति ज्ञानाय जलं १ चंदनं २ पुष्पं ३ धूपं ४ दीपं ५ अक्षतं ६ नैवेद्यं ७ फलं ८ यजामहेस्वाहा ॥ इतिमतिज्ञानपूजा १ ॥

॥ दोहा ॥

सर्वद्रव्यगुणपर्यय । प्रकट करणदिनकार अगम अपार अनंतश्रुत । गुणगणरयणाधार ॥ १ ॥ अभिलापेंप्लावित अरथ । ग्रहणहेतु चिद्रूप ॥ समकित मिथ्यातैंकरी बोधाबोधसरूप ॥ २ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ रागसामेरी ॥

पूजोरेन्नवि श्रीस्रुतज्ञान उदार पू० तीरथ पतिपद लहि न्नविजनके यातेंकरत उधार१ पू० अरकर१सन्नी२सम्मं३साई४ सपर्यवसित५ ग्रुनन्नावें ॥ गमियं६ अंगपविठ ७ एचउदह । न्नेदविपर्ययन्नावें पू० ॥ २ ॥ पर्यायादिकसमासहितयह । विंग्नतिधापुनहोवें सर्वचरणकरण क्रियाधार। पातिक कलिमलखोवें पू० ३ इकइकस्रुत अक्करनां करतां । स्वपरविन्नाग विचार ॥ होवेंपर्ययराग्निअनंती । सामेरीमतिधार पू० ॥ ४ ॥

॥ ग्लोक ॥

यदक्करमथोन्निधावहतमादियुक्तंततः । सपर्यवसितंचवैगमिकमंगविष्टंतथा ॥ नन्नासहसमासतःपुनरिमानिचेत्यंस्रुतं । चतुर्दग्नविधंयजेनवपदेर्गुन्नैरष्टन्निः ॥ १ ॥

ॐह्रींश्रीस्रुत ज्ञानाय जलं० यजामहेस्वाहा ॥

इतिश्री स्रुतज्ञान पूजा ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

द्रव्यक्केत्र पुनकाल ग्रुरु न्नावें विषयप्रमाण
वेदैरूपीद्रव्यकों नमोनमो१ वधिनाण १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ कुणखेले तोसुं होरीरे एचाल ॥

अवधिज्ञान नित नजियैरे निज विमल न क्तिसें अनुगामी ते देशांतरगत ज्ञानीनें अनु गमियें रे नि० ॥ १ ॥ जिमबहु बहुतर दारु प्रक्षेपें ज्वालाजलन वधैये रे नि० सुविमलविम लतराध्यवसायें वर्द्धमान जग जयियें रे नि० प्रतिपातीते एककालमें दीपइवास्तं गमियें रे नि० सेतरज्ञेदें गुणकारण यह ब्रह्मा तंहीकहि यें रे नि० ॥ ३ ॥ नव प्रत्ययिते बहुतर नेदें सुरनिरि नवमां गहियेरे नि० परमावधि अ निरामचंद्रोदयेंनिहचें केवल लहियें रे नि० ४

॥ श्लोक ॥

यच्चैकं ह्यनुगामिचान्य दुदितं संवर्द्धमानं त था तातीयं प्रतिपात्य मूर्नािहि पुनर्नअपूर्वका णीहन्नां । षोढारूपि पदार्थ मात्र विषयं श्री सिद्ध चक्रेनघे द्रव्यै रष्टनिरादरात्तदवधि ज्ञा नं नुन्नै रर्चये ॥ १ ॥

ॐह्रींश्रीअवधिज्ञानायजलंचं० यजामहेस्वाहा इति अवधि ज्ञानम् ॥

॥ दोहा ॥

जेसप्तम गुणठाण थित ऋद्धिमंत मुनिराय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उपजें तसऋजुविपुलमतिन्नेदेंमनपर्याय १
मूर्त्तवस्तु अवलंबियह द्रव्यक्षेत्र अरुकाल
जावेंघउहाजाणियें अरचिलहोसुखमाल २

॥ जिनराज नामतेरा एचाल ॥

मनपर्यवान्निधानं गुणरत्नके निधानं पूजोरे
नविक शुजनावें ॥ १ ॥ घटमात्र बोधकर्त्ता
सामान्य नावधर्त्ता संसार नीतिहर्त्ता पू० २
साढ दय दीवसागर सन्नीपंचेंदि आगर मन
नावके दिवाकर पू० ॥ ३ ॥ मनद्रव्यके अशेष
गुणपर्ययादिशेष स्फुटनासितेविशेष ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

मनःपर्यायाख्यं विपुल मतिचान्य हजुमति
द्विधेत्यं यदज्ञानं हृदय गतन्नाव प्रकटनं ॥
सुसंज्ञा वत्पंचेन्द्रिय विषयि रम्यैर्नवपदे यजे
पूजाद्रव्यै स्तदहमधुना मंगल करम् ॥

ॐह्रींश्री मनःपर्यवज्ञानाय जलंवं० यजामहे
स्वाहा ॥ इतिमनःपर्यय ज्ञान पूजा ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

शुरु असाधारण सकल निर्व्याघातानंत
एकसकल साकारफुनि केवल नंतानंत १
पंचमगति दातार यह पंचमज्ञान उदार

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नविनावेंअरचनकरी लहोपरमसुखसार २ केवल नाणउदार यातें आनंद अधिक अपार आं० नवसिद्धस्थ दुनेद तसअंतर बहु तरन्नेद तेतोवरणें किमु कविवार के० ॥ १ ॥ रविजिम अमल प्रकाम द्रव्यसकल परिणाम तससन्ना विन्नतिकार के० ॥ २ ॥ काल त्रय अनुसारें निज निज वेद्य आकारें प्रतिबिंबित होय तिणवार के० ॥ ३ ॥ क्षेत्रथी लोकालोक। अन्निरामचंद्रोदया लोक यातें परमानंद अपार के० ॥ ४ ॥

॥ श्लोक ॥

सम्यक्तं समुपैति शुद्धमखिलं यस्माज्जगन्नासते साक्षाद्धस्तगतं त्रिकाल जनितं वृत्तंस्फुरत्यंजसा ॥ जायंते तुलसिद्धयो नवपदे द्रव्यैः गुणैः केवलज्ञानं तत्परिपूजयामि सततं नावैरनंतं महत् ॥ ५ ॥

नुँह्रींश्री समस्त लोकालोक प्रकाशकाय केवलज्ञानाय जलं चंदनं पु० यजामहे स्वाहा॥

॥ इति पंचज्ञान पूजा समाप्ता ॥

॥ आरती ॥

जै जगसुखकारीवारी। जैसमपद चितधारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आरति करूंसारी जै० । अष्टाविंशति भेदकरी नें । मतिज्ञान राजै ॥ ध्यावतपूजत भविजन केरा । भवसंकट भाजै जे० ॥ १ ॥ भेद चतु र्दशअथवा विंशति । प्रवचन पतिदाषे ॥ श्री श्रुतज्ञानकी महिमा जिनवर स्वमुखथीं भाषें जे० ॥ २ ॥ रूपीद्रव्य विषयि मर्यादा । करिअ वधीसोहै ॥ भेद षटक संख्यातीतीवा । भविज न मनमोहै जै० ॥ ३ ॥ तूर्यज्ञान मनपर्यवक हिये । भेदयुगम लहिये जै० ॥ ऋजुमति विपु लमति सरदहिये । न्यूनाधिक गहिये जै० ॥ लोकालोकांतर्गत वस्तुगुण पर्यवभासी । केव ल एक सहायअनंते भए निर्वृतिवासी जे० ॥ ५ ॥ पंचज्ञानकी आरति करतां भवआरती लीजे जिमवरदत्त कुमर गुणमंजरी । तिम भक्तिकीजै ॥ वृहत् भट्टारक खरतर पति ॥ जिनहंस सूरीराया ॥ तत्पद कजमधुकरकंच ननिधि । आनंद वरताया ॥

॥ आरती ॥

जय२ आरति ज्ञानदिनंदा अनुभव पद पा वन सुखकंदा तीन जगतके भाव प्रकाशक पूरणप्रभुता परम आनंदा जय२० ॥ १ ॥ म

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तिश्रुति अवधि अनेंमनपर्यव। केवल काटैस
व दुखदंदा जय० ॥ २ ॥ नवजल पार उता
रण कारण ॥ सेवोध्यावो नविजनवृंदा जय०
३ ॥ शिवपुरपंथ प्रगटएसीधा। चौमुखनाषै
श्री जिनचंदा जय० ॥ ४ ॥ अविचल राज
हीयासैपावें। चिदानंद निजतेजअमंदा जय०
आरति ज्ञानदि० अनुनव ॥ इति आरती ॥

॥ अथ नाषा अष्टप्रकारी पूजा ॥

गंगामागध क्षीरनिधि अषधि मिश्रितसार
कुसुमेंवासित शुचिजलें। करोजिन स्नात्र उ
दार ॥ मणि कनकादिक अष्टविधकरी नरी
कलस सफार। शुनरुचि जेजिनवरन्हवें तसु
नहि दुरित प्रचार ॥ २ ॥ मेरुसिखर जिमसु
रवर जिनवर न्हवण अमान। करता वरता
निजगुण समकित वृद्धि निधान ॥ ३ ॥ हर्ष
नरि अप्सरावृंद आवें। स्नात्रकर एमआसी
सनावें। जिहांलगे सुरगिरी जंबुदीवो ॥ अ
म्हतणा साध्यजीवा तुजीवो ॥ ४ ॥

श्लोक विमल०। ॐह्रीं परमपरमात्मने अ
नंतानंत ज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्यु निवारणा
य श्रीमज्जिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ दोहा ॥

वावना चंदन कुमकुमा । मृगमदनें घन
सार ॥ जिनतनु लेपेंतसुटलै । मोहसंता
पविकार ॥ १ ॥

सकलसंताप निवारण तारण सज्ञविचित्त
परमअनीहाअरिहा तनुचरचो ज्ञविनित्त १
निजरूपै उपयोगी धारी जिनगुणगेह । ज्ञा
वचंदनसज्ञावथी टालै दुरितअछेह ॥ २ ॥
जिनतनुचरचतां सकलनांकी । कहै कुग्रहाउ
घ्नताआजथाकी ॥ सकल अनिमेषता आज
म्हांकी ज्ञव्यता अमतणी आजपाकी ॥ ३ ॥
सकलमोह० नुँह्रीँ चं० यजामहे स्वाहा २ ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञातपत्रीवरमोगरा । चंपक जायगुलाब ॥
केतकिदमणोबोलसरि पूजो जिनज्ञरज्ञाब

अमलअखंडितमंडितविकसित शुज्ञकुसुमनी
घनजात लाखीणोटोफरठवोअंगीरचोबज्ञजां
त १ गुणकुसुमैनिजआतम मंडितकरवाज्ञव्य
गुणरागीजफत्यागी पुष्प चढावो नव्य ॥ २ ॥
जगधणीपूजतां विविधफूलै सुरवरातेगिणैखि
णअमूलै खांतधरिमानवाजिनपपूजै तसुतणा

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पापसंतापधूजै ॥ ३ ॥
विकचनिर्मल० ॐह्रीँपरम० पुष्पंयजा० ॥

॥ दोहा ॥

कृष्णागर मृगमदतगर। अंबरतुरक्कलोबा
न ॥ मेलिसुगंध घनसारघन करोजिनने
धूपदान ॥ १ ॥

धूपघटीजिमम्हमहै तिमदहैपातिकवृंद अर
तिअनादिनीजावै पावैमनआणंद ॥ १ ॥ जे
जिनपूजैधूपैभवकूपें फिरतेह नावेंपावें ध्रुवघ
रआवेंसुखअछेह ॥ २ ॥ जिनघरेवासतांधूप
पूरे मिच्छत्तदुर्गंधताजायदूरै धूपजिमसहजऊ
र्ध्वगसुभावें कारकाउच्चगतिभावपावें ॥ ३ ॥
सकलकर्म० ॐह्रीँपरम० धूपंयजामहेस्वाहा

॥ दोहा ॥

मणिमयरजततांम्रना। पात्रकरीघृतपूर ॥
वत्तीसूत्रकुसुंभनी। करोप्रदीपसुनूर १ ॥

मंगलदीपवधावोगावो जिनगुणगीत दीपत
णीजिमआलिकामालिकामंगलनीत १ दीपत
णीशुभज्योती द्योतीजिनमुखचंद निरखीहर
षोभविजनजिमलहोपूर्णानंद २ जिनगृहेंदीप
मालाप्रकाशै तेहथीतिमिरअज्ञाननाशै निज

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

घटैज्ञानज्योती प्रकाशै तेहथी जगतणाभाव
भाशै ॥ ३ ॥
भविकनिर्मल० ॐ ह्रीँपर०दीपंयजा०स्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

अक्षत अक्षतपूरसुं जेजिन आगैसार स्व
स्तिकरचतां विस्तरै निज गुणभरविस्तार
उज्जल अमल अखंडित मंडितअक्षतचंग पुं
जत्रयकरो स्वस्तिक अस्तिकभावेरंग ॥ १ ॥
निजसत्तानें सन्मुखउन्मुख भावेंजेह ज्ञानादि
क गुणगावें भावें स्वस्तिकजेह ॥ २ ॥ स्वस्ति
क पूरतां जिनपआगें स्वस्तिश्री भद्रकल्याण
जागें जन्मजरा मरणादि अशुभभागें नियत
शिवशर्मरहै तासुआगे ॥ ३ ॥
सकल मंगल ॐ ह्रीँ परम० अक्षतं यजामहे०

॥ दोहा ॥

सरस शुचीपकवानबहु शालिदालिघृतपू
र करोनैवेद्यजिनआगलै क्षुधादोषतसुदूर
लपन श्रीवरघेवर मधुतर मोतीचूर सिंहके
सरिया सेविया दालिया मोदकपूर ॥ १ ॥
साकर द्राखसिंघोडा भक्त व्यंजन घृतसद्य ।
करोनैवेद्य जिनआगलै जिमसिलै सुखअनव

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

द्य ॥ २ ॥ ढोकतांन्नोज्य परन्नावत्यागे न्नवि
जना निजगुणैन्नोज्य मांगें श्रमन्नणी श्रमतणुं
सरूपन्नोज्य श्रापज्योतातजीजगतपूज्य ३ ॥
सकल पुफल नुँह्रीँपरम० नैवेद्यं० यजामहे०

॥ दोहा ॥

पक्कविजोरुं जिनकरे ठवतां शिवपद देह
सरसमधुररस फलगिणै येहजिन न्नेटकरेह
श्रीफल कदली सुरंगी नारंगी श्रांबासार श्रं
जीर बंजीर दाडिम करणा षटबीज सफार
मधुरसुस्वादक उत्तमलोक श्रनंदित जेह व
रणगंधादिक रमणिक बक्कफल ढोकै तेह २
फलन्नरै पूजतां जगतस्वामी मनुजसुरन्नवेलहै
सफलपांमी सकलमुनि ध्येयगत न्नेदरंगें ध्या
वतां फलसमाप्ति प्रसंगे ॥ ३ ॥
कटुककर्म नुँह्रीँपरम० फलं यजामहेस्वाहा ॥

॥ दोहा ॥

इम श्रष्टविध जिन पूजतां विरचैजेथिर
चित्त मानव न्नव सफलोकरै बाधैसमकि
तवित्त ॥ १ ॥
श्रगणित गुणगण श्रागर नागर वंदितपाय
श्रुतधारी उपकारी श्रीज्ञानसागर उवज्झाय

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तासचरण कजसेवकमधुकर परलयलीन श्री जिनपूजा गाइये जिनवाणी रसपीन ॥ २ ॥ संवतगुण युगअचल इंदु हर्षनरि गाइयो श्रीजिनेंदु तासफल सुकृतथी सकलप्राणी लह्योज्ञान उद्योत धनशिव निसाणी ॥ ३ ॥ इतिजिनवर० ॐह्रींपरमप० अर्घ यजा०स्वाहा शक्रोयथा० ॐह्रींपरम० वस्त्रंयजामहेस्वाहा

इति श्री अष्ट प्रकारी पूजा संपूर्णा ॥

॥ अथ दादाजीकी अष्ट प्रकारी पूजा ॥

सुरनदी जलनिर्मल धारया। प्रबल दुष्कृत दाघनिवारया। सकलमंगल वांछित दायकं कुशल सूरिगुरोश्चरणंयजे ॥ १ ॥ ॐह्रीं श्री जिन कुशल सूरिचरण कमलेभ्यो जलं निर्वपामिते स्वाहा ॥ इति जल पूजा ॥

मलयचंदनकेसरवारिणानिखिलजाड्य रुजा तपहारिणा सकलमं० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं श्रीजिन कुशल सूरि गुरु चरण कमलेभ्यः चंदनं निर्वपामिते स्वाहा ॥ २ ॥ चंदन पूजा ॥

कमल केतकि चंपक पुष्पकैः परिमला हृत षट्पद वृंदकैः सकल० ॥ ३ ॥ ॐह्रीं श्री जिन कुशल सूरि गुरुचरण कमलेभ्यः पुष्पं निर्व

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यानिते स्वाहा ॥ ३ ॥ पुष्प पूजा ॥
सरल तंदुलकै रति निर्मलैःप्रवर मौक्तिक पुंज बहूज्वलैः सकलमं० ॥ ४ ॥ ॐह्रीं जिनकुशल सूरि चरण कम० अक्षतं निर्वपा० स्वाहा ॥ इति अक्षत पूजा ॥

बहुविधैश्चरुभिर्वटकादिकै । प्रचुर मोदक पुंज सुखज्ञकैः सकलमं० ॥ ५ ॥ ॐह्रीं श्री जिन कुशल० नैवेद्यंनि० ॥

अतिसुदीप्तिमयैः खलुदोपकै र्विमलकांचन भाजन संस्थितैः सकलमं० ॥ ६ ॥ ॐह्रींश्री जिनकुशल० दीपंनि० ॥

अगरुरचंदन धूपदशांगजैः प्रसरिताखिल दिक्षु सुधूम्रकैः सकलमं० ॥ ७ ॥ ॐह्रींश्रीजिन कुशल० धूपंनि० ॥

पनसमोचसदाफल कर्कटैः सुसुखदैःकिलश्री फलचिर्भटैः सकलमं० ८ ॐह्रींश्री जिनकुशल० फलानि० ॥

जलसुगंधप्रसूनसुतंदुलैश्चरुप्रदीपकधूपफला दिभिः सकलमं० ॥ ९ ॥ ॐह्रीं श्रीजिनकुशल० अर्घं नि० ॥ ९ ॥ इतिजिनकुशलसूरिपूजाष्टकं

॥ इति श्रीजिनपूजा संग्रह ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ पूजानाम ॥

१ स्नात्र
२ अष्टप्रकारी
३ सतरहभेदी
४ बडीनवपदजीकी
५ छोटीनवपदजीकी
६ बीसस्थानकजीकी
७ ऋषिमंडलजीकी
८ नंदीश्वरजीकी
९ पंचकल्याणककी
१० पंचज्ञानकी
११ भाषाअष्टप्रकारी
१२ दादाजीकीअष्टप्रकारी

मुद्रासहस्त्रकिरणै।
ग्रंन्थानुपलब्धितिमिरसंहारी ॥
पुस्तककमलविकासी।
द्युनिद्धांजैनप्रभाकरोजयतु ॥ १ ॥

फी पुस्तक } { दोरुपैये २ ॥
निछरावल }

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

For Private And Personal Use Only